सीताराम

(भजनावली)

सीताराम

(भजनावली)

पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल'

आईएसबीएन	:	
लेखक	:	पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल'
कृति–स्वाम्य	:	लेखक
संस्करण	:	प्रथम
वर्ष	:	2023 ई.
मूल्य	:	395/–
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	नमन प्रकाशन, 210 चिन्टल्स हाउस, स्टेशन रोड, लखनऊ। मो. 9415094950
साज–सज्जा	:	'नवीन'

Seetaram (Bhajnawali)

by Purushottam Mishra 'Sankul'

Price Rs. 395/-

समर्पण

परब्रह्म परमात्मा
श्रीराम जी को

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

संख्या-9.871/CM-2/2019

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक : 0 3 SEP 2019

प्रिय श्री पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल' जी,

आप द्वारा रचित भजन एवं गीत संग्रह 'एक किरन' की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

सामाजिक एकता, सौहार्द और समरसता को सुदृढ़ करने के लिए सनातन संस्कृति का प्रसार आवश्यक है। श्रद्धा एवं भक्तिभाव से परिपूर्ण आपकी यह कृतियां इस दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ आपकी सृजन प्रतिभा को प्रतिबिम्बित भी करती हैं।

मुझे आशा है कि आप भविष्य में भी इसी प्रकार साहित्य जगत की सेवा करते रहेंगे।

सद्भावनाओं सहित।

आपका,

(योगी आदित्यनाथ)

श्री पुरुषोत्तम मिश्र,
ग्राम-पूरे पचासी,
पोस्ट-गोहुआ बेगमगंज,
जनपद-अयोध्या

दूरभाष : 0522-2236181 / 2239296 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

¼1½

हे गणनायक होउ सहाई।
रघुपति का गुणगान कर रहा दो नैया मेरी पार लगाई। हे गण....

ज्ञानियों में अग्रणीय हो, रिद्धि और सिद्धि के दाता।
देवों में तुम प्रथम पूज्य हो, सुर नर मुनि सब शीश झुकाई। हे गण....

कृपा आपकी जिस पर होती, विघ्न पास नहीं उसके आता।
करउ अनुग्रह मुझ पामर पर, काजु हमार पूर्ण होय जाई। हे गण....

है अथाह रघुपति की गाथा, नाना रामायण विस्तारा।
कृपा आपकी इस सागर से, दूँ छोटा एक ताल बनाई। हे गण....

नहीं निराश कभी हो सकता, जो भी शरण तुम्हारी आया।
शंकर सुवन लाज मेरी रखना, जगत में हो न मेरी हँसाई। हे गण....

पार्वती सुत विनती मेरी, वाणी अजर अमर मेरी कर दो।
संकुल शीश पर कर को रख दो, बिगड़ी दीजे नाथ बनाई। हे गण....

¼2½

बाल छवि रघुपति की न्यारी।
ले उछंग चूमत मुख हरि का, प्रमुदित महतारी। बाल....

मातु दुलारे कबहुँ हरि को, कबहुँ लेटावत पलना।
प्राकृत शिशु यू करत चरित हरि, जननी बलिहारी। बाल....

दो-दो दाँत अधर अरुणारे,सुघड़ नासिका सोहे।
कोटि मनोज करे छवि फीकी, रघुपति किलकारी। बाल....

घुंघराले कुंतल मुख सोहें श्रवण कुंडल नीके।
स्मित सौंदर्य लखि रघुपति का, शारद मति हारी। बाल....

गोद सुला जब प्रभुहिं लेटावा, रोने लगे रघुवर।
लिया गोद में पुन: कौसल्या, हृदय हूक भारी। बाल....

रघुनंदन की यह अनुपम छबि, कलुषता हर लेती।
संकुल इससे और न सुंदर, त्रिभुवन सुखकारी। बाल....

¼3½

दर्पण में लखि शशि रघुराई।
बिहसि उठे कर को फैलाया, जननी फूली नहीं समाई। दर्पण में....

आँगन में घुटनों के बल पर, दौड़ लगा रहे थे रघुनंदन।
पूर्णचंद्र की ज्योत्स्ना से, शोभित लगती धरा लजाई। दर्पण में....

एकाएक रुक रघुनंदन ने, देखा गगन चंद्र को जैसे।
मचल उठे फिर लगे सिसकने, कौसल्या लिया गोद उठाई। दर्पण में....

सिसक रहे थे अब भी राघव, मानो चंद्र चाहते लेना।
दर्पण का तब लेकर सहारा, जननी प्रभु को चुप करवाई। दर्पण में....

समय को भूल गई कौसल्या, ज्ञान यहाँ हो गया नदारद।
वात्सल्य की इस धारा को, तैर कर पार न कोऊ पाई। दर्पण में....

धूल से सने हुए रघुनंदन, पकड़ मातु जब घर में लाई।
संकुल चाह रही नहलाना, पर हरि रोवें अश्रु बहाई। दर्पण में....

¼4½

प्रभु को खेला रही महतारी।
मंद-मंद रघुपति मुस्काते, जननी दीन्हा देह बिसारी। प्रभु....

एक बार हरि को नहला कर, पिला कर पय दिया पर्यक लेटाई।
आकर देखा जब मंदिर में, कौसल्या बुद्धि भई भारी। प्रभु....

पुनः पर्यक पर आकर देखा, निद्रा मग्न जगत के नायक।
यहाँ वहाँ कैसे हो सकता, सोच मगन आए भरि वारी। प्रभु....

विस्मृत होकर कौसल्या ने, तब झिझोंड रघुनाथ जगाया।
गोद उठाना चाहा प्रभु को, मगर न उठना चाहा खरारी। प्रभु....

स्वेद से नहा उठी कौसल्या, हृदय कंप मुख गया सुखाई।
विचलित देखा जब माता को, बिहसि राम माँ उठे पुकारी। प्रभु....

उछंग में भरि लिया तब कौसल्या, परम प्रेम सो कमि कहि जाई।
संकुल परमतत्व रघुनंदन, मान रहे माता से हारी। प्रभु....

¼5½

घुटनन् चलन लगे रघुराई।
चकमा देकर महतारी को, चौखट कूद द्वार गए आई। घुटनन्....

स्पर्श पाकर रघुनंदन का, गदगद धरा चरण सिर नावा।
अब मैं हल्की हो जाऊँगी, दुष्टों से मुक्ति मिल जाई। घुटनन्....

पवन राम का स्पर्श पाकर, भूल गए अपनी सब पीड़ा।
सूर्य देव प्रभु दर्शन करके, दीन्हा अपना शीश झुकाई। घुटनन्....

लगे लोटने धरा पर रघुवर, रज को लगा लिया निज माथे।
तभी दौड़ कर माता आई, रघुपति देख गए घबराई। घुटनन्....

गोद उठा लिया कौसल्या ने, धूल से वस्त्र सन गए सारे।
विवश हो गए तब रघुनंदन, बहे अश्रु आ गई रुलाई। घुटनन्....

कौसल्या को क्रोध आ गया, अगर दुबारा धूल में लोटे।
संकुल तुम्हें बहुत मारूँगी, डराकर हरि को घर में लाई। घुटनन्....

¼6½

कई खिलौना जननी लाई।
स्वर्ण रचित दिए त्याग खिलौना, सायक धनुष लिया रघुराई। कई....

बहुत देर तक रहे खेलते, मातु कहा अब आकर खा लो।
पर राघव ने सुना नहीं जब, कौसल्या लिया गोद उठाई। कई....

एक-एक कर उठा ग्रास को, प्रभु को बार-बार बहलाकर।
भोजन करवाया माता ने, अति आनंद सके को गाई। कई....

राम नहीं साधारण शिशु हैं, चिंतन में माता पड़ जाती।
ज्ञान अंकुरण जैसे होता, रघुनंदन देते मुस्काई। कई....

रघुपति की मुस्कान देखकर, गदगद हो जाती महतारी।
प्रबल धार वात्सल्य का जग में, ज्ञानी देते शीश नवाई। कई....

प्रतिदिन नई-नई क्रीडाएं, कर माँ को आह्लादित करते।
संकुल अदृश्य रूप में सुर गण, बाल चरित्र लखि नहीं अघाई। कई....

¼7½

दसरथ गोद उतर रघुराई।
डगमगात पग चलत मंद-मंद, कैकेई पकड़न को धाई। दसरथ....

नृप बोले तुम कहाँ जा रहे, मगर बिना उत्तर को दीन्हे।
भगे तेज पद लड़खड़ा करके, गिरे भूमि लिया मातु उठाई। दसरथ....

कैकेई ने दिया भूप को, रोने लगे मगर रघुनंदन।
बहुत प्रयास किया कौसल्या, पर हरि बंद न किया रुलाई। दसरथ....

कौसल्या कैकेई से बोली, राम अगर जिद कर लेता है।
बात तुम्हारी केवल माना, ले हरि को लिया हृदय लगाई। दसरथ....

भरत लखन सत्रुहन सुघड़ सब, देखि रूप लोचन ललचावें।
मगर राम सुखधाम रूप लखि, बंद चर्म चक्षु होय जाई। दसरथ....

बालचरित प्रभु करत बिबिध बिधि, प्रमुदित भये अवध के वासी।
संकुल बाल रूप रघुनंदन, दीजे भक्ति नाथ सुखदाई। दसरथ....

¼8½

मातु लिया हरि पीठि चढ़ाई।
प्रमुदित बिहसि उठी कौसल्या, मगर लगे रोने रघुराई। मातु लिया....

तुरत पीठि से गोद में लेकर,ओष्ठ चूम कर हृदय लगावा।
वात्सल्य के वशीभूत हो, कुछ पल दिया द्वैत बिसराई। मातु लिया....

लिए गोद आँगन में आई, उंगली पकड़ कहा अब चलिए।
दो पग ठुमकि चले रघुनंदन, उंगली माँ ने लिया छोड़ाई। मातु लिया....

संभल न पाए गिरे भूमि पर, माखे हरि लगे भूमि लोटने।
कौसल्या जब गोद उठाया, प्रभु करने तब लगे रुलाई। मातु लिया....

माँ को लगा कहीं चोट लग गई, हरि को लगी बहुरि बहलाने।
उंगली पकड़ा कर राघव को, आँगन में रही बहुरि घुमाई। मातु लिया....

उंगली छुड़ा बैठ गए राघव, तब माँ बहुरि गोद में लीन्हा।
संकुल पय को लगी पिलाने, हरि को आँचल दिया ओढ़ाई। मातु लिया....

¼9½

दर्पण में लखि निज परछाई।
अपलक देख रहे रघुनंदन, मुदित ह्रदय कौसल्या माई। दर्पण में....

छोड़ दिया दर्पण राघव ने, गिरा भूमि तब मातु उठाया।
आया क्रोध मार दूँ थप्पड़, उठा हाथ पर मार न पाई। दर्पण में....

दर्पण उठा लिया कौसल्या, देखा मगर कहीं नहीं टूटा।
मन की तब मिट गई आशंका, रघुपति को लिया ह्रदय लगाई। दर्पण में....

भाव में बह करके कौसल्या, लगा दिया जब ज्यादा शक्ति।
बड़े जोर से राघव चीखे, सहम गई मन में पछताई। दर्पण में....

फिर प्रभु को पय लगी पिलाने, नेत्र बंद उर अति अनुरागा।
गोद से जैसे नीचे आये, चौखट पर चढ़ गए रघुराई। दर्पण में....

माँ ने उठकर चहा पकड़ना, मगर जोर से भागे राघव।
संकुल जननी अरु शिशु संबंध, को कवि जगत सकत जो गाई। दर्पण में....

¼10½

अनुजन संग खेलत रघुराई।
भरत देखावत प्रभु को सायक, जिसने उनको विजय दिलाई।

भरत को राम बना दिया राजा, सुमन सत्रुघ्न लेकर आए।
लक्ष्मण अति आनंदित होकर, तिलक भरत को दिया लगाई।

भरत बैठकर सिंहासन पर, मन ही मन में लगे सोचने।
राम से पीछे मेरा बाण था, मगर राम ने दिया जिताई।

भरत उतरकर सिंहासन से, कहा अब खेले आँख मिचोली।
चोर बना दिया भरत लाल को, आप गए छिप तीनों भाई।

भरत ने सहज लखन को पकड़ा, फिर सत्रुहन की बारी आई।
शक्ति लगा दी तीनों भाई, मगर राम न पड़े देखाई।

अंत में नेत्र भरत के भर गए, कहा मानते हैं हम हारी।
संकुल प्रकट हुए रघुनंदन, लिया भरत को ह्रदय लगाई।

¼11½

सिर पर कर परसेउ रघुराई।
काकभसुंड नयन भरि आए, मूक न वाणी मुख से आई। सिर ....

अति प्रसन्न हूँ काक में तुझ पर, आज मांग जो हो मन माही।
ज्ञान विराग योग विज्ञाना, वह जहँ मन बुद्धि नहीं जाई। सिर ....

सुन हरि वचन काक मन सोचत, प्रभु सकल सुख चाहा देना।
राम भक्ति यदि पृथक हो गई, नेत्र बिना ज्यों सुंदरताई। सिर ....

जग में कुछ भी नहीं है स्थिर, मोक्ष है परम शून्य में जाना।
धन्य तो जीवन जग में उसका, जो लोगों की करे भलाई। सिर ....

अपनी मुक्ति से भी बढ़कर, जग में दुखियों का दुःख हरना।
राम कथा आधार बना कर, देना मूल्यों को ऊँचाई। सिर ....

अस विचार कर काकभसुंडि, जग सुख छोड़ भक्ति को माँगा।
संकुल राम भये अति हर्षित, एवमस्तु बोले मुस्काई। सिर ....

¼12½

बाल राम की सुंदरताई।
देखन देव अयोध्या आवें, लें मानव का भेष बनाई।

कांधे धनुष हाथ में सायक, घुंघराले कुंतल मन भावन।
अधर सुधारस उर पुष्प माला, तिलक भाल में रहा सुहाई। बाल....

पीत झगुलिया तन पर सोहे, श्रवण में कुंडल वायु में झूले।
ठुमक चले तब बजे पैंजनियां, जननी मंत्र मुग्ध हो जाई। बाल....

सांवरि सूरत अति मनभावन, रूप चराचर को बस कीन्हा।
जेहि पथ बिचरहि चारो भाई, रूप सराहे लोग लुगाई। बाल....

बाल चरित प्रभु करत बिबिध बिधि, प्रमुदित सकल भये पुरवासी।
जो एक बार राम को देखे, दे अपना अस्तित्व गंवाई। बाल....

अति आनंद दीन भक्तन को, दीनदयाल जगत के नायक।
संकुल बालरूप रघुनंदन, सेवक के अब होउ सहाई। बाल....

¼13½

गुरु आश्रम आए रघुराई।
मुनि बसिष्ठ अति भये मुदित मन, पिता बचन की स्मृति आई। गुरु....

जो भी पाठ पढ़ाते मुनिवर, बड़े ध्यान से रघुपति पढ़ते।
अनुज और सहपाठी जनों के, प्रश्न का देते हल करवाई। गुरु....

धर्म शास्त्र इतिहास गणित और, दर्शन ज्योतिष अरू विज्ञाना।
अल्पायु में ही रघुनंदन, दक्षता समस्त विषय में पाई। गुरु....

परमतत्व जो मूल जगत का, नेति-नेति जिसको श्रुति गाया।
सो साकार रूप ले करके, जग को रहा आदर्श सिखाई। गुरु....

राम की समता और नम्रता, देखकर प्रमुदित आश्रम वासी।
मुनि आश्रम हो गया सुगंधित, देव लोक तक चर्चा छाई। गुरु....

अस्त्र-शस्त्र में हुए पारंगत, बने महान राम धनुधारी।
संकुल गुरू का आशीष पाकर, प्रभु को याद काम की आई। गुरु....

¼14½

अवधपुरी आए मुनिराई।
विश्वामित्र का स्वागत करके, नृप दसरथ लिया पास बैठाई। अवधपुरी..

हाथ जोड़कर कहा भूप ने, किस कारण आगमन तुम्हारा।
असुर समूह नष्ट करने को, दें राजन मुझको रघुराई। अवधपुरी...

मुनि ने अपना कहा प्रयोजन, सुन भूपति कंपित मन माहीं।
मैं चलता हूँ साथ तुम्हारे, राम में न ऐसी प्रभुताई। अवधपुरी...

आपकी इच्छा पूर्ण करूँगा, निर्भय यज्ञ कीजिए मुनिवर।
पुत्र मोह के वशीभूत हो, दसरथ की आँखें भर आई। अवधपुरी...

गुरु बशिष्ठ ने तब समझाया, सुनि दसरथ को धीरज आवा।
दोनों तनय बुला राजा ने, मुनि चरणों में दिया लेटाई। अवधपुरी...

एकटक देख रहे राघव को, अनुपम रूप काम मद नाशक।
संकुल राम लखन को पाकर, मुनि तन पुलक प्रीति उर छाई। अवधपुरी...

¼15½

मुनि के संग चले दोउ भाई।
श्याम गौर मंजुल दोउ भ्राता, विश्वव सुखद लोचन सुखदाई। मुनि....

पीत वसन मुख दुति मनोहर, कांधे धनुष हाथ में सायक।
विश्वव बिमोहन रूप राम का, जो देखे सो करे बड़ाई। मुनि....

विश्वामित्र से बोले रघुवर, मुनि मन में न संशय कीजे।
और समस्या कोई शेष हो, निर्भय हो दीजे बतलाई। मुनि....

प्रभु पहचान मगन भये मुनिवर, अब क्या कहें शेष कुछ नाहीं।
चिंतन मगन देख मुनिवर को, रुके राम बोले मुस्काई। मुनि....

मुनिवर आप परम ज्ञानी हैं, फिर किस बात का कर रहे चिंतन।
अब भी प्रश्न शेष क्या मन में, क्या मुझसे रहे आप छिपाई। मुनि....

राम बिलोकि तुम्हें अब मन में, नहीं कामना कोई प्रयोजन।
संकुल गदगद हो गए मुनिवर, दिया आशीष निकट बैठाई। मुनि.....

¼16½

गौतम आश्रम पड़ा देखाई।
विश्वामित्र ने तब रघुवर को, ऋषि गौतम की कथा सुनाई। गौतम....

मौन रहे कुछ पल रघुनंदन, बोले मुनि अब करूणा कीजे।
उपल देह में पड़ी अहिल्या, मुक्त कीजिए अब रघुराई। गौतम....

पड़त चरण रज मुक्त अहिल्या, हाथ जोड़ चरनन् सिर नावा।
सिर पर कर रख दिया रघुनंदन, भई अति मुदित नयन भरि आई। गौतम....

मैं अति अधम नीच फिर नारी, दे मुनि शाप कृपा ही कीन्हा।
दरस तुम्हारा पा रघुनंदन, मिथ्या जगत की प्रीति नसाई। गौतम....

अब कुछ शेष न रही कामना, बस द्वैत से पृथक कर दीजे।
वचन अहिल्या के सुन करके, एवमस्तु बोले सुरसाई। गौतम....

बस एक विनय देवि सुन लीजे, एक बार जाओ पति पासा।
संकुल गई पति लोक अहिल्या, गौतम देख हृदय पछताई। गौतम....

¼17½

सन्मुख राम ताड़का आई।
नारी समझ सहज रघुनंदन, माँ कहकर दिया शीश झुकाई

मौन रही कुछ पल नहीं बोली, न जाने क्या मन में सोचा।
फिर कहा वत्स किसलिए आए, दीजे मुझको सत्य बताई। सन्मुख....

निरीह प्राणियों का वध करना, उचित नहीं हो सकता माता।
मानवता की रक्षा करना, चाह की जग से मिटे बुराई। सन्मुख....

अट्टहास कर उठी ताड़का, जाओ भाग यहाँ से बालक।
वरना खा लूंगी मैं तुमको, मानव माँस बहुत मुझे भाई। सन्मुख....

पुनि विकराल रूप धर करके, चाहा रघुपति को डरवाना।
विश्वामित्र कहा राघव से, इसका वध ही राष्ट्र भलाई। सन्मुख....

फिर भी राम लगे समझाने, पर ताड़का ने किया आक्रमण।
रघुनंदन तब एक बाण से, संकुल तन को दिया नसाई। सन्मुख...

¼18½

यज्ञ आरंभ कीन्ह मुनिराई।
सहित सहाय साथ में लेकर, तब सुबाहु ने किया चढ़ाई। यज्ञ....

अस्त्र-शस्त्र नाना आयुध से, अंतरिक्ष से कीन्ह प्रहारा।
विचलित देखा जब ऋषियों को, रघुपति कोदंड लिया उठाई। यज्ञ....

हे असुरों के सेनानायक, अंतिम चेतावनी हमारी।
अब यदि बिघ्न यज्ञ में डाला, तो परिणाम के उत्तरदाई। यज्ञ....

अट्टहास कर कहा सुबाहु ने, भाग यहाँ से जाओ बालक।
वरना रोएगी तेरी माता, कह करके दिया अस्त्र चलाई। यज्ञ....

अस्त्र बरसने लगे राम पर, सबको व्यर्थ किया रघुनंदन।
पावक सर मरा सुबाहु को, गिरा धरनि दिया प्राण गंवाई। यज्ञ....

बिन फर सर मारा मारीच को, गिरा सैकड़ों जाकर योजन।
संकुल असुर बचा प्राण भागे, सहज विजय रघुनंदन पाई। यज्ञ....

¼19½

विश्वामित्र सयन किया जाई।

गुरु पद कमल लगे प्रभु चापन, मुदित ह्दय लक्ष्मण रघुराई।

धनुष यज्ञ हो रहा जनक पुर, मुनि ने कहा चलेंगे देखन।
लखन कहा वहाँ क्या-क्या होगा, मुनिवर दें मुझको बतलाई। विश्वामित्र.

विश्वामित्र ने कहा लखन से, जनक राज की पुत्री सीता।
उनके ब्याह हित है यह स्वयंवर, शर्त बिदेह ने दिया लगाई। विश्वामित्र.

जो भी शिव का धनुष उठा कर, उस पर सर संधान करेगा।
उसी से ब्याह सिया का होगा, सुन लक्ष्मण बोले मुस्काई। विश्वामित्र.

गुरुवर यह तो बहुत सरल है, कोई भी इसे कर सकता है।
फिर क्यों देश-देश के भूपति, को राजा ने लिया बुलाई। विश्वामित्र.

शिव के धनुष में क्या शाक्ति है, तब मुनिवर ने कहा बखानी।
सुनकर लक्ष्मण भये अचंभित, सोच मग्न कुछ कहा न जाई। विश्वामित्र.

मुनि आज्ञा सुन उठे दोउ भ्राता, तब बोले मुनिवर मुस्काई।
संकुल प्रात शीघ्र उठ जाना, अब विश्राम करो दोउ भाई। विश्वामित्र.

¼20½

गुरु आयसु पाकर रघुराई।
चले जनकपुर को देखन को, प्रमुदित ह्दय में दोनों भाई। गुरु....

एकटक देखें रामचंद्र को, जेहि मारग बिचरहिं दोउ भ्राता।
गृह-गृह बात फैल गयी पुर में, सकल सराहें सुंदरताई। गुरु....

युवती देखत हैं गवाक्ष से, रामचंद्र की श्यामल मूरति।
ऐसा सौंदर्य कहाँ जगत में, जिसे देख नहीं अन्य देखाई। गुरु....

नयन का लाभ यही है जग में, रामचंद्र को लेउ निहारी।
कहें परस्पर एक दूसरे से, सखी लाज दीजे बिसराई। गुरु....

जहँ तहँ छवि चर्चा रघुपति की, जो सुने काम छोड़कर धावे।
देख राम सुखधाम की सूरत, जाए जग कामना नसाई। गुरु....

लखन चाह नगर और देखना, पर रघुनंदन ने समझाया।
संकुल दिन है ढलने वाला, घन गर्जन पड़ रहा सुनाई। गुरु....

¼21½

सखी कहा सीता पर आई।
राजकुमार जो आए मुनि संग, पुष्प वाटिका पड़े देखाई। सखी....

जिनकी छवि की हो रही चर्चा, प्रमुदित होत देख पुरवासी।
अवश्य देखिअहि कहें लोग सब, लेउ नयन की जरनि मिटाई। सखी....

तासु वचन सीय को मन भाये, दरस को भये बिलोचन ब्याकुल।
चली सखी को आगे करके, गिरिजा मंदिर पड़ा देखाई। सखी....

उसी समय पर लता ओट से, प्रकटे रघुनंदन दोउ भ्राता।
लगा समय जैसे हुआ स्थिर, सकुच दिये सिय नयन झुकाई। सखी....

स्थिर खड़ी देख सीता को, बोली सखी मनोहर वाणी।
चलो समय पूजा का हो रहा, सुन सिय चरण चले बरिआई। सखी....

रघुनंदन भी देख सीय को, रहे मौन मुख वचन न आए।
संकुल तुरंत सजग भये राघव, लक्ष्मण को तब कथा सुनाई। सखी....

¼22½

जय-जय-जय-जय मातु भवानी।
गणपति जननि षडानन माता, कृपा करें मुझ पर कल्यानी। जय-जय..

महा शक्ति जय जगत की माता, नहीं तव आदि अंत कोउ जाना।
परमेश्वरी भुवन कल्यानी, महिमा अमित न जाए बखानी। जय-जय..

मनवांछित फल मिल जाता है, देवि तुम्हारी पूजा करके।
सुर नर जो भी शरन में आवें, सुखी होंय शास्त्रों की बानी। जय-जय..

तुम महेश के हृदय में रहती, करती सृष्टि सृजन अरू प्रलय।
मेरा मनोरथ जान रही हो, सकुच सीय पग में लपटानी। जय-जय..

अति प्रसन्न तब हो गई गौरी, मूरति बोल उठी मुस्काई।
तुम रघुवीर प्रिया वैदेही, तव प्रभाव जानत हैं ज्ञानी। जय-जय..

फिर भी देवि आशिष हमारी, सफल मनोरथ होई तुम्हारा।
संकुल गिरिजा का आशीष पा, हरषि चली संग सखी सयानी। जय-जय..

(23)

सुनि जनक वचन लखन दु:ख पावा।
क्रोधवंत खड़े भये सभा में, गुरू सिर नाइ कहेउ जो भावा। सुनि....

विश्वामित्र कहा लक्ष्मण से, पुत्र शांत बैठो निज आसन।
उठहु राम शिव चाप उठाकर, वत्स जनक परिताप नसावा। सुनि....

गुरु चरण का करके वंदन, उठे विषाद हर्ष मन नाहीं।
सहजहि चले जगत के नायक, जाए पास शिव को सिर नावा। सुनि....

लखन ने चरण से धरा दबाया, होय न जगत में हलचल भारी।
राम ने दृष्टि चहूँ दिश डाली, देखि सिये फिर शीश झुकावा। सुनि....

मन ही मन में तब सीताजी, करने लगी गौरि का वंदन।
मातु कीजिए कृपा मुझ पर, चाप भार को देउ घटावा। सुनि....

सिया हृदय की लखि व्याकुलता, सहज उठाए धनुष प्रभु लीन्हा।
संकुल घोर भयो अति गर्जन, टूटा धनुष हर्ष पुर छावा। सुनि....

(24)

सुर भये मुदित सुमन बरसाई।
सखिन्ह सहित सिय मातु हरष उर, बूड़त जनक गए थल पाई।....

सदानंद का आयसु पाकर, सखिन्ह सहित आगे चली सीता।
कर सरोज जयमाल उठाए, बिबस स्नेह न जाए पहिराई। सुर....

रघुनंदन सिय की गति जानी, सहज झुकाए दीन्ह निज माथा।
तब जयमाल सिया ने डाला, मंगल ध्वनि चहुँ ओर से आई। सुर....

पुनि कहा सखी राम पद गहिए, सुनि सीता मन विसमय भारी।
प्रीति पुरातन जानि सिया की, रघुनंदन दीन्हा मुस्काई। सुर....

विश्वामित्र हृदय आनंदित, लक्ष्मण साथ राम ढिग आये।
दिया आशीष राम सीता को, युग-युग कथा जाए तव गाई। सुर....

ब्रह्म अरू माया का यह संगम, जगत विनाश सृजन का कारण।
संकुल मूल तो तत्व एक है, भ्रम बस जग को द्वैत देखाई। सुर....

¼25½

जनक सभा भृगुपति गए आई।
दृष्टि गई जब चापखंड पर, अति रिस बोले भुजा उठाई। जनक....

लगे काँपने थरथर राजा, अति उर सोच सिया मन माहीं।
परसुराम के आए सामने, दिया राम ने शीश झुकाई। जनक....

मेरा सेवक हो नहीं सकता, जिसने शिव के धनुष को तोड़ा।
परसु उठाया जब भृगुपति, लक्ष्मण करन लगे लरिकाईं। जनक....

मारे कानन में सियार को, मिला न कोई क्षत्रि अब तक।
दिखलाओ तुम मुझको शक्ति, अपने मुँह मत करो बड़ाई। जनक....

परसु चलाना भृगुपति चाहा, पर लक्ष्मण पर चला न पाए।
आज दया ने मुझे सताया, रघुपति दूर इसे ले जाई। जनक....

राम प्रभाव जब ऋषिवर जाना, पुलक गात धनु राम को दीन्हा।
संकुल नष्ट हुआ तब संशय, भृगुपति गए बनहि सिर नाई। जनक....

¼26½

दूल्हा भेष देख रघुराई।
सुर सुरपति सारे आनंदित, व्योम से दिया सुमन बरसाई। दूल्हा...

गौतम शाप से इंद्र मुक्त हुए, देख राम सीता की जोड़ी।
जात बिदेह भाग्य नहीं बरना, दसरथ सुयश लोक तिहु छाई। दूल्हा...

दोउ कुल गुरु ने शास्त्र विधि से, किया लोक वैदिक व्यवहारू।
राम सिया जब लीन्ह भावँरीं, मंगल गान सखिन मिल गाई। दूल्हा...

रचना श्रृटि रचि मैं जबसे, भये विवाह धरा बहुतेरे।
पर न दिखी अब तक अस जोड़ी, विधि अस कह दिया शीश झुकाई। दूल्हा...

सकल रस्म जब पूरी हो गई, राम ने हाथ सिया का थामा।
गदगद ह्रदय सिया महतारी, पुत्री लीन्हा ह्रदय लगाई। दूल्हा...

कहा सुनयना ने रघुपति से, वत्स सिया मुझे प्राण पियारी।
संकुल अगर भूल हो जाए, रघुनंदन देना बिसराई। दूल्हा...

¼27½

सिय बिलोकि नयन भरि आई।
लिया जनक उर लाए जानकी, कंठ अवरुद्ध न कुछ कहि जाई। सिय....

पुत्री मोह के वशीभूत हो, गए बिदेह देह निज भूली।
सावन सम लगे नेत्र बरसने, कौसिक पास आए समुझाई। सिय....

बहुरि सुनयना लगा सिया उर, सिसक रही मुख आव न बानी।
देखा बिकल सखिन जब सीता, उठी हूक आ गई रूलाई। सिय....

शिशु सम बिलखत देख भवानी, असमंजस बस हो गए ज्ञानी।
जनक भवन में करुणा फैली, जो जहाँ वहीं पर अश्रु बहाई। सिय....

सुक सारिका सिया ने पाले, व्याकुल कहें न जाओ सीता।
जिसके लिए बिकल खग ऐसे, तासु व्यवहार बरनि को पाई। सिय....

सदानंद लागे समझावन, अब विलंब नहीं राजन कीजे।
संकुल सिया पालकी बैठी, आगे जनक अंधेरा छाई। सिय....

¼28½

आए अवध ब्याहि रघुराई।
प्रमुदित भये नगर के वासी, घर-घर में गई खुशी मनाई। आए....

गुरु बशिष्ठ कौसिक आदिक का ,बार-बार दसरथ किया वंदन।
कृपा आपकी जन्म सफल हुआ, देना सेवक न बिसराई। आए....

चारों बहू भेटि कर रानी, बार-बार आरती उतारी।
कौसल्या सिया गले लगा लिया, अति आनंद न हृदय समाई। आए....

लोक और वैदिक क्रिया कर, बहू प्रवेश हुआ गृह माहीं।
दुल्हन जैसी सजी अयोध्या, भोजन करें नागरिक आई। आए....

कुल की रीति हुई जब पूरी, कौसल्या रघुपति ढिग आई।
जाओ वत्स कक्ष में अपने, सुन रघुनंदन मन मुस्काई। आए....

कई दिनों तक रहकर अयोध्या, कौसिक आए अपने आश्रम।
संकुल अवध देवता आवें, नृप दसरथ की करें बड़ाई। आए....

¼29½

नृप दसरथ मन किया विचारा।
श्रवण समीप श्वेत भये कुंतल, अब जग मोह व्यर्थ संसारा। नृप....

जानि जरठपनु नृप दसरथ ने, गुरु सभासद लिए बुलाई।
राज भार देकर रघुपति को, चाह आत्म करना उद्धारा। नृप....

गुरु बसिष्ठ अति हो गए प्रमुदित, बोले बहुत उचित है राजन।
सचिव ने कहा बहुत ही सुंदर, नृपति यह आचार तुम्हारा। नृप....

रघुनंदन अब सब विधि लायक, प्रजा के हैं वे प्राण पियारे।
रामराज आदर्श बनेगा, भारत विश्वव में होगा प्यारा। नृप....

जग मंगल के लिए काज यह, यथाशीघ्र हो जाए राजन।
जन-जन में उत्साह भरेगा, भूपति दृढ़ बिश्वास हमारा। नृप....

दिन तिथि किया बसिष्ठ ने निश्चित, समाचार सुनकर पुरवासी।
संकुल सजने लगी अयोध्या, सबके मन में हर्ष अपारा। नृप....

¼30½

कोपभवन सुन गए घबराई।
कैकेई पास भूप चले आए, कारण दीजे प्रिया बताई। कोपभवन...

इंद्र का गर्व चूर करने की, राजा दसरथ में थी शक्ति।
काम प्रभाव से होकर घायल, नारी को दिया शीश झुकाई। कोपभवन...

कंचन से भी बड़ी कामिनी, बनती सदा पतन का कारण।
भावी बस राजा दसरथ का, गया विवेक यहाँ चकराई। कोपभवन...

मानव जब विवेक खो देता, दूरदृष्टि नहीं उसकी जाती।
कैकेई भर लिया बाहु में, शिशु सम लगे नेह बरसाई। कोपभवन...

त्रिया चरित्र दिखा कैकेई, दो वचनों को याद दिलाया।
नृप ने कहा चार को मांगो, सुन कैकेई मन मुस्काई। कोपभवन...

पहले वर से भरत को राजा, दूसरे से रघुपति वनवासी।
संकुल इतना सुनकर भूपति, पड़े भूमि तल वचन न आई। कोपभवन...

¼31½

सुमंत्र संग आये रघुराई।
नृप दसरथ कुछ बोल न पाये, सब प्रसंग कैकेई सुनाई। सुमंत्र...

राम को मातु वचन अति भाये, भये अति मुदित चरण सिर नावा।
कौसल्या से आज्ञा माँगा, सुनकर पास सिया चली आई। सुमंत्र...

कानन के गुण दोष बताकर, कहा उचित तुम अवध में रहिये।
सास ससुर की सेवा करना, नारि धर्म अरु नीति सिखाई। सुमंत्र...

मगर सिया के तर्क को सुनकर, गहन विचार करके रघुनंदन।
साथ चलने की आज्ञा दे दी, सुन सिये हर्ष बरनि न जाई। सुमंत्र...

समाचार सुन लक्ष्मण आये, क्रोधित कह दी अनुचित वाणी।
रघुनंदन ने समझाया जब, चलूंगा साथ चरण लपटाई। सुमंत्र...

सीता लखन सहित रघुनंदन, आ दसरथ को शीश झुकाया।
संकुल चरण पिता के छूकर, वन को चले अवध सिर नाई। सुमंत्र...

¼32½

सचिव रजायसु भूप की पाई।
राम सिया रथ पर बैठाया, आगे रथ न जाए चलाई। सचिव....

घर-घर बात नगर में फैली, जो भी सुना दौड़ कर आया।
मार्ग अवरुद्ध हुआ राघव का, रथ से उतर गए रघुराई। सचिव....

चौदह वर्ष वास वन करके, शीघ्र लौट कर आ जाऊँगा।
मार्ग न रोकों अवध वासियों, धर्म नीति प्रभु प्रजाहि बताई। सचिव....

मार्ग तो छोड़ दिया जनता ने, मगर चल पड़ी पीछे-पीछे।
जाने को तैयार न कोई, व्यर्थ राम की हुई उपाई। सचिव....

संध्या समय जान राघव ने, कहा सुमंत्र से रथ को रोकों।
सीता लखन सहित प्रभु उतरे, प्रथम निशा हरि वहीं बिताई। सचिव....

योग माया का लिया सहारा, निद्रा मग्न हुए पुरवासी।
संकुल कहा तात रथ हांको, दूर नगर से दो पहुँचाई। सचिव....

¼33½

मंत्री राम लिया उर लाई।
तात पिता सम हो तुम मेरे, अनुचित कहूं तो दो बिसराई। मंत्री...

धर्म सत्य है मूल जगत का, तात छोड़ नहीं उसको सकता।
सिबि दधीच हरिचंद आदि नृप, जिस पथ चले राम अपनाई। मंत्री...

तब सुमंत्र बोले राघव से, नृप की बात आखिरी सुनिए।
जनक नंदिनी यदि आ जाएं, प्राण को तब ठंडक मिल जाई। मंत्री...

पितु संदेश सुनकर रघुनंदन, सिया से कहा लौट तुम जाओ।
सास-ससुर को मिलेगा संबल, होगी प्रिय परिवार भलाई। मंत्री...

राम चरण तजि मगर सिया को, लागे व्यर्थ जगत के नाते।
लक्ष्मण क्रोधित होकर बोले, रघुपति उन्हें रोक समझाई। मंत्री...

भरत शत्रुहन शीघ्र बुलाकर, कहना तात नीति को पालें।
संकुल पिता को धीरज देना, कहना नहीं लखन लरिकाईं। मंत्री...

¼34½

प्रभु पद धोए नाव बैठाई।
केवट तरणी दिया चलाई, अति आनंद न हृदय समाई। प्रभु....

हाथ जोड़ करके सुरसरि ने, किया राम का हृदय से वंदन।
पुलकित होकर रघुनंदन ने, दिया गंगा को शीश नवाई। प्रभु....

सीता बोली तब नाविक से, भैया सोच रहे क्या मन में।
नाव तुम्हारी ठहरी लगती, रहा किनारा दूर देखाई। प्रभु....

शीश झुकाकर केवट बोला, दोष नहीं मेरा महारानी।
लगता मुझको गंगा मैया, नैया की गति दिया घटाई। प्रभु....

तब सीता सुरसरि से बोली, माता विनती सुनो हमारी।
जाने क्यों मुझे डर लगता है, शीघ्र किनारे दो पहुंचाई। प्रभु....

बोली सुरसरि जनक नंदिनी, थोड़ा समय और दे दीजे।
संकुल राम सिया गति लखकर, सुरसरि जल दिया चरण छुवाई। प्रभु....

¼35½

जेहि पुर निकट जाएं रघुराई।
सुनतहिं बाल वृद्ध नर नारी, धावें देहिं काजु बिसराई। जेहि....

एकटक देखहिं रामचंद्र को, पुलकित जन्म सफल निज मानहिं।
कोउ कह भूप ने अच्छा कीन्हा, लोचन की दी प्यास मिटाई। जेहि....

कोउ दोष देता भूपति को, ये वनवास योग्य हैं नाहीं।
नारी मोह में अनुचित कीन्हा, दिया नीति मरजाद नसाई। जेहि....

ग्राम वधू सीता ढिग आवें, कहें हमारे गाँव में चलिए।
तुम तीनों को कष्ट न होगा, सब प्रकार करिहउँ सेवकाई। जेहि....

पिता वचन है मुझे निभाना, गाँव नहीं जा सकता माता।
लोग दुखारी राम वचन सुन, बैठो जल तो पी लो भाई। जेहि....

तरु तल बैठ जायं रघुनंदन, नव वधू सिय पास बैठाकर।
संकुल मन की कहें सिय से, सीता सबहिं देई समझाई। जेहि....

¼36½

बालमीकि बोले मुस्काई।
हे रघुनाथ जगत के नायक, पूछत तुम मैं कहत सकुचाई। बालमीकि..

इस ब्रह्मांड में ऐसा क्या है, जहाँ नहीं है वास तुम्हारा।
सुनि मुनि वचन राम भये पुलकित ,भाव भक्ति आनंद अघाई। बालमीकि...

हाथ जोड़ कर रघुवर बोले, तुम त्रिकाल दर्शी मुनि नायक।
जो भी आज्ञा दोगे मुझको, होगी उससे जगत भलाई। बालमीकि...

बहुत कहा सुंदर रघुनंदन, सुनो अब कहता वास तुम्हारा।
रामकथा जिनको अति प्यारी, उनके हृदय बसहु रघुराई। बाल्मीकि...

माँ समान देखत पर नारी, धन दूसरे का वृष्ठा जाना।
हृदय निवास करो तुम उनके, त्याग दिया जिसने कुटिलाई। बालमीकि...

तुम बिन कोई और न जिनका, है भूतल पर अन्य सहारा।
संकुल उनकी रक्षा करिए, आश्रम लो चित्रकूट बनाई। बालमीकि...

¼37½

पर्णकुटी चित्रकूट बनाई।
रमेउ राम जब देवन जाना, आए निज-निज भेष छिपाई। पर्णकुटी....

राम प्रणाम कीन्ह सबही को, मुदित देव रघुनाथ निहारी।
बरषि प्रसून कहें सुर सारे, आज सनाथ भये रघुराई। पर्णकुटी....

ऋतु अरु काल न देखहिं तरुवर, सब फर गए राम हित लागी।
सुरभित मंद पवन लगी बहने, खग कलरव मन रहा लुभाई। पर्णकुटी....

नित मुनि राम दरस हित आवें, साधन सफल देख रघुनंदन।
धरा धन्य भई चित्रकूट की, प्रेम मगन खग मृग समुदाई। पर्णकुटी....

सीता लखन सहित प्रभु बैठे, होने लगी अवध की बातें ।
लखन सिया को प्रभु समझावें,निज आँसू को रहे छिपाई। पर्णकुटी....

सीता कहा नाथ मैं डर गई, देखा रात भयानक सपना।
संकुल सोच मग्न रघुनंदन, नहीं लखन से कुछ कहि जाई। पर्णकुटी....

¼38½

मंत्री भूप लिया उर लाई।
प्रेमातुर बह रहे विलोचन, कहो सुमंत्र कहाँ रघुराई। मंत्री....

सचिव धीर धरि बोला बानी, महाराज तुम अतिशय ज्ञानी।
इस असत्य माया कृत जग में, झूठी जग की नेह सगाई। मंत्री....

कोई शत्रु न मित्र यहाँ पर, स्वप्न सदृश्य जगत के नाते।
सत्कर्म सिर्फ जीव का साथी, अस विचारि अज्ञान नसाई। मंत्री....

राम ने किया धर्म का पालन, मैंने उन्हें बहुत समझाया।
मगर न वापस रघुपति आए, कहत सचिव आँखें भर आई। मंत्री....

सचिव वचन सुन राजा दसरथ, मूर्छित पड़े भूमि तल माहीं।
कौसल्या के नेत्र भर गए, उठा भूप को दिया लेटाई। मंत्री....

आया होश लगे नृप कहने, क्या सीता को भेजा राघव।
संकुल कंठ अवरुद्ध सुमंत्र का, केवल आँसू रहा बहाई। मंत्री....

¼39½

हा रघुनाथ राम रघुराई।
तड़पत मीन वारि बिन जैसे, रघुपति बिना भूप बिलखाई। हा रघुनाथ...

राम जहाँ ले चलो वहाँ मुझे, शीघ्र सुमंत्र करो न देरी।
वरना प्राण निकल जाएंगे, राम बिना अब जिया न जाई। हा रघुनाथ...

कौसल्या का हृदय कंपित, भूपति की असहज गति लखकर।
बोली नाथ धैर्य को धरिये, वरना अवध अंधेरा छाई। हा रघुनाथ...

गुरु बशिष्ठ लागे समझावन, कैसी बात कर रहे राजन।
शीघ्र बुलाओ भरत लाल को, राम को लाएंगे लौटाई। हा रघुनाथ...

सचिव गुरु अरु प्रिया की वाणी, सुन नृप चितयउ नयन उघारी।
गुरु को हाथ जोड़ लिया भूपति, क्षमा करें दीजिए बिदाई। हा रघुनाथ...

राम राम श्री राम राम राम कह, भूप ने नश्वर तन को त्यागा।
संकुल शोक नगर में व्यापा, जो सुना तासु नयन भरि आई। हा रघुनाथ...

¼40½

पड़ी उदासी अवध देखाई।
संतोषजनक मिला न उत्तर, कैकेई भवन भरत गए आई। पड़ी....

मुदित कैकेई किया आरती, द्वारे भेटिं भवन ले आई।
सुतहि ससोच देखकर विचलित, पूछा नैहर कुशल भलाई। पड़ी....

सकल कुशल कहि भरत ने पूछा, कहाँ पर तात अन्य महतारी।
शीघ्र बताओ कहाँ राम हैं, जाने क्यों रहा मन घबराई। पड़ी....

निज करनी जब कही कैकेई, व्याकुल भरत गिरे भूतल पर।
उठे धीर धरि कहा मातु से, दीन्हा कुल मरजाद नसाई। पड़ी....

नारि चरित अत्यंत गूढ़ है, ब्रह्मा भी न जान इसे पाया।
सरल हृदय कोई कैसे समझे, देता रूप पतंग जलाई। पड़ी....

आग लगा मेरे जीवन में, माता शब्द कर दिया धूमिल।
संकुल व्यर्थ जगत वह नाता, राम से जो दे विमुख कराई। पड़ी....

¼41½

भरतहि बिलखत रैन बिहाई।
गुरु बसिष्ठ ने कहा भरत से, दसरथ सुयश जगत रहा छाई।

वत्स भरत जस पिता तुम्हारा, ऐसा हुआ जगत कोउ नाहीं।
होता अमर वही धरती पर, जो लेता यश विमल कमाई। भरतहि...

अस विचारि धरिये उर धीरज, अंतिम यात्रा करो तैयारी।
सुमंत्र ने कार्य किए सब संपन्न, चलो भूप को देउ बिदाई। भरतहि...

सुनि गुर वचन भरत उठ करके, कौसल्या के पास में आए।
हृदय लगा लिया कौसल्या ने, पोंछ अश्रु बहु बिधि समझाई। भरतहि...

सरयू तट पर चिता लग गई, आये उमड़ अवध के वासी।
जो भी आयसु दिया गुरु ने, पालन भरत किया मन लाई। भरतहि...

पिता के हित के लिए भरत ने, किए सभी वैदिक आचारू।
संकुल कहें अयोध्या वासी, भरत में पड़ते राम देखाई। भरतहि...

¼42½

लिया भरत मुनि सभा बुलाई।
धर्म नीति सिद्धांत यही है, करो भरत अब प्रजा भलाई। लिया....

भूप ने राज दिया है तुमको, पिता वचन का पालन करिए।
वापस राम अवध जब आएं, देना राजा उन्हें बनाई। लिया....

किया सुमंत्र बसिष्ठ समर्थन, कौसल्या ने उचित बताया।
सभासदों ने कहा भरत से, निज कर्तव्य करें चित्त लाई। लिया....

गुरु सचिव माता की वाणी, सुनकर भरत भए अति व्याकुल।
हाथ जोड़कर कहा सभी से, राजनीति न मुझे सुहाई। लिया....

आप सभी हित चाह रहें हैं, पर इससे कल्याण न मेरा।
दिया घाव जो जग के नातें, धरा पर इसकी नहीं दवाई। लिया....

एक लालसा बस हृदय में, लूं रघुपति पद कमल निहारी।
संकुल कल चित्रकूट जाऊंगा, आप सभी दें मुझे विदाई। लिया....

¼43½

वचन भरत अति मुनिहि सुहाई।
रोमावली ऊर्ध्व बसिष्ठ की, पुलक गात बोले मुस्काई। वचन....

भानु वंश भये भूप अनेकों, एक से बढ़कर एक प्रतापी।
तुम सा मगर सुना न देखा, त्याग को दी इतनी ऊँचाई। वचन....

निसंकोच कहो अब मनकी, सुनि गुरु वचन लिया कर जोरी।
गुरुवर लगा कलंक जो मुझ पर, चाह रहा दूँ इसे मिटाई। वचन....

नहीं भरत तुम ऐसा कहिए, कहा सुमंत्र धन्य तुम जग में।
तुम सा भ्रात न हुआ जगत में, तुम जो करोगे धर्म कहाई। वचन....

विनय मेरी सुनकर रघुनंदन, वापस आएंगे राजधानी।
इसी आश में प्रात चलेंगे, वहीं पर राजतिलक होइ जाई। वचन....

भरत वचन सुनि मातु सचिव गुर, प्रमुदित हो गए पुर नर नारी।
संकुल मोद भयो सब के मन, सबहिं भरत की करें बड़ाई। वचन....

¼44½

सुना निषाद भरत रहे आई।
चतुरंगिनी साथ में सेना, दिया निषाद का होश उड़ाई। सुना....

स्यात् राम को जान एकाकी, भरत चाहते हैं वध करना।
ताकि राज अखंड हो जाए, विघ्न भविष्य का देहिं मिटाई। सुना....

इसी भाव के बह प्रवाह में, किया निषाद सैन्य तैयारी।
भरत से लोहा लेना चाहा, राम की रक्षा नीति बनाई। सुना....

तभी निषाद पास में आकर, बैठा उसका प्यारा तोता।
राम नाम का वह दीवाना, भरत-भरत रट रहा लगाई। सुना....

तोता के मुख भरत नाम सुनि, तुरंत निषाद बुलाया सेवक।
समाचार वह लेकर आया, जान निषाद हृदय पछताई। सुना....

दौड़ कर आया जहाँ भरत थे, पड़ा चरण लकुटी की नाई।
संकुल भरत लगा लिया उर से, तब निषाद प्रभु कथा सुनाई। सुना....

(45)

आश्रम भरद्धाज पड़ा देखाई।
मातु सचिव सैन्य वहीं छोड़कर, आए भरत मुनि को सिर नाई। आश्रम....

भरद्धाज मुनि अतिशय प्रमुदित, आशीष दीन्ह पास बैठाया।
समाचार सब ज्ञात मुझे है, व्यर्थ भरत रहे अश्रु बहाई। आश्रम....

जीवन में जो किया साधना, सफल हुई रघुनाथ निहारी।
भरत प्राण तुम हो रघुपति के, तुमहिं हृदय सुमिरत रघुराई। आश्रम....

सदा रहेगी रामभक्ति की, तुमसे धारा धरा पर बहती।
जो भी याद करेगा तुमको, पाप पास सकता नहीं आई। आश्रम....

ज्ञान भक्ति अरू कर्म की धारा, बहती उर में सदा त्रिवेणी।
तुम्हें देख मैं धन्य हो गया, मुनि तन पुलक नयन भरि आई। आश्रम....

नहीं नाथ मैं हूँ इस लायक, भरत ने चरण पकड़ लिए मुनि के।
संकुल धन्य भरत सुरगण कहि, हरषि प्रसून दिया बरसाई। आश्रम.....

(46)

लिया इंद्र शारदा बुलाई।
मातु शरण में सभी देवगण, कष्ट दीजिए देवि नसाई। लिया....

भरत जा रहे चित्रकूट को, चाह रहे रघुपति को लाना।
अगर राम आ गए अयोध्या, धरा बोझ फिर कौन घटाई। लिया....

बहुत दिनों से सही यातना, थी उम्मीद अब दिन बहुरेंगे।
पर अब भरत के कारण माता, अंधकार पड़ रहा देखाई। लिया....

भरत की मति को मातु बदल दे, हम सब निर्भय हो जाएंगे।
धरती पर उपकार कीजिए, मानवता की करें भलाई। लिया....

देवराज विद्वान आप हैं, फिर भी नहीं भरत को जाना।
भरत हृदय श्री राम वास है, वहाँ कौन सकता है जाई। लिया....

मैं क्या बिधि हरि हर भी चाहें, भरत बुद्धि सकते नहीं फेरी।
कहा शारदा संकुल देवों, भ्रम तजि हृदय भजो रघुराई। लिया....

¼47½

पुर–पुर चर्चा भरत की छाई।
जो सिय राम लखन को देखा, देखि भरत विस्मित होय जाई। पुर–पुर....

राम के भ्रम में देख भरत को, लक्ष्मण सम सत्रुघ्न निहारी।
मगर संग चतुरंगिनी सेना, जन–जन का दे होश उड़ाई। पुर–पुर....

भरत चरित का बोध होय जब, पुलकित रोमावली होय जाई।
राम से अधिक राम लघु भ्राता, लोग भरत की करें बड़ाई। पुर–पुर....

जिस पथ पर विचरे रघुनंदन, नारि पुरुष जे प्रभुहि निहारी।
भरत दरस ने उन लोगों की, मिटा दिया उर से जड़ताई। पुर–पुर....

नहीं बड़ी यह बात भरत की, भरत सरिस को राम पियारा।
राम नाम को जपा जगत ने, सुमिरत भरत हृदय रघुराई। पुर–पुर....

भरत चरित की पावन ताई, लेश मात्र यदि उर में आये।
संकुल निश्चित दूर दिखेगा, कृपा राम की उसने पाई। पुर–पुर....

¼48½

भरत आगमन सुनि रघुराई।
भये सोच बस रघुकुल नायक, बोले लखन चरण सिर नाई। भरत....

भरत सा भक्त हुआ न जग में, सदा यही कहते रहे भ्राता।
वही भरत अब राजपद पाकर, दिया धर्म मरजाद नसाई। भरत....

दोष भरत का नहीं है भैया, इस नश्वर संसार की रीति।
जिसको पद अधिकार मिल गया, न्याय नियम कब उसे सुहाई। भरत....

सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू, धरा पर ऐसे नाम अनेकों।
नहीं कोई जन्मा भूतल पर, मद न हुआ जिसे प्रभुता पाई। भरत....

ऐसे दुष्ट नीच पापी का, अनाचार अब सहा न जाता।
आज्ञा दीजे भैया मुझको, भरत को दूं अब धूल चटाई। भरत....

लखन वचन सुनि रघुपति बोले, भरत राज मद छू नहीं सकता।
संकुल रवि सम भरत आचरण, तिमिर न शाक्ति पास सके जाई। भरत....

¼49½

भरत चरित्र को कवि सके गाई।
धर्म नीति आदर्श मूल्य की, नहीं धरा ऐसी ऊँचाई। भरत चरित्र....

जिसका आदर्श वृहद रहा है,वहीं खोज आनंद को पाता।
जो छोटे सुख में फँस जाते, जीवन देते व्यर्थ गंवाई। भरत चरित्र....

पिता वचन के लिए राम ने, त्याग दिया सत्ता सुख सारे।
त्याग के पथ का किया अनुगमन, राग द्वेष दीन्हा बिसराई। भरत चरित्र....

भरत ने पिता वचन नहीं माना, सुनी न मातु सचिव गुरु वाणी।
जिस पथ सहज चले रघुनंदन, उसी को लिया सहर्ष अपनाई। भरत चरित्र....

जहँ-जहँ चरण पड़े रघुपति के, उचित पड़े वहाँ शीश हमारा।
मगर नहीं ऐसा हो सकता, दुःख यह भरत को रहा सताई। भरत चरित्र....

ऐसा पावन भाव भरत का, जहाँ राम लक्ष्मण सिय सोए।
संकुल किया दंडवत भू का, प्रेम की गंगा दिया बहाई। भरत चरित....

¼50½

रघुपति पर्णकुटी पड़ी देखाई।
केवट बोला हाथ उठाकर, नाथ यहीं रहते रघुराई। रघुपति...

केवट वचन प्राण प्रिय लागे, ठहरे भरत विलोचन वारि।
प्रकृति की छवि देखि मनोहर, नव उमंग मन में भर आई। रघुपति...

जामुन आम्र तमाल के मध्य में, सुंदर एक वट वृक्ष नीचे।
रघुपति पर्णकुटी के बाहर, तुलसी तरुवर रहे सुहाई। रघुपति...

शुक गौरैया मोर नीलकंठ, बया पपीहा सरस मैना।
निर्भय विचरण खग मृग कर रहे, बह रही सुरभि मंद पुरवाई। रघुपति...

गेंदा पाटल गुड़हल कलगी, सदाबहार चमेली चंपा।
भिन्न-भिन्न के खिले पुष्पों पर, रही तितलियां आ मँड़राई। रघुपति...

अपलक देखि भरत प्रभु कुटिया, कहा निषाद चलो अब आगे।
संकुल भरत चरण धरा आगे, स्पष्ट धड़कन पड़ी सुनाई। रघुपति...

¼51½

आश्रम देखि मनोहर ताई।
रज को उठा लगा लिया सिर से, किया प्रणाम चले दोउ भाई। आश्रम...

आवत देखि भरत को रघुवर, लखन सिया को पास बुलाया।
तब तक भरत दौड़ गिरे भू पर, प्रेम कहत शारद सकुचाई। आश्रम...

देखि भरत गति प्रेम मग्न हो, खग मृग दिया देह बिसराई।
साधक सिद्ध ऋषि मुनि ज्ञानी, धन्य भरत कहि शीश नवाई। आश्रम...

होत न भूतल जन्म भरत का, को रघुनाथ पास ले आता।
राम भक्ति की बहा के धारा, दिया धरा को स्वर्ग बनाई। आश्रम...

भरत उठा प्रभु हृदय लगाया,अति आनन्द भूल गए खुद को।
असीस देकर सत्रुघ्न को,लिया पास सीता बैठाई। आश्रम...

लखन भरत को गले लगाया, कहें काह कुछ वचन न आवा।
संकुल गुरू मातु सुनत आगमन, उठकर तुरंत चले रघुराई। आश्रम...

¼52½

कहा बसिष्ठ सुनो रघुराई।
भरत कामना पूरी करिए, मेरे विचार से उचित कहाई। कहा...

गुरू अनुराग भरत पर लखकर, हो गये मग्न जगत के स्वामी।
भरत कहो अब अपने मन की, व्यर्थ मलाल न कीजे भाई। कहा...

जनमत के मत से भी बढ़कर, गुरु की आज्ञा होती भारी।
जीवन धन्य जगत में उसका, गुरु कृपा जिसको मिल जाई। कहा...

भरत तुम्हारा स्वच्छ आचरण, रवि के तुल्य प्रकाशित होगा।
तुम्हें जो याद करेगा मानव, सत् अनुभूति हृदय सो पाई। कहा...

भरत कहो मैं वही करूँगा, कहकर चुप हो गए रघुनंदन।
भरत सोचने लगे हृदय में, भये मूक वाणी नहीं आई। कहा...

कर विचार सिर झुका सभी को, निर्णय भरत राम पर छोड़ा।
संकुल प्रमुदित रघुपति उठकर, लिया भरत को हृदय लगाई। कहा...

¼53½

सुनि भरत वचन कहा रघुराई।
सब विधि मुझे भरोसा तुम पर, पालन धर्म करें दोउ भाई। सुनि...

मृदुल जानि कहता कठोर हूं, देशकाल स्थिति अनुसारी।
यद्यपि कष्ट तुम्हें बहुत होगा, मगर इसी में जगत भलाई। सुनि...

पितु आयसु का पालन करके, जिस दिन लौट अवध मैं आया।
उस दिन राजतिलक कर देना, लूं तब तक कर्तव्य निभाई। सुनि...

हाथ जोड़कर कहा भरत ने, आज्ञा शिरोधार्य है भ्राता।
पर सिंहासन रहे न खाली, कृपा पावँरी दीजे भाई। सुनि...

भरत वचन सुनकर रघुनंदन, अपने अश्रु रोक न पाए।
तुरंत पादुका दिया भरत को, लिया सुमंत्र को पास बुलाई। सुनि...

सचिव गुरु अरू माताओं से, कहा भरत को धीरज देना।
संकुल भरत कहा तब धीरे, भैया दें अब मुझे विदाई। सुनि...

¼54½

माँगा विदा भरत सिर नाई।
असमंजस बस सचिव मातु गुरु, प्रमुदित भये देव समुदाई। माँगा...

अनुज उठा प्रभु हृदय लगा लिया, भर गए नेत्र लखन सीता के।
बोली पार्वती तब शिव से, नाथ बात एक समझ न आई। माँगा...

मुस्कुरा कर बोले शिवशंकर, बहुत जटिल रघुपति की लीला।
जड़ को मोहित कर देती है, भक्त ज्ञानियों को सुखदाई। माँगा...

संशय नहीं मगर हे स्वामी, भरत ने कहा नहीं क्यों मन की।
गए मनाने थे रघुपति को, क्यों यह बात दिया बिसराई। माँगा...

भरत और रघुनाथ में देवी, भेद नेत्र को ही दिखलाता।
भक्त वास्तविक वही राम का, मन से दे कामना नसाई। माँगा...

भरत को समझ वही सकता है, जिसने पहले स्वयं को जाना।
संकुल मुस्कुरा उठी भवानी, अब पड़ता नहीं द्वैत देखाई। माँगा...

¼55½

लिया खड़ाऊँ शीश चढ़ाई।

चित्रकूट से भरत चले जब, जय-जय भरत गगन ध्वनि छाई। लिया....

धन्य भरत जीवन भूतल पर, तुम सा भक्त हुआ न होगा।
देववृंद होकर अति प्रमुदित, पुष्प भरत पर दया बरसाई। लिया....

ऋषि-मुनियों में आनंद छाया, अब दुष्टों से मुक्ति मिलेगी।
माँस जो खा रहे मानवता का,देगा राम का रोष जलाई। लिया....

कोविद सज्जन अरू पंडित की,जग अब बात सुनी जाएगी।
न्याय नियम की रक्षा होगी, जगत से होगी दूर बुराई। लिया....

था संतोष भरत को उर में, मगर नेत्र में अब भी पानी।
आकर पास कहा कौसल्या, वत्स रहे क्यों अश्रु बहाई। लिया....

अश्रु तो बस में मेरे न माता, पर हो गया सफल अब जीवन।
संकुल चिंता जगत न मैया, लिया रघुनाथ मुझे अपनाई। लिया....

¼56½

नंदिगाँव पर्णकुटी बनाई।

त्याग दिए भौतिक सुख सारे, चित्त राम में दिया लगाई। नंदिगाँव....

राजभार सचिव छोड़ अनुज पर, राम मातु से आज्ञा लीन्ही।
भूमि खोद कुस बिछा भरत ने, आसन अपना दिया लगाई। नंदिगाँव....

अवध सा राज नहीं भूतल पर, जन्मे भूप प्रतापी ज्ञानी।
नृप दसरथ का देखकर वैभव, जाते थे कुबेर लजाई। नंदिगाँव....

मन रघुपति में जब रम जाता, रमा बिलासु बमन बन जाता।
बिना कामिनी कंचन त्यागे, पड़ता जगत न सत् दिखलाई। नंदिगाँव....

तन जर्जर पर मुख की कांति, दिन प्रति भरत की बढ़ती जाए।
सचिव सत्रुघ्न प्रति दिन आकर, समाचार सब देहिं बताई। नंदिगाँव....

भरत नियम व्रत देख ऋषि मुनि, देहिं भरत को शीश नवाई।
संकुल चर्चा जगत भरत की, देवलोक में होए बड़ाई। नंदिगाँव....

¼57½

बैठे सिय लखन रघुराई।
बात अवध की होते-होते, प्रभु को याद भरत की आई। बैठे....

लक्ष्मण याद मुझे उस दिन की, जब एक बार गुरु आश्रम में।
प्रतियोगिता इस बात की हो गई, मूल तत्व क्या धर्म कहाई। बैठे....

हुए कई व्याख्यान वहाँ पर, सब अपने-अपने मत रखे।
मगर साधारण जन भाषा में, मैं भी नहीं सका बतलाई। बैठे....

तुमने भी तो देकर भाषण, जटिल बना था दिया धर्म को।
मुस्कुराकर सीता तब बोली, दिया भरत ने सरल बनाई। बैठे....

सच सीते जनता की सुरक्षा, अरू दुखियों का कष्ट मिटाना।
भेद न करें मानव-मानव में, लिंग भेद को देहिं मिटाई। बैठे....

एक शब्द में केवल सेवा, धर्म का हो सकता पर्यायवाची।
संकुल वरना रहो खोजते, भरत बात यह सबहिं सुहाई। बैठे....

¼58½

कुसुम से हार बना रघुराई।
जनक नंदिनी को पहनाकर, कुंतल में रहे सुमन लगाई। कुसुम....

उसी समय सुरपति का बेटा, अहंकार में हो मतवाला।
राम प्रभाव जानना चाहा, लिया वायस का भेष बनाई। कुसुम....

सिया चरण प्रहार चोंच से, कर रघुपति को दिया चुनौती।
रक्त देख घबरा गई सीता, हो गई खड़ी आँख भर आई। कुसुम....

मायापति देखा माया को, पहली बार हो रही विचलित।
तुरंत उठा कोदंड लिया कर,दिया जयंत पर बाण चलाई। कुसुम....

शक्ति जयंत की हो गई असफल, भगा प्राण कैसे बच जाये।
ब्रह्मलोक कैलाश तक पहुँचा,दिया पिता ने भी ठुकराई। कुसुम....

दया आ गई तब नारद को, कहा शरण रघुपति की जाओ।
संकुल जयंत अभय किया राघव, एक नेत्र को दिया नसाई। कुसुम....

¼59½

मानव अस्थि देखि रघुराई।
पूछा मुनियों से जब कारण, रघुपति की आँखें भर आई। मानव....

बहुत दुष्ट निसिचर होते हैं, सिर्फ निसाचर होता भाई।
अन्य कोई मानव मिल जाए, काट कर लेते उसको खाई। मानव....

असुर संस्कृति ही धरती पर, चाह रहे स्थापित करना।
अन्य संस्कृतियां जो भू पर, देना चाहते उन्हें मिटाई। मानव....

घृणा विश्वव बंधुत्व से करते, जो भी मिला उसे खा जाते।
पशु पक्षी क्या कीड़े मकोड़े, रहे धरती सौंदर्य नसाई। मानव....

ऐसे दुष्ट पापियों से अब, आर्य संस्कृति रक्षा करिए।
मुनियों की सुन करके बातें, रघुपति बोले भुजा उठाई। मानव....

निसिचर रहित करूंगा धरती, निश्चित दृढ़ संकल्प हमारा।
संकुल आश्रम-आश्रम जाकर, मुनियों का भय दिया भगाई। मानव....

¼60½

पंचवटी आए रघुराई।
परम रम्य पावन लखि स्थल, दिया लक्ष्मण ने कुटी बनाई। पंचवटी....

मंद-मंद बहती पुरवाई, झूम रहे थे तरुवर सारे।
पूर्णचंद्र की ज्योत्सना को, ओढ़ें धरती रही लजाई। पंचवटी....

रघुनंदन बोले सीता से, अवधि पूर्ण है होने वाली।
अब वह समय आ गया देवी, चाह रहा हूँ होउ सहाई। पंचवटी....

शीश झुकाकर सीता बोली, कैसी बात कर रहे स्वामी।
केवल मात्र करने से इच्छा, चाहोगे जो वह होय जाई। पंचवटी....

यदि ऐसा कर दूँगा देवी, तो फिर खेल-खेल नहीं होगा।
होता जीवन जटिल मनुज का, मार्ग खोज वह कैसे पाई। पंचवटी....

इसीलिए इस मानव तन से , करना है आदर्श स्थापित।
संकुल सुनि राघव की वाणी, स्वीकृत दे सिय मन मुस्काई। पंचवटी....

¼61½

चंद्रिका से भू रही नहाई।
नेत्र बंद किए रघुनंदन ने, सिय प्रभु पद को रही दबाई। चंद्रिका....

मग्न गगन में चंद्र देखकर, भक्ति ज्ञान वैराग्य की मूरति।
जन्म सफल उसका हो जाता, जो यह छवि ले हृदय में बसाई। चंद्रिका....

मंद पवन के झोंके पाकर, प्रमुदित वृक्ष गीत को गाते।
त्रिविध ताप हरने वाले को, मानो प्रकृति रही रिझाई। चंद्रिका....

सहसा नेत्र खुले राघव के, कहा सिया से अब सो जाओ।
लक्ष्मण तो सोता ही नहीं है, विजय लिया निद्रा पर पाई। चंद्रिका....

कठिन तपस्या है लक्ष्मण की, मुझे तरस उस पर आ जाता।
बिना तपस्या जग में देवी, कहो कौन जो मुक्ति पाई। चंद्रिका....

सच कहते हैं नाथ मगर क्यों, अक्सर बात भूल मैं जाती।
संकुल तुम अतिशय दयालु हो, तभी तो जगत मातु कहलाई। चंद्रिका....

¼62½

पंचवटी सूपनखा आई।
देख राम सुखधाम की सूरत, सुध बुध अपनी दिया गंवाई। पंचवटी...

रुचिर रूप धरि राम पर आई, बोली कौन कहाँ से आए।
सरल हृदय रघुपति ने अपनी, दीन्हा सारी कथा सुनाई। पंचवटी...

बना भूमिका सूपनखा ने, जब कहा कर लो मुझसे शादी।
कुछ पल मौन रहे रघुनंदन, फिर लिया लखन को पास बुलाई। पंचवटी...

एक नारी व्रत के पालन का, देवी दृढ़ संकल्प हमारा।
माँ भगिनी अथवा पुत्री का, सकता हूँ संबंध निभाई। पंचवटी...

राम वचन सुन कहा सूपनखा, लक्ष्मण तुम विवाह कर लीजे।
लक्ष्मण कहा अवश्य कर लूंगा, यदि तुम तप पथ लो अपनाई। पंचवटी...

मनचाही यदि वस्तु मिले न, दुष्ट दुष्टता पर आ जाता।
संकुल क्रोधित सूपनखा ने, तब आसुरी शक्ति दिखलाई। पंचवटी...

¼63½

रूप भयंकर लिया बनाई।
पद अधिकार पास हो जिसके, अहम् पर ठेस न वह सहि पाई। रूप....

मायावी शक्तियों की स्वामिनी, लंकापति रावण की भगिनी।
मन जिस पर आसक्त हो जाए, सकती सहज नहीं बिसराई। रूप....

सीता का लावण्य देखकर, ईर्ष्या ने सुलगा दी छाती।
सोचा वैदेही वध करके, दूं कंटक ही मार्ग हटाई। रूप....

यही सोचकर सूपनखा ने, किया प्रहार त्वरित सीता पर।
मगर सामने लक्ष्मण आकर, दिया अस्त्र को काट गिराई। रूप....

आपा खो दिया सूपनखा ने, आकर भिड़ी तुरंत लक्ष्मण से।
बल प्रयोग नारी पर करना, उचित न लखन रहे शर्माई। रूप....

मगर नियति तो होती निश्चित, कोई टाल न उसको पाया।
संकुल इस गुत्थम गुत्थी में, सूपनखा घाव नासिका पाई। रूप....

¼64½

खर दूषन के पास में आई।
सूपनखा की दशा देखकर, तुरंत सैन्य को लिया सजाई। खर दूषन....

सूपनखा को साथ में लेकर, चला निशाचर कटक अपारा।
देखा राम आ रही सेना, सिय लक्ष्मण को दिया हटाई। खर दूषन....

देख राम की श्यामल सूरत, अपलक देख रहे खर दूषन।
दूत के हाथ संदेशा भेजा, चाहो तो लो प्राण बचाई। खर दूषन....

प्रत्युत्तर में कहा राम ने, प्रथम प्रहार कभी नहीं करते।
मगर अनाचारी के सम्मुख, मरेंगे मगर न शीश झुकाई। खर दूषन....

राम का नीति युक्त पा उत्तर, खर दूषन लगे अस्त्र बरसाने।
देख अपार खर दूषन सेना, गए देवता मुनि घबराई। खर दूषन....

मायापति ने किया तब तक कौतुक, लगे परसपर राघव दिखने ।
संकुल आपस में ही लड़कर, राक्षस सेना गई नसाई। खर दूषन....

¼65½

सूपनखा बहु विधि समझाई।
तुरंत बुला अश्वनी कुमार को, दिया नासिका सुघड़ कराई। सूपनखा....

खर दूषन का अंत साधारण, कभी नहीं कर सकता मानव।
निश्चित राम ही नारायण हैं, बैर में ही है मेरी भलाई। सूपनखा....

तामस तन से भक्ति न होगी, और न कोई पथ दिखलाता।
प्रभु के सर से नश्वर तन तजि, लूंगा जीवन का फल पाई। सूपनखा....

इसी सोच में मग्न दसानन, गया भवन मंदोदरि आई।
चिंता मग्न देख रावण को, पूछा नाथ क्यों मुंह कुंभलाई। सूपनखा....

दंडक वन में असुर संस्कृति, पर प्रहार रघुपति ने कीन्हा।
सूपनखा को घायल करके, वध किए खर दूषन मेरे भाई। सूपनखा....

राम को दंड मिलेगा इसका, मारूंगा तड़पा-तड़पा कर।
संकुल नाथ न ऐसा करिए, जाए जिससे कीर्ति नसाई। सूपनखा....

¼66½

दसमुख ने आवाज लगाई।
चकित मारीच निकला कुटिया से, दिया दसानन शीश नवाई। दसमुख....

नीच नवनि अतिशय दुखदाई, सोच मारीच लिया कर जोरी।
राजन मुझे बुला लिया होता, क्यों किया कष्ट यहाँ पर आई। दसमुख....

मामा मुझे न राजा कहिए, चाह रहा हूँ मदद तुम्हारी।
मारीच सम्मुख बैठकर रावण, तब अपनी योजना सुनाई। दसमुख....

खर दूषन का वध सुन करके, मारीच की आँखें भर आई।
मगर राम से बदला लेना, उचित न उसको पड़ा देखाई।दसमुख....

हाथ जोड़कर कह मारीच ने, वत्स विचार त्याग यह दीजे।
ब्रह्म सच्चिदानंद राम हैं, ज्ञात मुझे उनकी प्रभुताई। दसमुख....

अस्तु लौट जाओ लंका को, इसी में है कल्याण तुम्हारा।
संकुल सुनत क्रुद्ध दसकंधर, लिया कर में चंद्रहास उठाई। दसमुख....

¼67½

लखि मृग अनुपम सुंदरताई।
उंगली उठा कहा सीता ने, नाथ रहा यह मुझे लुभाई। लखि....

तेरह वर्ष व्यतीत हो गए, मगर न दिखा कोई मृग ऐसा।
नाथ पकड़कर लाओ इसको, पालकर इसे अवध ले जाई। लखि....

अवध के अभयारण्य में इसको, रखूंगी अब जाओ स्वामी।
कहा लखन अप्राकृतिक मृग है, मायावी पड़ रहा देखाई। लखि....

रघुनंदन कुछ देर सोचकर,बोले प्रथम बार कुछ माँगा।
लक्ष्मण मैं जा रहा पकड़ने, रहना तुम सतर्क मेरे भाई। लखि....

राक्षस कुल में असंतोष है, खर दूषन के अंत के कारण।
राम निशाने पर उनके है, बात न देना यह बिसराई। लखि....

ऐसा कह करके रघुनंदन, तुरंत धनुष को हाथ उठाया।
संकुल माया मृग के पीछे, मायापति ने दौड़ लगाई। लखि....

¼68½

मायामृग पीछे रघुराई।
अधम सिद्धि पद वैभव पाकर, राष्ट्र मानवता लेता खाई। मायामृग...

अपनी सिद्धि का प्रयोग कर, कभी प्रकट हो कभी दूराई।
छलकर इस प्रकार रघुवर को, कोसों दूर दिया पहुँचाई। मायामृग...

मन वाणी बुद्धि से परे जो, निगम नेति जाको नहीं जाना।
सो प्रभु को इस तरह कपट कर, रहा राक्षस खेल खेलाई। मायामृग...

क्रोध आ गया रघुनंदन को, दिया मारीच पर बाण चलाई।
गिरा धरा पर आहत होकर, हा लक्ष्मण आवाज लगाई। मायामृग...

बोध हो गया तब मारीच को, अंतिम समय पाप हुआ भारी।
राम-राम रघुपति लगा जपने, हाथ जोड़ दिया शीश झुकाई। मायामृग...

अंतर प्रेम देख मारीच का, दौड़कर राम पास में आए।
संकुल शीश पर कर को रख दिया, जन्म मरण दुःख दिया नसाई। मायामृग....

¼69½

आर्त ध्वनि जब सिय तक आई।
विचलित हो गई जनक नंदिनी, लक्ष्मण को लिया पास बुलाई। आर्त...

सुना लखन यह स्वर राघव का, बार-बार रहे तुम्हें पुकारी।
लगता पड़ गए हैं संकट में, जाकर उनके होउ सहाई। आर्त...

बिहसि लखन बोले सुनो माता, राम सकल सृष्टि के नायक।
कष्ट उन्हें कैसे हो सकता, भृकुटी बिलास प्रलय होय जाई। आर्त...

लखन वचन सुनि सीता बोली, तुम उपदेश लगे मुझे देने।
आज्ञा का मेरे पालन करिए, लखन निरुत्तर शीश झुकाई। आर्त...

अंतर्द्वद्व में फँस गए लक्ष्मण, बोले एक प्रार्थना हमारी।
खींच रहा हूँ जो मैं रेखा, इसको पार न करना माई। आर्त...

वन दिसि देव सौंपकर सबको, चले लखन शंकित मन माही।
संकुल प्रारब्ध बड़ा प्रबल है, देता है विवेक नसाई। आर्त...

¼70½

लिया साधु का भेष बनाई।
जनक नंदिनी देख अकेली, भिक्षा दो आवाज लगाई। लिया...

सीता चली गई कुटिया में, तब रावण प्रवेश चह कीन्हा।
लक्ष्मण रेखा लाँघ न पाया, हार कर बैठ गया सिर नाई। लिया...

जनक सुता निकली कुटिया से, बोली बाबा पास में आओ।
जो कुछ है दे रही आपको, लीजे अपनी भूख मिटाई। लिया...

कुछ पल सोच कर रावण बोला, माता पास मेरे आ जाओ।
होगी साधना पूर्ण न जब तक, तब तक आसान यहीं जमाई। लिया...

अच्छा आप कीजिए पूजा, मैं भी कुछ गृह कार्य निपटा लूं।
सीता जाने लगी जब अंदर, रावण ने तब बुद्धि लगाई। लिया...

अतिथि देवो भव आर्य संस्कृति, सुना था मगर दिखी मुझे झूठी।
संकुल कह उठ चला दसानन, तब सीता बाहर चली आई। लिया...

¼71½

सीता निकल कुटी से आई।
सफल योजना देख दसानन, दे परिचय निज रूप देखाई। सीता....

कह सीता साधु का भेष धरि, पाप किया लंकापति भारी।
रघुनंदन का नहीं तुम्हें भय, सुनि दससीस कहा मुस्काई। सीता....

नहीं धरा पर कोई प्राणी, जो मुझसे ले तुम्हें बचाई।
मन महुँ चरण बंदि हर्षित होय, चला सिया विमान बैठाई। सीता....

हा रघुनाथ जगत के नायक, इस पापी से मुझे बचाओ।
लक्ष्मण क्रुद्ध मैं होकर तुम पर, गले में फाँसी लिया लगाई। सीता.....

गीधराज सुनि सिय विलाप को, क्रोधवंत पुष्पक ढिग आवा।
दुष्ट छोड़ दीजे सीता को, वरना राम रोष जल जाई। सीता....

उत्तर न दिया दसानन ने जब, चोचन्ह मारि विकल कर दीन्हा।
संकुल लज्जित होकर रावन, पंख काट दिया धरा गिराई। सीता....

¼72½

देख लखन विस्मित रघुराई।
जनक सुता को छोड़ अकेली, दिया वचन को मेरे मिटाई। देख....

जाने का आदेश दिया माँ, कहे शब्द जो कहि नहीं जाई।
क्षमा कीजिए भ्राता मुझको, सुनि प्रभु मौन कुटी गए आई। देख....

आश्रम में जब दिखी न सीता, विकल हो गए जगत के स्वामी।
सीते-सीते लगे पुकारने, लक्ष्मण व्यथा बरनि को पाई। देख....

कुटिया के चारो दिश खोजत, बार-बार रहे सिया पुकारी।
वन के खग मृग से प्रभु पूछत, दो सीता का पता बताई। देख....

कहाँ प्रिया मेरी कोई बता दे, नर यू विकल भये रघुनंदन।
तुम बिन प्राण न रहेंगे तन में,जीवन भार न जात उठाई। देख....

धैर्य दिया लक्ष्मण राघव को, भैया देखो रक्त की बूंदें।
संकुल ऐसा लग रहा मुझको, यहीं कहीं पर हुई लड़ाई। देख....

¼73½

चिंतित रक्त देख रघुराई।
थोड़ी दूर बढ़े ज्यों आगे, राम-राम ध्वनि पड़ी सुनाई। चिंतित....

राम-राम रट रहा जटायू, ज्यों रघुपति की दृष्टि में आया।
दौड़कर राम पास चले आए, उठाकर लीन्हा हृदय लगाई। चिंतित....

रक्त से सन गये वस्त्र राम के, कहो तात यह गति को कीन्हा।
भूल गए राघव सीता को, अविरल आँसू रहे बहाई। चिंतित....

राघव के स्पर्श को पाकर, अंत हो गई सारी पीड़ा।
कहा गीध ने तब रघुपति से, रावण ले गया सिय उठाई। चिंतित....

देव ऋषि गंधर्व मुनि सब, कोई नहीं सामने आया।
मैंने उसे रोकना चाहा, पर उसको न सका हराई। चिंतित....

राम कहा मैं मुक्त न तुमसे, कहो तात जो हो मन माहीं।
संकुल गीध कहा मुस्कुराकर, क्यों माया में रहे फँसाई। चिंतित....

¼74½

गीध देह तजि दिव्य तन पाई।
स्तुति करने लगा राम की, परम प्रेम न हृदय समाई। गीध....

हे जगदीश जगत के नायक, महिमा अपरंपार तुम्हारी।
मुझसे अधम नीच पापी को, लीन्हा अपने हृदय लगाई। गीध....

अनाचार जब शीश उठाता, संत जनों को जाता मारा।
करूणाकर तब-तब धरती पर, आते हो विविध भेष बनाई। गीध....

जो राम नाम उर में जपते,संशय न कभी उन्हें छू पाता।
हे दुख भंजन हे द्वंद्व हरन, मुझे नाथ कभी न बिसराई। गीध....

असुरों का करने सर्वनाश, अवतार लिया है भूतल पर।
अब नाश पापियों का करिए, रहे साधु संत जन घबराई। गीध....

अविरल भक्ति का पाकर वर, जब गीध चला हरि धाम गया।
संकुल तब आई याद सिया, रघुपति की आँखें भर आई। गीध....

¼75½

बैठ गए थक कर रघुराई।
संध्या उतर रही भूतल पर,लौटा बसेरा खग समुदाई। बैठ....

लक्ष्मण कहा लौट चलो भैया, अब प्रभात खोजा जाएगा।
सत्य के प्रति हैं आप समर्पित, कौन जगत जो सके हराई। बैठ....

बंधु सहित प्रभु आश्रम आये, लक्ष्मण कहा भ्रात कुछ खा लो।
केवल जल को पी रघुनंदन, बैठ गए लक्ष्मण ढिग आई। बैठ....

भैया स्यात् अगर बुद्धि का, उस पल में प्रयोग कर जाता।
पृथक न माता मुझसे होती, दिया आपको दु:ख पहुँचाई। बैठ....

ऐसा कभी न सोचो लक्ष्मण, तुमने गलत किया कुछ नाहीं।
सत् अनुभूति हृदय में होती, बुद्धि देती उसे नसाई। बैठ....

परमतत्व का सत् से नाता, जिसने मर्म जगत यह जाना।
संकुल हृदय कमल खिला उसका, पास अंधेरा सके न जाई। बैठ....

¼76½

भुजा विशाल कबन्ध फैलाई।
पकड़ लिया रघुपति लक्ष्मण को, खींचकर चाहा लेना खाई। भुजा....

मानव माँस का स्वाद निराला, खाते हैं जग में बलशाली।
भयो हर्ष अतिशय कबन्ध को, लक्ष्मण बहुत गए घबराई। भुजा....

भुजा काट दीन्हा कबन्ध का, अवसर पाते ही रघुनंदन।
अट्टहास तब किया निसाचर, पावक सर रघुनाथ चलाई। भुजा....

भौतिक देह नष्ट होते ही, निज स्वरूप कबन्ध ने पाया।
विनय किया तब हाथ जोड़ कर, तुम सम को दयालु रघुराई। भुजा....

मुक्त कर दिया आज शाप से, नष्ट हो गए पाप हमारे।
प्रभु सर्वज्ञ जानते सब हैं, कृपा न माया सके नचाई। भुजा....

नर लीला कर रहे नारायण, बोले सिया खोजते वन में।
संकुल तब कबन्ध ने प्रभु को, रिष्यमूक की राह बताई। भुजा....

¼77½

जब नारद देखा रघुराई।
सीते-सीते हा सीते कह, मायापति की यह विकलाई। जब....

याद आ गई विश्वमोहनी, दृश्य सजीव हो गए सारे।
नारी आकर्षण का जादू, कैसे लेता बुद्धि को खाई। जब....

सृष्टि संचालन प्राकृति करती, बना विषम देती आकर्षण।
मायापति की अद्भुत माया, जड़ चेतन को रही नचाई। जब....

प्रबल आकर्षण है नारी का, जब इसका प्रभाव चढ़ जाता।
सावन में जैसे अंधे को, बस हरियाली पड़े देखाई। जब....

अज्ञानता के वशीभूत हो, जाता टूट वास्तविक नाता।
विश्वमोहनी के चक्कर में, जब हरि शाप सुना मुस्काई। जब....

आह: शाप दे करके मैंने, हरि को मानव दिया बनाई।
संकुल टीस उठी नारद उर, बहे अश्रु आ गई रुलाई। जब....

¼78½

सबरी जब देखा रघुराई।
भुजा पकड़कर रघुनंदन की, लाकर आसन पर बैठाई। सबरी....

हाथ जोड़कर कहने लागी, मैं अति अधम नीच फिर नारी।
किया अनुग्रह मेरे ऊपर, दी नेत्रों की प्यास मिटाई। सबरी....

रघुपति कहा जाति और मजहब, रंग धरा का होता माता।
उलझ गया जो इन रंगों में, पड़ा न उसको सत् दिखलाई। सबरी....

मैं तो केवल हृदय देखता, जो उसको पवित्र कर लेता।
वही प्रिय हो जाता मुझको, बाह्य रंग न मुझे सुहाई। सबरी....

माता मुझको भूख लगी है, जो भी हो ला शीघ्र खिलाओ।
सबरी सुन रघुपति की वाणी, तुरंत उठाकर बेर को लाई। सबरी....

कहीं न खट्टे लगें राम को, यही सोच पहले चख लेती।
संकुल राम उसे खा लेते, प्रेम की है ऐसी ऊँचाई। सबरी....

¼79½

करि स्नान पंपा रघुराई।
बैठ गए आकर तरु नीचे, रिष्यमूक पड़ रहा दिखाई। करि....

मंद सुगंधित पवन बह रही, खग मृग बिचर रहे वन माहीं।
प्रकृति जगत संचालन के हित, काम शक्ति को रही बढ़ाई। करि....

लोभ मोह मद् मत्सर जैसे, हैं अनेक रिपु नहीं दिखाई।
मगर काम में ऐसी शक्ति, देता रुग्ण विवेक बनाई। करि....

नहीं आत्म आ सकती शुचिता, जब तक रहता जड़ से नाता।
लक्ष्मण कहा ज्ञान के बल पर, कठिन बहुत जो सत् मिल जाई। करि....

मगर ज्ञान ही निश्चित करता, क्या प्रिय क्या श्रेय जग में भ्राता।
भक्ति कर्म इन दोनों पथ में, बिना ज्ञान होगी कठिनाई। करि....

लक्ष्मण कहा इसलिए भ्राता, इन तीनों का करें समन्वय।
संकुल जन्म सफल तभी होगा, रघुपति निर्णय दिया सुनाई। करि....

¼80½

हनुमंत सुग्रीवहिं समझाई।
विप्र भेष को धारण करके, रघुपति निकट गए कपि आई। हनुमंत....

विप्र जानकर रघुनंदन ने, जब प्रणाम हनुमंत को कीन्हा।
ऊहापोह में हनुमंत फँस गए, जय श्री राम कहा घबराई। हनुमंत....

राम नाम सुनि रघुपति चौंके, नाम हमारा कैसे जाना।
हनुमंत कहा कौन हैं स्वामी, दें कर कृपा मुझे बतलाई। हनुमंत....

सरल हृदय तब रघुनंदन ने,सहज सुना दी अपनी गाथा।
सुनि हनुमंत भये अति गदगद्, निज तन प्रकट नयन जल छाई। हनुमंत....

नाथ कहा था शिव ने मुझसे, राम यहाँ एक दिन आएंगे।
तब से मैं भी शिव के जैसे, हृदय सुमिर रहा हूँ रघुराई। हनुमंत....

हनुमंत चरण राम के पकड़े, प्रभु पहचान हर्ष अति भारी।
संकुल प्रबल राम की माया, बिना कृपा को मुक्ति पाई। हनुमंत....

¼81½

धरनि बालि गिरा लागत सायक।
हृदय चक्षु खुले लगा सुमिरने, मन में राम– राम रघुनायक। धरनि....

श्याम गात सिर जटा सुहाये, अति गंभीर विशाल हैं बाहें।
वक्र है भ्रकुटि नेत्र अरूणारे, चढ़ा लिया पुनः धनु पर सायक। धरनि....

भूल बालि गया सारी पीड़ा, लगा देखने श्यामल मूरत।
सफल जन्म पहचाना हरि को, उर अनुराग देख जग नायक। धरनि....

नयन नीर बालक समान उठि, लगा प्रश्न राघव से करने।
जग कल्याण हेतु भू आए, नहीं समझा मित्रता के लायक। धरनि.....

हरि ताछण हो गए निरुत्तर, उमड़ा प्रेम बालि ढिग आये।
करूं अमर तुमको हनुमंत सम, ऐसे वचन कहे सुखदायक। धरनि....

सुनत बालि गहि लिया चरण हरि, नहीं– नहीं यह जग के स्वामी।
संकुल अब न द्वैत में रहियों, कीजे मुक्त मोहि सुरनायक। धरनि....

¼82½

सबरी गृह आए रघुराई।
प्रेमातुर बह रहे विलोचन, वचन न कुछ मुख से कह पाई। सबरी....

एकटक रही बिलोकत मूरत, परमानंद मगन मन माहीं।
स्वागत कैसे करे राम का, देह की दीन्ही सुध बिसराई। सबरी....

भक्ति हृदय की राघव जाना, माता कहां है ध्यान तुम्हारा।
राम की वाणी सुनकर चौंकी, दिया चरण में शीश झुकाई। सबरी....

गुरू के वचन सुमिर उर पुलकित, सफल जन्म हरि को पहचाना।
कैसे स्तुति करों तुम्हारी, अधम जाति दोष बरिन न जाई। सबरी....

राघव बाँह गहा सबरी का, ऐसा कह मुझको दुख दीन्हा।
तुम सम भक्त प्राण प्रिय मुझको, जाति धर्म न मुझे देखाई। सबरी....

गदगद सबरी दिया लाकर फल, प्रेम मगन राघव ने खाया।
संकुल राम को प्रेम पियारा, जान लिया वह मुक्ति पाई। सबरी....

¼83½

जटायू लीन्हा हृदय लगाय।
राघव का रोम–रोम सिहर उठा, प्रेम न हृदय अमाय। जटायू....

तात पिता थे चले गए, तुम मिले मुझे जब आकर।
पिता मरन का दु:ख कम हो गया, पड़े पिता तुल्य दिखाय। जटायू....

आज राम फिर से अनाथ है, टपक अश्रु पड़े भू पर।
गला हुआ अवरुद्ध राम का,कहा गिद्ध मुस्काय। जटायू....

आंसू बहाना व्यर्थ वत्स है, सबको पड़ता जाना।
पर जो राष्ट्र धर्म पर मरता, राम का वह हो जाय। जटायू....

धैर्य धरो हे रघुकुल नंदन, भूतल रही अकुलाय।
बोझ धरा का कम करने का, अब करो शीध्र उपाय। जटायू....

तात कहा सो वही करूंगा, हो गए बालक राम।
संकुल प्राण गिद्ध ने छोड़ा, रो पड़े फिर रघुराय। जटायू....

¼84½

नर लीला कर रहे रघुराई।
बिरहवंत देखा जब हरि को, नारद की बुद्धि चकराई। नर....

विश्वमोहिनी की स्मृति कर, नारद हृदय भई अति पीड़ा।
अंगीकार शाप कर मेरा, नारायण रहे अश्रु बहाई। नर....

आये नारद जहां पर राघव, मुनि को देख राम किया वंदन।
कहो आगमन का क्या कारण,बोले मधुर वचन सुरसांई। नर....

नेत्र भर गए तब नारद के, देकर शाप किया भूल भारी।
क्षमा कीजिए रघुकुल भूषण, नारद ने दिया अश्रु बहाई। नर....

नारद तुम मुझे परम प्रिय हो, नहीं भूतल पर तुम सा ज्ञानी।
भंवर सदृश्य नारी आकर्षण है, फंसा जो उसको दिया डुबाई। नर....

अब भी कुछ मन में संशय हो, कहो न रखो मन की मन में।
संकुल राघव की सुन वाणी, मुनि भये मुदित चले सिर नाई। नर....

¼85½

महि सोवत रघुनाथ निहारी।
भयो निषाद बिषादु हृदय में ,कहा लखन से हृदय बिचारी। महि....

अवधपुरी सुरराज सिहाई, ते रघुनाथ बिचरहि वन माही।
दया नहीं बिधि को भी आई, कहत गए भर लोचन वारि। महि....

बोले लखन सखा जग माही,मोह मूल परमार्थ नाहीं।
अस्तु न हो आसक्ति जगत से, कीजे कर्तव्य हृदय बिचारी। महि....

कर्तव्य के पथ पर जो चलता, मोह सता उसको नहीं पाता।
उपजे ज्ञान तभी हृदय में, रघुपति पद रति होय हमारी। महि....

सखा असार संसार पकड़ना, कभी नहीं होगी बुद्धिमानी।
अतः त्याग आसक्ति जगत की, कर्तव्य पर जीवन बलिहारी। महि....

स्वप्न सदृश्य संसार मित्र है, नहीं कोई सुख दुःख कर दाता।
संकुल राम चरण बस पकड़े, सुन निषाद भयो हृदय सुखारी। महि....

¼86½

केवट से बोले रघुराई।
बहुत देर से खड़ा हुआ हूं, गंगा पार कीजिए भाई। केवट....

देखो दिन ढलने वाला है, दूर अभी मुझको है जाना।
मन में कुछ है तो कहो निर्भय, रामचंद्र बोले मुस्काई। केवट....

आकर केवट कहा राम से, देखो यह है नाव पुरानी।
आज रात यहां ही रुक जाओ, नाव ठीक लूँ करा गुसाईं। केवट....

टालमटोल की बात छोड़ कर, कहो न पालो संशय मन में।
तब केवट कहा सहज भाव से, चाहता करना चरन धुलाई। केवट....

आज्ञा पा करके राघव की, केवट चरन पखारन लगा।
हृदय ज्ञान उत्पन्न हो गया, जीवन का सच पड़ा दिखाई। केवट.....

गंगा पार किया राघव को, पड़ा चरन लकुटी की नाई।
संकुल किया प्रयास राघव ने, पर उसने न ली उतराई। केवट....

¼87½

जब से चित्रकूट से आये।
नंदिगांव बसे पर्णकुटी बना, सन्यासी का भेष बनाये। जब....

गुरु बशिष्ठ सुमंत्र कौसल्या, बहुत भरत को नीति सिखाया।
यही निवेदन किया सभी से, स्वामि धर्म मुझको अति भाये। जब....

जहाँ पर चरन पड़े राघव के, उचित यही सिर पड़े हमारा।
अगर नहीं तो एक हाथ नीचे, भूतल सैया भरत बनाये। जब....

छोड़ जगत सुख दिया भरत ने, किया त्याग तन मन दोनों से।
तिहुँ लोक होई भरत बड़ाई ,भरत चरित्र सुर मुनि को भाये। जब....

सीता का देकर के उदाहरण, चहा मांडवी भरत ढिग रहना।
भरत कहा तुम मां को देखो, प्रेम से कर्तव्य बड़ा बनाये। जब....

राज कार्य को संपन्न करके, खाते वही राम जो खाते।
संकुल बैठ कुसासन ऊपर, राम में केवल ध्यान लगाये। जब....

¼88½

अनुसुइया मन सुख अधिकाई।
सदा सुहागिन रहो जगत में, दे आशीष लिया हृदय लगाई। अनुसुइया....

तुम रघुवीर प्रिया वैदेही, कहूं कहा तुम जग की माता।
फिर भी कहूंगी जो किया मैंने, की तुमने जो मेरी बढ़ाई। अनुसुइया....

कभी नहीं कर्तव्य को छोड़े, सुख दु:ख से ऊपर उठ जायें।
नारि धर्म पति के हित कारण, दे अपना अस्तित्व मिटाई। अनुसुइया....

उत्तम मध्यम नीच और लघु , जग में चारि तरह की नारी।
पति बंचक सुख कबहुँ न पावे, रौरव नरक आत्मा जाई। अनुसुइया....

सीते नाम सुमिर कर तेरा, जग में सुख पाएंगी नारी।
की मैंने केवल पति सेवा, राग द्वेष दीन्हा बिसराई। अनुसुइया....

सौ बातों में एक बात है, सदा ध्यान रहे राजकुमारी।
संकुल चक्षु ज्ञान के खोलें, दें हृदय से द्वैत मिटाई। अनुसुइया....

¼89½

आए सुतीक्ष्ण ढिग रघुराई।
ध्यान मग्न देखा जब मुनि को, दिया चतुर्भुज रूप दिखाई। आए....

देख सामने राघवेंद्र को, मुनि तन पुलक नयन भरि आए।
प्रेम मगन गिर पड़ा चरन में, वाणी स्तुति न कर पाई। आए....

कुशल पूछ बोले रघुनंदन, ले चलो मुझे अगस्ति के पासा।
सुन हरि बचन भये मुनि पुलकित, चले तुरंत न देर लगाई। आए....

मग चलत कही सुतीक्ष्ण बीती,सुना राम लक्ष्मण अरु सीता।
मुनि कुछ ज्ञान मुझे भी दीजे, राघवेंद्र बोले मुस्काई। आए....

पिता बचन के लिए राज तज, जो तुमने आदर्श दिखाया।
इससे बड़ा ज्ञान नहीं दूजा, जीवन में पड़ा मुझे दिखाई। आए....

आया आश्रम जब अगस्ति का,गुरु ढिग जाकर कहा सुतीक्ष्ण।
संकुल द्वार खड़े हैं राघव, सुनि अगस्ति आंखें भर आई। आए....

¼90½

खोजत सिये विकल रघुराई।
खग मृग तरू से पूछत हैं हरि, तुमको सीता पड़ी दिखाई। खोजत....

डगमगात पग अखियां बरसत, लखन कहें कुछ समझ न आवे।
सीते – सीते बस हे सीते बार–बार रहे टेर लगाई। खोजत....

भूख प्यास भी राघव भूले, खोजत – खोजत भा अंधियारा।
मुख मलीन तब कहा लखन से, सिये बिन जीवन अति दुखदाई। खोजत...

पकड़ भुजा कुटिया तक लाये, कहा लखन मैं इसका कारण।
लखन वचन सुन बोले राघव, ऐसा कहो न मेरे भाई। खोजत....

अगर हिमालय ही डिग जाये, धरा सुरक्षित कैसे रहेगी।
भाभी अवश्य मिलेगी भैया, लक्ष्मण धीरज रहे बंधाई। खोजत....

जासु कृपा मद मोह नशावे,सो हरि की लीला है न्यारी।
संकुल यह रहस्य जो जाना, रघुपति भक्ति हृदय में आई। खोजत....

¼91½

रिष्यमूक पहुंचे रघुराई।
तब सुग्रीव कह हनुमान से, पता करो इनकी प्रभुताई। रिष्यमूक....

सुग्रीव को धीरज देकर, आये पवन पुत्र जहं राघव।
कौन कहां से हो तुम आये, बोले पवन तनय सिर नाई। रिष्यमूक....

सब वृतांत कहा राघव ने, सुन हनुमान नयन भरि आये।
जान लिया जब नारायण को ,गहि लिया चरन प्रीति उर छाई। रिष्यमूक....

नाथ दया कर चले साथ में, अब सुग्रीव शरण में लीजे।
वे सीता की खोज कराइहि, सब प्रकार करिहैं सेवकाई। रिष्यमूक....

दी स्वीकृति जब रामचंद्र ने, जन्म सफल जाना हनुमाना।
तुरंत चला हरि पीठि चढ़ाकर, इष्टदेव मन में सिर नाई। रिष्यमूक....

जब सुग्रीव राम को देखा,एकटक रहा बिलोकत आनन।
संकुल जब कहा हनुमान ने, हरि पद पड़ा देह बिसराई। रिष्यमूक....

¼92½

की रघुपति सुग्रीव मिताई।
पावक साक्षी कर रघुवर ने, सुग्रीव को लिया मित्र बनाई। की रघुपति...

मित्र का दु:ख निज दु:ख से बढ़कर, मित्र से बड़ा न कोई नाता।
मित्र का बस कर्तव्य यही है, करे मित्र की सदा भलाई। की रघुपति...

विपत्ति काल जो काम में आये, मित्र कहाने का अधिकारी।
मुंह मीठा पर पीछे कुटिलता, अस कुमित्र परिहरे भलाई। की रघुपति...

सिया आभूषण देखकर रघुवर, लगा हृदय तल भये दुखारी।
बहुरि धीर धरि कहा मित्र से, बन में क्यों रहते हो भाई। की रघुपति...

राघव का पाकर अपनत्व, सुग्रीव का धीरज टूट गया।
जो अत्याचार किया बालि, सब कथा प्रभु को बतलाई। की रघुपति...

संकल्प बालि वध करने का, ले लिया उसी क्षण रघुनंदन।
संकुल विश्‍वास न सुग्रीव को, जीव तजे सहज न जड़ताई। की रघुपति...

¼93½

सुनत बालि वध तारा आई।
रुदन करत तन की सुधि भूली, लीन्हा पति पद सीस लगाई। सुनत....

नाथ कहा न मेरा माना, कहा समदरसी हैं रघुनंदन।
अब कैसे मैं जीवित रहूंगी, पति बिहीन जग होत हंसाई। सुनत....

तारा व्यथित देखि रघुनंदन, आये निकट सीस रखा कर।
पति के लिए शोक मत करिये, जीवन की है यह सच्चाई। सुनत....

पांच तत्व से निर्मित यह तन, यदि तुमने पति इसको माना।
यह तो अब भी पड़ा यहीं हैं, जीव न बनता पति पुत्र भाई। सुनत....

कोई रिश्ता सत्य नहीं है, देवि धैर्य हृदय में धरिये।
कर्म के बंधन को बिन तोड़े, कहो कौन जो मुक्ति पाई। सुनत....

उपजा ज्ञान हृदय तारा के, बोली नारी मैं अज्ञानी।
संकुल मुक्त करो माया से, दीजे भक्ति मुझे रघुराई। सुनत....

¼94½

आए सुग्रीव जहं रघुनंदन।
हे करूणाकर क्षमा कीजिए, भूल कर गया मतवाला मन। आए....

विषय वस्य प्रभु बुद्धि हमारी, भूल हो गई मुझसे भारी।
उलझ गया विषयों में प्रभु मन, दया करें कौसल्या नंदन। आए....

नारि नयन सर से वह बचता, जिस पर होती कृपा तुम्हारी।
मैं प्रभु पशु खल अति कामी, क्षमा करें स्वीकारे वंदन। आए....

अस कहि जब गिर पड़ा चरन में, उठकर प्रभु ने हृदय लगाया।
मित्र मुझे तुम अतिशय प्रिय हो, सिया खोज का शीघ्र करें यत्न। आए....

जामवंत अरू हनुमान ने, प्रभु को सारी बात बताई।
कपि सेना एकत्र हो गई, हो रहा किस तरह से प्रयत्न। आए....

एक बार मिल जाए अगर सुधि, काल को भी मैं परास्त करूंगा।
संकुल मित्र न देर करें अब, अवधि खत्म होने वाली बन। आए....

¼95½

मारुत सुत से कह रघुराई।
यह मुद्रिका सिया को देकर, देना धीरज उसे बंधाई। मारुत....

अधिक तुम्हें मैं क्या समझाऊं, देख रहे हो मेरी हालत।
जब से बिछुड़ गई है सीता, चैन की नींद कभी न आई। मारुत....

अगर बात वह मान हमारी, रहती अवध साथ नहीं आती।
तो यह दर्द कभी न होता, जो शब्दों से कहा न जाई। मारुत....

अगर भरत को पता लगा तो, वहां अंधेरा छा जाएगा।
नहीं क्षमा माँ मुझे करेंगी, जगत में होगी मेरी हंसाई। मारुत....

भार्या की कर सका न रक्षा, यदि कलंक यह लग जाएगा।
राम न जीवित रह सकता है, स्वाभिमान यदि दिया गंवाई। मारुत.....

अत: वत्स तुम्हें निज बुद्धि बल से, सिया को जीवित रखना होगा।
संकुल सुधि केवल ले आना, शत्रु से करना नहीं लड़ाई। मारुत....

¼96½

संपाति की सुनकर बानी।
डरे सकल कपि देख बिकट खग, करें काह भई बुद्धि हानी। संपाति....

बहुत दिवस भये भरा पेट न,आज सबन कर करब अहारा।
कपिन निकट चल करके आवा, कहा विधाता तेरी मेहरबानी। संपाति....

राम काज हित देह त्याग दिया, धन्य जटायू सम कोऊ नाहीं।
अंगद बचन सुनत खग रुक गया, कहा सुनाओ बंधु कहानी। संपाति....

सुना जटायू की जब करनी, नेत्र संपाति के भर आये।
आवा तुरंत सिन्धु के तीरा,अनुज क्रिया किया जैसे ज्ञानी। संपाति....

निज वृत्तांत सुनाकर सबको, बहुत देर तक अश्रु बहाया।
राम काज मैं नहीं कर सकता, वृद्ध अपाहिज हूं अज्ञानी। संपाति.....

हां यहीं से देख रहा हूं, गिरि त्रिकूट ऊपर है लंका।
संकुल सत जोजन जो नाघय, तासु सुजस जग होय बखानी। संपाति....

¼97½

जामवंत की आज्ञा पाई।
चले पवनसुत तब लंका को, हृदय सुमिर निज प्रभु रघुराई। जामवंत....

धरि बिकराल रूप सुरसा ने, मारुत सुत के मार्ग को रोका।
बहुत जोर से भूख लगी है, आज तुम्हें लूंगी मैं खाई। जामवंत....

हाथ जोड़कर कहा पवनसुत, राम काज मुझे कर लेने दो।
सीता की सुधि सुना कर प्रभु को, आ जाऊंगा मेरी माई। जामवंत....

नहीं विनय जब सुरसा माना ,बदन बढ़ाया तब हनुमाना।
जस– जस सुरसा बदन बढ़ाती, कपि दूना दिया रूप देखाई। जामवंत....

अवसर पाकर हनुमान जी, धरि लघु रूप गए मुख अंदर।
बाहर आ चरन में सिर नावा, मंद– मंद सुरसा मुस्काई। जामवंत....

राम काज अब निर्भय कीजे, जय हो बजरंगबली तुम्हारी।
संकुल सुरसा गई आशीष दे, हनुमंत चले बाण की नाई। जामवंत....

¼98½

कपि सन्मुख लंकिनी जब आई।
मुठिका एक कपि ने मारा, धरनि गिरी बिधि कथा सुनाई। कपि....

गई लंकिनी हृदय सुमिर हरि, लंका किया प्रवेश हनुमाना।
गृह –गृह जाकर सिया को खोजा, रावण भवन न परी देखाई। कपि....

राम नाम अंकित एक गृह लखि, मन में चकित भये हनुमंता।
आए बिभीषण सुनकर बाहर, बिप्र रूप कपि टेर लगाई। कपि....

कथा बिभीषण सकल सुनाई, लंका जेहि बिधि वास हमारा।
कबहुँ कृपा करिहैं रघुनायक, कुछ साधन न प्रीति मन भाई। कपि....

मैं कपि चंचल सब बिधि हीना, दया किया मुझ पर रघुनाथा।
भ्रात करें मन में न संशय, भजे हृदय कृपाल रघुराई। कपि....

कहा पवनसुत सुनये भ्राता, जनक सुता मुझे कहां मिलेंगी।
संकुल सुनकर मुदित बिभीषण, दिया मिलन की जुगति बताई। कपि....

¼99½

सीता निकट दशानन आवा।
राम को भुला दो राजकुमारी, मांगो जो मन में हो भावा। सीता....

मंदोदरी आदि क्या जग में, देव दनुज गंधर्व या कोई।
तव अनुचरी करूंगा उसको, बस एक बार हृदय लग जावा। सीता....

पतिव्रत ही है धर्म हमारा, जान रहा तू आतताई।
समझ न आता पंडित होकर, मति अपनी क्यों है भरमावा। सीता....

कुदृष्टि डालना पर नारी पर, वीर को शोभा कभी न देता।
एक नहीं हर बार कहूंगी, ना कहकर सीये ने सिर नावा। सीता....

रावण ने तलवार खींच ली, आज काट लूंगा सिर तेरा।
मंदोदरी ने हाथ पकड़ लिया, अबला वध अनुचित श्रुति गावा। सीता....

मुझे ज्ञान दो मत महारानी, फिर भी आज तेरे कहने से।
संकुल एक मास देता हूं,गा रावण सिये मन दुःख धावा। सीता....

¼100½

कुशल अनुज सहित हैं रघुराई।
राघव को मत निष्ठुर कहिए, हनुमंत की आंखें भर आई। कुशल....

कहा उन्होंने तत्व प्रेम का, मन रहता नहीं पास हमारे।
हृदय जानता मातु तुम्हारा, कह मुझसे वह कभी न जाई। कुशल....

प्रभु संदेश का चिंतन करके, जनक सुता गदगद हो बोली।
वत्स तुम्हें क्या दूं त्रिभुवन में, कुछ पड़ता न मुझे दिखाई। कुशल....

अजर अमर सद्‌गुण सदा बसे उर, राम प्रिय तुम हो जग माहीं।
आसिष पा करके सीता का, कपि ने दीन्हा शीश झुकाई। कुशल....

अब कृतकृत्य हो गया माता, पुलकित तन बोले हनुमाना।
आज्ञा हो तो कुछ फल खा लूं, भूख रही है मुझे सताई। कुशल....

आज्ञा पाकर जनक सुता की ,कपि ने हृदय नीति विचारा।
संकुल रावण से भी मिल लूं, दूं प्रभु का प्रभाव देखाई। कुशल....

¼101½

सुत वध सुनि क्रोधित दसकंधर।
इंद्रजीत को बुलाकर बोला, लाओ शीघ्र पकड़कर बंदर। सुत....

बंधु निधन सुनि इंद्रजीत के, लगा हृदय पर गहरा धक्का।
मौन रहा कुछ बोल न पाया, पिता नाय सिर चला वीरवर। सुत....

हनुमान अनुमान लगाया, रावण सुत यह अति बलवंता।
सावधान होकर कपिराई , मेघनाद से लिन्हा टक्कर। सुत....

मुठिका मारी मेघनाद को, गिरा धरनि उठकर खिसियाना।
लज्जित मारा ब्रह्मास्त्र को, उस पल हनुमान के ऊपर। सुत....

मर्यादा का हृदय ध्यान धरि, खुद को बांधा दिया कपिराई।
कहा सैनिकों से रावण सुत, ले चलो इसे सभा के अंदर। सुत....

हनुमान मन में प्रसन्न थे, सहज मिल गया लक्ष्य हमारा।
संकुल रावण से मिल करके, कोशिश से कर दूँ मन सुंदर। सुत....

¼102½

रावण सभा गये कपिराई।
भये चकित पर मन न सशंय, देखा रावण की प्रभुताई। रावण....

जो कुछ सुना आज आ देखा, सचमुच तुम सा न कोई ज्ञानी।
परम भक्त हो तुम शंकर के, कहि कर कपि दिया शीश झुकाई। रावण....

नहीं पूर्ण संसार में कोई,भूल मनुज से हो जाती है।
सीतापति को सिया दीजिये , क्षमा करेंगे तुम्हें रघुराई। रावण....

हनुमान की बात को सुनकर,बिहसा जगत बिदित अभिमानी।
शिव सा ज्ञान दे रहा मुझको, दीजे सूली पर लटकाई। रावण....

मेघनाद ने किया समर्थन,वध इसका अनुचित नहीं होगा।
छद्‌म वेश में कोई सुर है, वानर पड़ता सिर्फ देखाई। रावण....

पकड़कर हनुमंत को चले निशचर, ताक्षण बोले नीति विभीषण।
संकुल दूत अवध सदा है, आन दंड दीजिये गोसाई। रावण....

¼103½

दसकंधर की आज्ञा पाई।
हनुमान को नगर घुमाकर, पूंछ में पावक दिया लगाई। दसकंधर....

राघवेंद्र को शीश झुका कर, कूद चढ़े कपि कनक अटारी।
घर-घर आग लगाकर कपि ने, सारी लंका दिया जलाई। दसकंधर....

त्राहि-त्राहि मच गई नगर में, भये निशाचर सकल दुखारी।
सिया हरण किया उचित न रावण, दी कुल की मरजाद मिटाई। दसकंधर....

नगर को जलते देख इस तरह, करे क्या रावण समझ न पाया।
जो सम्मान न करे नारी, काम बुद्धि कब उसके आई। दसकंधर....

कैद देवता जो लंका में, मुक्त कर दिया हनुमान ने।
विश्वव विजेता लंकापति को, राम की दीन्ही शक्ति देखाई। दसकंधर....

पाप का अंत सदा होता है, कामी यश न जगत कभी पावा।
संकुल हनुमान रावण को, कोशिश कर न सके जगाई। दसकंधर....

¼104½

सिये समीप आए कपिराई।
चरन नाइ सिर वंदन कीन्हा, दो आज्ञा जाने की माई। सिये....

बहुत दिनों के बाद वत्स आज, तुम्हें देख मन को मिली शांति।
तुम जाने की बात कह रहे, कहकर सिये आंखें भर आई। सिये....

मां धीरज हृदय में धरिये, सुन लीजे मेरी लाचारी।
मातु साथ मैं अभी ले चलता, प्रभु आज्ञा पर मेटि न जाई। सिये....

अब मुझको कोई चिह्न दीजिए, जैसे मुझे दिया रघुनायक।
चूड़ामणि दीन्हा उतार सिये, लिया पवनसुत शीश लगाई। सिये....

बात लखन से मेरी कहना, उस दिन भूल हो गई भारी।
भैया क्षमा मुझे कर देना, प्रभु को देना व्यथा बताई। सिये....

निमिष - निमिष कल्प सम बीते, बेगि हरें अब कष्ट हमारा।
संकुल सिये बहुरि समझाकर, चले पवनसुत शीश झुकाई। सिये....

¼105½

सीता सुधि लाये हनुमाना।
प्रमुदित भई सकल कपि सेना, सुन सुग्रीव परम सुख माना।

अंगद सुग्रीव जामवंत नल, महावीर को आगे करके।
रामचंद्र के पास में आये, हनुमंत कर सब करें बखाना। सीता....
जामवंत ने पवन तनय की, रामचंद्र को कथा सुनाई।
चूड़ामणि तब कृपासिन्धु को, प्रमुदित होकर दिया बलवाना। सीता....

सुनो वत्स मैं उरिन न तुमसे, नहीं कोऊ तुम समान उपकारी।
हृदय लगाकर हनुमान को, उस क्षण मुदित भये भगवाना। सीता....

सिय संदेश लखन सुन करके, भावुक नयन नीर भरि आये।
अब विलंब नहीं भैया कीजे, शीघ्र सैन्य संग करें पयाना। सीता....

हनुमान कब कहा लखन से, भैया धीर हृदय में धरिये।
संकुल राम चरन रति जिसको, दु:ख फिर पास न उसके आना। सीता....

¼106½

जनकसुता दीजे रघुराई।
बंधु विनय मेरी सुन लीजे, कहा बिभीषण शीश नवाई।....

पर नारी का करना अपहरण, अनुचित शास्त्रों की है वाणी।
इससे घटी है कीर्ति आपकी, सत्य कह रहा हूं मैं भाई। जनकसुता....

नर के रूप में नारायण है, राम को मानव नहीं समझना।
शरण गए प्रभु अभय करेंगे, नीति लीजिए यह अपनाई। जनकसुता....

मुंह पर मीठा कहने वाले, बहुत जगत में लोग मिलेंगे।
कटु पर हित पहुंचाने वाला, होता कहने में कठिनाई। जनकसुता....

हाथ जोड़कर विनय हमारी, नाथ दया अब मुझ पर कीजे।
सीतापति को सीता देकर, लीजे कुल की लाज बचाई। जनकसुता....

सुनकर बात बिभीषण केरी, रावण क्रोधित चरण प्रहारा।
संकुल चला बिभीषण रोकर, बंधु का रिश्ता दिया मिटाई। जनकसुता....

¼107½

लीजे शरण मुझे रघुराई।
तात मातु गुरू बंधु तुम्ही हो, नाथ चाह करना सेवकाई। लीजे...

तामस तन न प्रीति पद पंकज, मोह ग्रसित मूरख अज्ञानी।
अस कहि जब प्रभु पद सिर नावा, उठकर प्रभु लिया हृदय लगाई। लीजे...

भली भांति मैं तात जानता, किस प्रकार है रहनि तुम्हारी।
नर्क का बास भले मिल जाए, दुष्ट संग दारूण दुखदाई। लीजे...

हे लंकेस बसहि सद्गुण उर,तासे तुम अतिसय प्रिय मुझको।
अब मन में संशय न कीजे, लंकापति दिया तुम्हें बनाई। लीजे...

नहीं – नहीं कह उठा बिभीषण, अब उर कुछ वासना नहीं है।
नाथ भक्ति दो केवल मुझको, दूर करो उर से जड़ताई। लीजे...

एवमस्तु कह कर रघुनंदन, तुरंत सिंधु का नीर मंगाया।
संकुल सखा नहीं तव इच्छा, बस प्रजा की करो भलाई। लीजे...

¼108½

सागर से बोले रघुराई।
तीन दिवस व्यतीत हो गए, दया नहीं तुम्हें मुझ पर आई। सागर...

सच है मूर्ख विनय नहीं सुनता, कुटिल न समझें प्रेम की भाषा।
कामी लोलुप नीति न समझे, अधम का वध ही करे भलाई। सागर...

अस कहि रघुपति कहा लखन से, बेगि लाइए धनुष हमारा।
बाण चढ़ाया रघुनंदन ने, धरा का संतुलन गया डगमगाई। सागर...

लगा खौलने सारा सागर, व्याकुल सिंधु शरण तब आवा।
त्राहिमाम प्रभु रक्षा करिये, दीजे नाथ न सृष्टि मिटाई। सागर...

शक्ति के वशीभूत रघुनंदन, अहंकार में डूब गया था।
क्षुद्र बुद्धि प्रभु भूल हो गई, प्रभुता देती है बौराई। सागर...

रामचंद्र बोले मुस्कुराकर, शीघ्र मुझे कोई मार्ग बताओ।
संकुल तब नल नील की गाथा , सागर प्रभु को दिया सुनाई। सागर...

¼109½

सेतु रहे नल नील बनाई।
सैल पर राम नाम लिख करके, देते सागर में तैराई। सेतु....

जासु नाम का सुमिरन करके, भव बंधन काटे मुनि ज्ञानी।
ऐसे दयासिंधु भक्तन की, श्री मुख से कर रहे बड़ाई। सेतु....

सदा कृतज्ञ रहेगा राघव, सुन नल नील परम सुख भयऊ।
आज जन्म हुआ सफल हमारा , हरि पद दीन्हा शीश झुकाई। सेतु....

पवन तनय तब कहा नील से, तुम दोनों अतिशय बड़भागी।
कहा नील तब हनुमान से, बिदित तुम्हें प्रभु की प्रभुताई। सेतु....

मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ, राम नाम ने सेतु बनाया।
राम नाम को जिसने सुमिरा ,भव की भय न उसे सताई। सेतु....

देख सेतु की सुंदर रचना, रामचंद्र बोले मुस्काई।
संकुल करूंगा शंभु स्थापना, जामवंत करो शीघ्र उपाई। सेतु....

¼110½

शिव से विनय करत रघुराई।
आशुतोष प्रभु लाज बचाओ, नैया दो उस पार लगाई। शिव....

पार्वती पति हे परमेश्वर, नमो- नमो जय जगत नियंता।
निर्गुण सगुण रूप अखिलेश्वर, श्रुति नहीं बरनि सके प्रभुताई। शिव....

हे अविनाशी कण- कण वासी, दया करो मुझ पर जगदीश्वर।
महादेव अब लाज बचाओ, दो सेवक की शक्ति जगाई। शिव ....

जब -जब भार पड़ा धरती पर, नीलकंठ ने भार मिटाया।
कर विषपान लिया शिवशंकर, धरती की समृद्धि बढ़ाई। शिव....

सेवक पर हो कृपा तुम्हारी, राम के संग बनो रामेश्वर।
राम काज में होउ सहायक, दरस दीजिए नाथ देखाई। शिव....

राम विनय सुनकर त्रिपुरारी, एवमस्तु कह जय रघुनंदन।
संकुल आज से यह रामेश्वर, होगा भक्तों को सुखदाई। शिव....

¼111½

दक्षिण दिशा देख रघुराई।
कहा बिभीषण आ रही वृष्टि, लगे चमकने घन समुदाई। दक्षिण....

बोले बिभीषण हे रघुनंदन, वृष्टि न होय ये बादल नाहीं।
लंका रावण का ये आगारा,बैठा नृत्य देख रहा भाई। दक्षिण....

मंदोदरी श्रवण आभूषण, दामिनि जैसे चमक रहे हैं।
छत्र भयंकर लंकेश्वर का, जलद घटा पड़ता दिखलाई। दक्षिण....

ताल मृदंग की जो रव हो रही, घन गर्जन जैसे लगता है।
किसी को भी भ्रम हो सकता है, रावण की लखि यह प्रभुताई। दक्षिण....

इंद्रलोक भी लघु लगता है, रावण की लंका के आगे।

त्रिभवुन में इस समय न कोई, रावण जिसे न दिया हराई। दक्षिण....

रावण का प्रभु अहंकार लखि, तुरंत धनुष पर चाप चढ़ाया।
संकुल छत्र मुकुट ताटंक सब, एक बाण में दिया गिराई। दक्षिण.....

¼112½

सीता देइ नाथ रघुराई।
चरन पकड़ कर कहे मंदोदरि, सिंदूर दो न मेरा मिटाई। सीता....

महावीर जे दिति सुत मारे, मधु कैटभ मारे बलवाना।
सो हरि राम रूप में स्वामी, दीजे नाथ बैर बिसराई। सीता....

शिव भी जिनका करें स्मरण, उनसे द्रोह उचित नहीं स्वामी।
आप तो स्वयं ज्ञान के सूरज, मति क्यों नाथ गई बौराई। सीता....

मंदोदरी वचन सुन रावण, बोला अहो धन्य है नारी।
अवगुण आठ सदा उर बसते, दया धर्म रही मुझे सिखाई। सीता....

राम ब्रह्म तो अहं ब्रह्मास्मि, हार नहीं मानूंगा रानी।
जड़ चेतन दोनों अक्षुण्ण है ,मृत्यु का भय रही मुझे देखाई। सीता....

राम के सन्मुख देह त्यागना, निश्चित चिर विश्राम मिलेगा।
संकुल नहीं झुकेगा रावण, शिव ब्रह्मा चाहे करें उपाई। सीता....

¼113½

अंगद से बोले रघुराई।
वत्स तुम्हें लंका जाना है, कोशिश करो रुक जाए लड़ाई। अंगद....

नहीं चाहता राम निर्दोषों, के रक्त से भूतल रंग जाए।
केवल शासक की गलती का, जनता से की जाए भरपाई। अंगद....

और अधिक क्या कहूं मैं तुमसे, जान रहा हूं वत्स हो ज्ञानी।
इसी विषय पर चर्चा करना, काज मेरा हो शत्रु भलाई। अंगद....

कहा लखन ने कुटिल अरू कामी, कभी नीति न समझ सका है।
दुष्ट से प्रीति नहीं हो सकती, लाख चाहे कोई करे उपाई। अंगद....

फिर भी उचित आपका मत है, सार अहिंसा सदा धर्म का।
लखन बचन सुनि हरि मुस्काने, और सुझाव किसी का भाई। अंगद....

सुग्रीव जामवंत हनुमंत अरू, दिया बिभीषण ने भी स्वीकृति।
संकुल अंगद चला नाय सिर, हृदय प्रेम आंखें भर आई। अंगद....

¼114½

अंगद बचन सुनत मुस्काई।
अहो धन्य हो बालि तनय तुम, पितुघाती से किया मिताई। अंगद....

परम भक्त हो तुम शंकर के, पर लगता हुई बुद्धि हानी।
देह के संबंध सत्य नहीं है, सत्य तो केवल हैं रघुराई। अंगद....

जीव का संबंध सिर्फ ब्रह्म से, अस्तु राम से नाता जोड़ो।
दे दो सिया राम को राजन, भजन करो सब काम बिहाई। अंगद....

अंगद तुम मुझे मत समझाओ, हित अपना मैं जान रहा हूं।
बिना युद्ध के सिया न दूंगा, आकर सन्मुख करो लड़ाई। अंगद....

युद्ध विनाश का कारण बनता, इसीलिए एक शर्त हमारी।
शूर आपका चरण हटा दे, विजय आपकी बस होय जाई। अंगद....

उठे सभासद एक-एक कर, मगर पैर न सके हिलाई।
संकुल झुका दशानन जैसे, गहो राम पद चहो भलाई। अंगद....

¼115½

अंगद गह्यो राम पद आई।
हुआ दसानन काल बिवस प्रभु, निज विवेक को दिया नसाई। अंगद....

किया प्रयास यथासंभव मैं, सद्‌बुद्धि उसको आ जाए।
लाखों बच्चे हो अनाथ न, विधवा दर्द बहुत दुखदाई। अंगद....

पर राघव वह युद्ध चाह रहा, मद में हो गया है मतवाला।
अस्तु शीघ्र अब निर्णय कीजे, लंका पर की जाए चढ़ाई। अंगद....

अंगद बचन सुनकर रघुनंदन, तुरंत सभासद सभी बुलाए।
सुमिर ह्दय रघुकुलमणि भूषण, चारि अनी में सैन्य बनाई। अंगद....

नहीं चाहता राम युद्ध था, पर अब रण यह निश्चय होगा।
मगर न यह रण सीता के लिए, स्पष्ट नीति रहा बतलाई। अंगद....

सीता क्या खुद को भी खोकर, राम युद्ध यह रोक सकता था।
संकुल परंतु धरती पर पशुता, राम से अब देखा न जाई। अंगद....

¼116½

हुई इंद्रजीत अरु लखन में लड़ाई।
निशाचर का छल बल विफल हुआ कौशल, लगा प्राण जाने की शामत है आई।

लेकर बीरघातिनी कहा तब लखन से, नहीं काट ब्रह्मा भी कर सकते इसका।
बचा सकते हो तो बचा प्राण लीचे,यह कहकर के शाक्ति धनुष पर चढ़ाई। हुई...

निशाचर जो चाहे वह प्रहार करले, लखन मृत्यु के भय से किंचित न डरता।
आदर्शो से हटकर जगत में जो जीते, मनुजता रहे देह नर में वे खाई। हुई...

लगी शक्ति सौमित्र के जब ह्दय में, धरा पर गिरे बंद हो गई आंखें।
चाहा मेघनाद ने उठा ले लखन को, उसे क्या पता शेष की है परछाई। हुई...

उसी क्षण हनुमान आए वहां पर, लखन देख मूर्छित हुआ कष्ट भारी।
गया दिन था ढल शाम की थी वह बेला, कहां है लखन कह रहे थे रघुराई। हुई...

हनुमान को देख राघव चकराए, महावीर ने तब कथा सब सुनाई।
कहा जामवंत ने तब हनुमानजी से, संकुल शीघ्र अब बैद लाओ बुलाई। हुई...

¼117½

कहा सुषेन सुनो रघुराई।
राष्ट्र धर्म का प्रश्न खड़ा है, आप ही दें मुझे राह देखाई। कहा....

राज वैद्य मैं हूं रावण का, वेतन भोगी एक कर्मचारी।
यदि उपचार करूंगा राघव, राष्ट्रप्रेम धूमिल होय जाई। कहा....

राष्ट्रप्रेम से विमुख हो जाओ, राम कभी यह नहीं कहेगा।
प्राणी तो आते जाते हैं, राष्ट्र बड़ा होता है भाई। कहा....

हनुमंत इन्हें पहुंचा दो लंका, चिंता लक्ष्मण की अब छोड़ो।
मनुष्यता से राष्ट्र धर्म बड़ा, अपना धर्म निभावो भाई। कहा....

ऐसा नहीं कहो रघुनंदन, सुन सुषेन आंखें भर आई।
मनुजता ही मूल धर्म का, जिसको रहा था मैं बिसराई। कहा....

लखन निरीक्षण कर सुषेन ने, हनुमान को पास बुलाया।
कहा संजीवनी बूटी लाओ, महावीर अब हो सहाई। कहा....

¼118½

साधु का लिया भेष बनाई।
कालनेमि हरि नाम बोल रहा, पर ह्दय में है कुटिलाई। साधु....

हनुमान को प्यास लगी थी, राम- राम ध्वनि सुनकर चौंके।
समझ महात्मा की कुटिया को, आ करके दिया शीश झुकाई। साधु....

दिव्य दृष्टि का देकर हवाला, रामचरित को बरनहि लगा।
विजय अवश्य होगी राघव की, चिंता करो नहीं कपिराई। साधु....

जल मांगा कपि दिया कमंडल, नहीं इससे मेरी प्यास बुझेगी।
जाओ सरोवर में पी करके, आओ शीघ्र पास मेरे भाई। साधु....

उतरे सरोवर में कपि जैसे, किया आक्रमण ग्राह ने आकर।
चरण प्रहार किया कपि जैसे, होय अप्सरा दिया राज बताई। साधु....

पवन तनय तब कालनेमि को, आ करके किया धरासाई।
संकुल ह्दय सुमिर रघुनंदन,तब कपि चले गर्व अधिकाई। साधु....

¼119½

नहीं पहचान संजीवनी पाई।
गिरि खंड उठा लिया हनुमंत ने, अवधपुरी ऊपर गये आई। नहीं....

दृष्टि पड़ गई भरत लाल की, देखा नभ आकृति चलती।
समझ निशाचर की माया को, दिया शिलीमुख तुरंत चलाई। नहीं....

राम-राम कहि गिरे धरा पर, भये अचेत पवन के नंदन।
राम- राम सुनि भरत चकित भये, मन मलीन चिंता घिर आई। नहीं....

जो प्रभु चरण प्रीति दृढ़ मोरी, तो कपि कष्ट तुरंत मिट जाये।
राम-राम कह उठे पवनसुत, भरत को रघुपति कथा सुनाई। नहीं....

भये दुखी मन में पछताने, प्रभु के काम न जीवन आया।
अब गिरि सहित बैठ जाओ सर पर, समय से दूंगा मैं पहुंचाई। नहीं....

कृपा राम की मुझ पर भ्राता, मन में तनिक न संशय करिये।
संकुल हनुमंत चले सराहत भरत भक्ति प्रभु पद सेवकाई। नहीं....

¼120½

नभ में उषा पड़े देखाई।
हनुमान अब तक नहीं आये, मित्र धैर्य अब धरा न जाई। नभ....

भार्या पुत्र पुत्री वैभव, मान प्रतिष्ठा पद ये सारे।
कोशिश से सब मिल सकते हैं, मिले न मगर सहोदर भाई। नभ....

नारि के लिए भ्रात को खोकर, राम का जीना मुश्किल होगा।
अगर लखन ही नहीं रहे तो, राम भी देगा प्राण गंवाई। नभ....

सुग्रीव केवल एक ही दु:ख है, दिया बिभीषण को जो वचन है।
रघुकुल पर यदि लगा कलंक तो, कैसे पूर्वज मुंह दिखलाई। नभ....

बहुत सहे दु:ख राम आज तक, पर वह विचलित नहीं हुआ है।
आज तुम्हें इस तरह देखकर, जीवन संतुलन गया डगमगाई। नभ....

राम को रोता देख इस तरह, जामवंत प्रभु के ढिग आये।
संकुल पवन तनय को देखो, आ रहे न रोओ रघुराई। नभ....

¼121½

असमय क्यों दिया मुझे जगाई।
कौन मुसीबत ऐसी आई, भैया देइ मुझे बतलाई। असमय...

कही कथा तब सब रावण ने, सिया हरण किया उचित न भैया।
सूपनखा का बदला लेते, त्रिभुवन होती भ्रात बड़ाई। असमय...

पर नारी का मगर अपहरण, वीर को शोभा कभी न देता।
नारद ने जो रहस्य कहा था, जान रहे हो उसको भाई। असमय...

राम के रुप में नारायण हैं, जगत मातु हैं सिया भवानी।
कहा मान लो मेरा भ्राता, देकर सिया करो बंद लड़ाई। असमय...

कुंभकरण मुझे ज्ञान न दो अब, चले बिभीषण के पास जाओ।
कभी नहीं रावण झुक सकता, अंतिम निर्णय है मेरा भाई। असमय...

धर्म हमारा क्या है भ्राता, कुंभकरण भी जान रहा है।
संकुल भ्रात छोड़ दो चिंता, कुंभकरण चला शीश झुकाई। असमय...

¼122½

बंधु उठा लिया ह्दय लगाई।
अहो धन्य तुम धन्य बिभीषण, लीन्हा कुल की साख बचाई। बंधु...

बहुत प्रयास किया मैं भैया, बड़े भैया पर मेरी न मानी।
चरण प्रहार किया मेरे ऊपर, लंका से दिया मुझे भगाई। बंधु...

अच्छा तुमने किया बिभीषण, पूर्वज रहेंगे कृतज्ञ तुम्हारे।
मन में कभी कपट नहीं रखना, भजना ह्दय सदा रघुराई। बंधु...

बहुत रह चुका हूं धरती पर, अब जीवन का मोह नहीं है।
तामस तन न भजन हो सकता, करना है अब मुक्ति उपाई। बंधु...

जान रहा हूं मृत्यु है निश्चित, पर मन में भर रही उमंग है।
आज राम से लोहा लूंगा, दूंगा उनको सबक सिखाई। बंधु...

अब तुम जाओ चले यहां से, और राम को यह बतला दो।
संकुल हार जीत से ऊपर, कुंभकरण को रहा देखाई। बंधु...

¼123½

कुंभकरण ने किया लड़ाई।
सुग्रीव अंगद हनुमान नल, सबके छक्के दिया छुड़ाई। कुंभकरण...

हाहाकार मचा सेना में, लगे भागने जहं-तहं बंदर।
त्राहिमाम प्रभु रक्षा कीजे, काल से लीजे नाथ बचाई। कुंभकरण...

सकरूण वचन सुनकर रघुनंदन, कहा सैनिकों पीछे जाओ।
कुंभकरण दिखलाओ अब बल, लिया धनुष पर बाण चढ़ाई। कुंभकरण...

आज बता दूंगा मैं तुमको, कैसे युद्ध किया जाता है।
कहकर शक्ति राम को मारा, रामचंद्र को मूर्छा आई। कुंभकरण...

उठकर हरि कहा धन्य कुंभकरण, तुम सम वीर हुआ न होगा।
तुम्हें प्रणाम राम करता है, सको तो लो अब तो प्राण बचाई। कुंभकरण...

अस कहि दिव्य अस्त्र प्रभु मारा, राम-राम कहि तन को त्यागा।
तासु तेज प्रभु में आकर मिला, संकुल चकित देव समुदाई। कुंभकरण...

¼124½

मेघनाद माया फैलाई।
गया गगन में रथ पर चढ़कर, अग्निबाण को दिया चलाई। मेघनाद....

विचलित देखा जब सेना को, तुरंत लखन ने बाण चलाया।
कट गई जब निशचर की माया, प्रकट हुआ लिया धनुष चढ़ाई। मेघनाद....

आज न जीवित लखन रहोगे, प्रण करके रण को आया हूं।
कहकर शक्ति लखन पर छोड़ी, काट लखन ने दिया गिराई। मेघनाद....

छल बल बहुत किया निशचर ने, पर लक्ष्मण को हरा न पाया।
आत्मग्लानि तब हुई हृदय में, नागपाश को दिया चलाई। मेघनाद....

जासु नाम एक बार सुमिर कर, भव की पाश सहज कट जाए।
सो हरि नागपाश में बंध गए, नर लीला प्रभु रहे देखाई। मेघनाद....

अहंकार में चूर निशाचर, चला विजय का शंख बजाकर।
संकुल सुग्रीव भये अति चिंतित, हनुमंत गए जहां खगराई। मेघनाद....

¼125½

आए गरुड़ जहां रघुराई।
नागपाश में देखकर हरि को, खगपति की बुद्धि चकराई। आए....

मौन रहे मुख वचन न आए, भूल गए केहि कारण आए।
हनुमान बोले खगेश से, अब क्या सोच रहे हो भाई। आए....

बंधन मुक्त करो राघव को, खगपति कहां है ध्यान तुम्हारा।
हनुमान के वचन को सुनकर, दिया गरुड़ सब सर्प भगाई। आए.....

उठकर हरि ने कहा गरूड़ से, राम सदा कृतज्ञ तुम्हारा।
सुनि प्रभु वचन गए भरि लोचन, दीन्हा प्रभु पद शीश झुकाई। आए....

जामवंत तब कहा गरुड़ से, मन में तनिक न संशय करिए।
जड़ को रामचरित करे मोहित, ज्ञानियों के लिए है सुखदाई। आए....

राम लखन हनुमंत सुग्रीव ने, धन्यवाद तब किया गरूड़ का।
संकुल खगपति चले हृदय में, मोह से मगर मुक्ति न पाई। आए....

¼126½

नाथ आज नहीं करें लड़ाई।
जाने क्यों मन आशंकित है, आज रात भर नींद न आई। नाथ....

प्रिये जो तुम चाहती हो कहना, भली-भांति मैं जान रहा हूं।
राम न साधारण मानव हैं, परम शक्ति है उनमें समाई। नाथ....

नेति-नेति जिनको श्रुति कहती, मन इंद्री की परिधि से ऊपर।
सोई सच्चिदानंद रघुवर हैं, निर्गुण ब्रह्म सगुण रघुराई। नाथ....

फिर भी पीछे नहीं हटूंगा, पुत्र धर्म से बंधा हुआ हूं।
मातु-पिता होते तन का कारण, जाऊंगा ऋण इनका चुकाई। नाथ....

मेरे लिए कभी नहीं रोना, तुमसे प्रिय मुझे प्राण नहीं है।
पर मूल्यों से हटकर जीने, में दिखती न मुझे भलाई। नाथ....

अंतिम विदा दीजिए प्रिये अब, सुलोचना कुछ कह न पाई।
संकुल पिय के चरण को छू लिया, मगर अश्रु को रोक न पाई। नाथ....

¼127½

धन्य–धन्य जग में तेरी माई।
अब होगा तुझसा सपूत न, पवन तनय कहा भुजा उठाई।

हनुमान के वचन को सुनकर, आंख बंद कर लगा सोचने।
लक्ष्मण हट जाओ आगे से, अब भी यदि चाहते भलाई। धन्य–धन्य...

लखन कहा तुम वीर हो निश्चित, पर दो में आज एक रहेगा।
अगर चाहते प्राण बचाना, जाओ चले शरण रघुराई। धन्य–धन्य...

लखन वचन सुनि इंद्रजीत ने, ब्रह्मास्त्र लक्ष्मण को मारा।
ब्रह्मास्त्र भी असफल हो गया, माया से लगा करने लड़ाई। धन्य–धन्य...

अजय देखकर मेघनाद को, लक्ष्मण किया राम का चिंतन।
इस पापी ने बहुत नचाया, क्रोधित कर में शक्ति उठाई। धन्य–धन्य...

शीश कट गया इंद्रजीत का, राम–राम कहि छोड़ेसि प्राना।
संकुल जामवंत अंगद नल, मेघनाद की करें बड़ाई। धन्य–धन्य...

¼128½

सुलोचना मिलने चली रघुराई।
बालि तनय को भेजकर रघुवर, बुला कर लिया पास बैठाई। सुलोचना....

राजकुमारी जान रहा हूं, हृदय तुम्हारे की मैं पीड़ा।
फिर भी कहो आने का कारण, मन से संशय सकल मिटाई। सुलोचना....

पति भुजा ने लिखा है राघव, पति का सिर है पास आपके।
करके कृपा दीजिए रघुवर, अब जग से चाहती विदाई। सुलोचना....

देवि कभी न ऐसा कहिए, तुम तो मेरे हृदय में रहती।
कहो अमर करूं पति तुम्हारा, व्यथा तुम्हारी देखि न जाई। सुलोचना....

मेरे लिए प्रकृति परिवर्तन, उचित नहीं होगा रघुनंदन।
सृष्टि के नियम न तोड़ो राघव, दो निज भक्ति सदा सुखदाई। सुलोचना....

सुग्रीव घननाद का सिर लाकर, तुरंत दीजिए नाग सुता को।
गई सुलोचना चली वहां से, संकुल राम आंख भर आई। सुलोचना....

¼129½

अहिरावण तलवार उठाई।
अंतिम इच्छा मुझे बता दो, पूर्ण करूंगा हे रघुराई। अहिरावण....

अंतिम इच्छा यही राम की, मनुष्य मनुष्यता कभी न खोए।
निश्चित कर्म का फल मिलता है, सत्कर्म ही होता सुखदाई। अहिरावण....

अगर आज है मुझको मरना, तो कोई नहीं बचा सकेगा।
राम यही हर बार कहेगा , धूमिल चरित करें न भाई। अहिरावण....

अहिरावण जो तेरी इच्छा, कर पूरी पर ध्यान रहे यह।
पाप का अंत सदा होता है, सत्य को सका न कोई मिटाई। अहिरावण....

अब चुप हो जाओ रघुनंदन, शुभ मुहूर्त का समय आया।
देवी जी स्वीकार करो बलि, कह करके तलवार चलाई। अहिरावण....

तभी पवनसुत आगे बढ़कर, अहिरावण तलवार पकड़ ली।
संकुल अंत निशाचर करके, राम लखन चले पीठि चढ़ाई। अहिरावण....

¼130½

राम अरू रावण करें लड़ाई।
देव वृंद सब नभ से देखें, जयति- जयति जय कहें रघुराई। राम....

कहा दसानन सुनिए तपसी, निज भुजबल मैं बैर बढ़ावा।
कुंभकरण घननाद आदि का, बदला लूंगा आज चुकाई। राम....

यदि तुम भागे आज न रण से, युद्ध की प्यास पूर्ण कर लूंगा।
तपसी आज तेरा वध करके, कर दूंगा यह खत्म लड़ाई। राम....

मुस्कुरा करके कहा राम ने, वीर वीरता कभी न गाते।
अपने बुद्धि विवेक अरू बल से, देते जग को राह देखाई। राम....

बड़ी-बड़ी बातें करने से, बेहतर है कुछ कर्म कीजिए।
तुम रथ पर मैं खड़ा धरा पर, दो मेरा सिर काट गिराई। राम....

सुन हरि वचन क्रुद्ध दसकंधर, वृष्टि सम लगा अस्त्र बरसाने।
संकुल राम किया सब असफल, मूर्छित लंका दिया पहुंचाई। राम....

¼131½

मयतनया बोली सिर नाई।

बुरा स्वप्न देखा है मैंने, आज नाथ न करें लड़ाई। मयतनया...

सब कुछ नष्ट हो गया स्वामी, अब भी युद्ध यह रुक सकता है।
सीता यदि दे दें रघुवर को, देंगे बैर राम बिसराई। मयतनया...

सब कुछ खो करके भी नारी, जीवन भार उठा सकती है।
पर पति को खोकर जीने से, सुंदर पड़ती मौत दिखाई। मयतनया...

इस दारुण दु:ख से हो व्याकुल, सुलोचना तो सती हो गई।
कितनी विधवायें रोती हैं, लंका अंधकार गया छाई। मयतनया...

इसीलिए प्रार्थना हमारी, अब जो है उसे नाथ बचा लें।
मंदोदरी वचन सुन रावण, रहा मौन आंखें भर आई। मयतनया...

चिंतन करके बोला रावण, यदि मैं प्राण बचाऊँ अपना।
संकुल जो जा चुके धरा से, क्या दूंगा उत्तर मैं जाई। मयतनया...

¼132½

रघुपति काटहि शीश नये होई।

सुर मुनि भये भयातुर सारे, नारद आइ कहा रघुराई। रघुपति...

नाथ दया देवन पर करके, अब रावण का अंत कीजिए।
नारद को धीरज दे रघुवर, गए बिभीषण ढिग प्रभु आई। रघुपति...

काल अधीन है जिसकी इच्छा, सो प्रभु जन की लेइ परीक्षा।
नाभि कुंड पियूष रहस्य तब, दिया बिभीषण प्रभुहि बताई। रघुपति...

रावण ने अनुमान लगा लिया, अब जीवन का अंत आ गया।
केंद्र बिंदु तब बना बिभीषण, दिया अमोघ शक्ति चलाई । रघुपति...

प्रभु बिभीषण को कर पीछे, सहा शाक्ति मुरझा तब आई।
उठे कृपानिधि कहा रावण से, अंत तुम्हारा अब गया आई। रघुपति...

खींचि सरासन रघुनंदन ने, तब एकतीस बाण संधाना।
संकुल रावण गिरा धरा पर, तासु तेज हरि में मिला आई। रघुपति...

¼133½

रोवत उठि मंदोदरी धाई।
मुर्छित विकल परी धरनी पर, जल बिन मीन लगत बौराई। रोवत....

आया होश कहत हे स्वामी, तुम सम वीर धरा पर नाहीं।
भुजबल काल और यम जीता, जगत विदित आपकी प्रभुताई। रोवत....

वरुण कुबेर सुरेश पवन रवि, रण सन्मुख नाहीं टिक पाए।
शेष न भार कभी सह पाये, कौन नहीं जो शीश झुकाई। रोवत....

कहा नाथ न मेरा माना, नारायण को नहीं पहचाना।
राम विरोध यह हाल तुम्हारा, रहा न कुल कोऊ अग्नि लगाई। रोवत....

मंदोदरी वचन सुनि राघव मयतनया सिर पर कर रखा।
देवि कर्म का प्रबल है बंधन, बिधि भी सकता नहीं मिटाई। रोवत....

भाभी होती माँ समान है, ध्यान बिभीषण हृदय में रखना।
संकुल लंकापति का क्रिया कर्म, शास्त्र विधि से कीजे जाई। रोवत....

¼134½

लंकापति अब देइ विदाई।
बीती अवधि अवध न पहुंचा, देंगे भरत तब प्राण गंवाई। लंकापति...

तुम हो संत राज को पाकर, निश्चित तुम्हें नहीं मद होगा।
पुत्र तुल्य प्रजा हित करना, तुम विद्वान कहूं क्या भाई। लंकापति...

पुष्पक विमान मंगाया बिभीषण, चढ़े राम लक्ष्मण अरू सीता।
सुग्रीव जामवंत अंगद नल, हनुमान बैठे हरषाई। लंकापति...

राम दिखाया तब सीता को, लक्ष्मण इंद्रजीत यहाँ मारा।
कुंभकरण के बल कौशल को, राघवेंद्र ने सिये बताई। लंकापति...

अवध समीप विमान जब आया, पवन तनय से बोले रघुवर।
समाचार जाकर कहो भरत से, हम निषाद से मिल ले जाई। लंकापति....

तब निषाद केवट आदिक को, रामचंद्र ने गले लगाया।
संकुल सिये किया सुरसरि स्तुति, मातु कृपा जय रघुपति पाई। लंकापति...

¼135½

भरत समीप गए कपि आई।
बैठे कुशासन ध्यान मग्न है, नयन नीर तन सुध बिसराई। भरत...

राम प्रेम की अद्‌भुत मूरत, देख पवनसुत मन हरषाये।
विप्र रूप तब बनाकर हनुमंत, बार-बार आवाज लगाई। भरत....

ध्यान टूट गया भरत लाल का, तुरंत पास हनुमंत के आए।
केहि कारण आगमन तुम्हारा, कृपा शीध्र दे मुझे बताई। भरत....

कुछ पल का ही समय शेष है, आज अन्त तन का कर दूंगा।
सूर्यास्त यदि राम न आए, मैं भी दूंगा प्राण गंवाई। भरत....

अत: विप्र कामना तुम्हारी, शीघ्र बताओ पूरी कर दूं।
हनुमान निज रूप में आए, मुझे पहचान न पाए भाई। भरत....

ऋषि मुनियों का कष्ट दूर कर,रिपु रण जीत आ रहे राघव।
संकुल हनुमंत के वचन सुनकर, लिया भरत ने हृदय लगाई। भरत....

¼136½

आवत अवध आज रघुराई।
प्रमुदित भये सकल पुरवासी, भरत समीप गए सब आई। आवत....

हनुमान चले गए राम पर, भरत तुरंत कौशलपुर आए।
समाचार दिया सभी मातु को, गुरु को जाकर बात बताई। आवत....

सुन सुमंत्र उर भा अति पुलकित, कहा शत्रुघ्न करो तैयारी।
पुरवासियों को समाचार दो, ले नयनों की प्यास बुझाई। आवत....

जो जस रहा सुनत सो भागा, भई भीड़ सरयू के किनारे।
चौदह वर्ष के बाद अवध में, मंगल ध्वनि चहुँ ओर सुनाई। आवत....

देववृंद सब नभ से देखें, कहे धन्य- धन्य अवध के वासी।
पहुंचा पुष्पक जब सरयू तट, जय श्री राम गगन ध्वनि छाई। आवत....

भरत पुष्प लेकर बैठे हैं, राघवेंद्र की दृष्टि पड़ी जब।
संकुल भावकु नेत्र बह चले, परम प्रेम न हृदय समाई। आवत....

¼137½

लिया भरत प्रभु हृदय लगाई।
पुलकित भरत बहत है अखियां, रूप साकार में प्रेम देखाई। लिया....

पूछत कुसल कोसलापति हैं, भरत मौन सुधि देह भुलानी।
राम भरत का मिलन देखकर, प्रमुदित भये देव समुदाई। लिया....

गुरु बसिष्ठ तब आगे बढ़कर, कहा भरत सम कोऊ जग नाहीं।
ज्ञान कर्म अरू योग ध्यान भी, सकत न नाप ऐसी ऊंचाई। लिया....

गुरु पद नाय चरण हरि बोले, हे गुरुदेव अब आज्ञा दीजे।
पिता बचन को पूर्ण कर दिया, अब दीजे मुझे राह बताई। लिया....

हे राघव आचरण तुम्हारा, सार धर्म का सदा रहेगा।
जप तप नियम पाठ पूजा से, तुमको प्रिय चरित्र सुखदाई। लिया....

तुमने मान दिया है गुरु का, की उज्जवल भारत मर्यादा।
संकुल मर्यादा पुरुषोत्तम, लीजे सबको गले लगाई। लिया....

¼138½

जननी चरन गहो हरि आई।
मातु कृपा रघुकुल मर्यादा, दीन्हा पिता का बचन निभाई। जननी....

आज पिता यदि जीवित होते, तो कुछ दृश्य और ही होता।
बिधि गति समझ न कोई पाया, रघुनंदन आंखें भर आई। जननी....

सकुची सहमी हुई कैकेई, को जाकर किया राम ने वंदन।
दिया सांत्वना रघुनंदन ने, लगे सुमित्रा के पग जाई। जननी....

शत्रुघ्न सुमंत्र आदि को, रघुनंदन ने हृदय लगाया।
पुनि प्रकटे हरि अमित रूप में, जन–जन को लिया गले लगाई। जननी....

नारद शिव बिरंचि सनकादिक, निगम नेति जेहि जान न पावा।
सो परब्रह्म राम अविनाशी, मनुज रूप नर चरित्र देखाई। जननी....

गृह– गृह मंगल भयो अवध में, प्रमुदित भये अयोध्या वासी।
संकुल राम अरू भरत प्रेम की, महक गई भूमंडल छाई। जननी...

¼139½

बैठे सिंहासन रघुराई।
गुरु बसिष्ठ ने तिलक लगाया, जय-जय ध्वनि नभ मंडल छाई। बैठे....

सिंहासन पर राम सिये लखि,शिव बिरंचि हर्षित सुर सारे।
भरत लखन प्रमुदित रिपुसूदन, कौसल्या सुख नहि कहि जाई। बैठे....

वेद मंत्र पढ़ रहे बिप्र गण, प्रमुदित सकल अयोध्या वासी।
चौदह वर्ष की मिटी प्रतीक्षा, जन-जन रहा राम गुण गाई। बैठे....

अंगद सुग्रीव जामवंत नल, राजा रूप में देख राम को।
भए मगन भूले अपने को, हनुमंत करें चरन सेवकाई। बैठे....

उठकर राम ने कहा सुमंत्र से, ये प्रिय मित्र हैं सखा हमारे।
गुरु की कृपा अरू इनके बल पर, अजय दसानन पर विजय पाई। बैठे....

सदा कृतज्ञ रहेगा राघव, लंकापति सुग्रीव तुम्हारा।
संकुल प्रभु के वचन को सुनकर, दिया बिभीषण शीश झुकाई। बैठे....

¼140½

जय राम- राम जय रघुराई।
जब से सिंहासन पर बैठे, सुख समृद्धि भूतल पर आई। जय राम....

हो गया धरा का बोझ खत्म, प्रमुदित आच्छादित पुष्पों से।
प्रातः जब बहती मंद पवन, लेने लगती तब अंगड़ाई। जय राम....

आचारवान हो गए लोग, निष्ठावान हो गए कर्मचारी।
रिश्वत लेते न जनता से, करते लोगों की भलाई। जय राम....

प्रकृति सदा रहती अनुकूल, समय पर वारिद जल देते।
हर व्यक्ति स्वस्थ होता सुंदर, हर तरफ दिखाती सफाई। जय राम....

होती न किसी की अल्प मृत्यु, रहता न कोई भूखा प्राणी।
लिंगभेद ऊंच-नीच का विचार, जनता ने दीन्हा बिसराई। जय राम....

कर्तव्य से करते लोग प्यार, सदाचार बन गया ही पूजा।
संकुल ऐसा था रामराज्य, धर्म मूल सभी की भलाई। जय राम....

¼141½

जयति–जयति जय–जय रघुराई।
तुम सम न दयालु कोई जग में, दीनों का न कोई सहाई। जयति–जयति...

जब– जब भार पड़ा धरती पर, बढ़े दुष्ट अरू अत्याचारी।
की मानवता तब–तब रक्षा, विविध भेष प्रभु लिया बनाई। जयति–जयति...

धर्म का मूल सदा मानवता, दया क्षमा अरू करुणा समता।
तुमने यही सिखाया जग को, होता प्रेम सदा सुखदाई। जयति–जयति...

होता जिसका ह्रदय पावन, वही राम के मन को भाता।
आडंबर अरू अहंकार ये, देते आत्मा मलिन बनाई। जयति–जयति...

सुर मुनि रामचरित को गाएं, नारद को अतिशय सुख कारी।
जिसने सुंदर किया आचरण, कृपा राम की उसने पाई। जयति–जयति...

जग से जाएं टूट सहारे, अंधकार में मन घिर जाए।
संकुल तब करें याद राम की, मिलेगी शांति लीजे अजमाई। जयति–जयति...

¼142½

हे रघुनंदन शरण तुम्हारी।
मान जगत में मेरा रखो, विनती सुन लो नाथ हमारी। हे रघुनंदन...

पूर्ण ब्रह्म तुम परमेश्वर हो, कण– कण में हो रमने वाले।
अज अखंड निर्गुण अविनाशी, नेति–नेति रहे शास्त्र पुकारी। हे रघुनंदन...

अकथ अलौकिक अविगत करनी, वेद भी जिसे पार न पावें।
ज्ञान ध्यान से सधे न साधे, प्रेम के बस में सदा खरारी। हे रघुनंदन...

प्रेम ह्रदय जब निर्मल करता, तभी सत्य है चित्त को भाता।
बिना सत्य आचरण में लाए, हो सकता न जीव सुखारी। हे रघुनंदन...

दुनिया के सब झूठे नाते, केवल उर का ताप बढ़ाते।
सबको अपना हित है प्यारा, जीव के केवल तुम हितकारी। हे रघुनंदन...

लोभ मोह में उलझा प्राणी, कभी समझ न राम को पाया।
संकुल मन को निर्मल करिए, झूठी है यह दुनियादारी। हे रघुनंदन....

¼143½

रघुपति राघव जय रघुराई।
जो भी शरण तुम्हारे आया, दिया उसका अज्ञान मिटाई। रघुपति....

जब तक हृदय ज्ञान नहीं आता, नेत्र देखते वही दिखाता।
मन हो जाता फिर दीवाना, पड़ता दूर न कभी देखाई। रघुपति....

मेरा तेरा में रम करके, पाप का बोझ बढ़ाता रहता।
मानवता के रक्त को पीकर, घूम रहा जग में बौराई। रघुपति....

रिश्वत धूर्तता अरू बेईमानी, करके अर्थ कमाता रहता।
ए.सी कार अरू बंगला पाकर, करता गर्व रहा इतराई। रघुपति....

कथनी करनी कभी न मिलती, रुपया से बड़ा कुछ नहीं दिखता।
दुरुपयोग पद अरू अधिकार का, आत्मतत्व को लेता खाई। रघुपति....

तन अशक्त जब जर्जर होता, काम नहीं तब कोई आता।
संकुल पाप किया जिनके लिए, मृत्यु पर बाजा रहे बजाई। रघुपति....

¼144½

राम रमापति जय रघुराई।
बिना तुम्हारे शरण में आए, चिर विश्राम न कोऊ पाई। राम....

तब तक हृदय बसत खल नाना, लोभ मोह मद काम कराला।
जब तक चिंतन नहीं राम का, करता जीव कपट बिसराई। राम....

कर्तव्य पथ पर चलते रहिए, राम को अर्पित जीवन कर दें।
सरल हृदय रघुपति को भाता, सहज दया करते सुरसाईं। राम....

आडंबर प्रभु को नहीं भाता, सत्य ही राम के पास में लाता।
सत्य से जिसने नाता जोड़ा, उसने कृपा राम की पाई। राम....

कण-कण में जो रमने वाला, वही राम साकार रूप में।
मन जिसका एकाग्र हो गया, द्वैत पड़ा कब उसे देखाई। राम....

वास्तविक रिश्ता सिर्फ राम से, जग से रिश्ता कभी न जोड़ें।
संकुल केवल सत्कर्म करिए, राम से देगा सहज मिलाई। राम....

¼145½

सिये सहित सोहत रघुराई।
एक बार जो छवि बिलोकि ले, उर से चली कलुषिता जाई। सिये...

श्याम वर्ण मुख दुति मनोहर, अधर सुधारस उर पुष्पमाला।
बाहु विशाल बड़ी है अखियां, मनभावन छवि बरनि को पाई। सिये...

पीत वसन हैं केश मनोहर, सुघड़ नासिका श्रवण में कुंडल।
अंग –अंग की अनुपम छवि है, जो देखा दिया तन बिसराई। सिये...

शारद शेष गणेश की मति नहीं, सिय सौंदर्य बरनि जो पावें।
अस कोऊ कवि नहीं है धरती पर, सिय सौंदर्य सके जो गाई। सिये...

जगत मातु श्री राम की शक्ति, सगुण ब्रह्म की परम सहायक।
द्वैत नहीं ह्रदय में रखिये, दें सियाराम में भेद मिटाई। सिये...

मंगल मूरत रामसीता की, प्राणी सदा ह्रदय में धरिये।
संकुल ह्रदय को कीजे पावन, लीजे जीवन सफल बनाई। सिये...

¼146½

सीताराम चरन सुखदाई।
मन मूरख अब छोड़ कामना, लीजे जीवन सफल बनाई। सीताराम...

विषयों के सुख में फंस करके, जाने कब से भटक रहा था।
बड़े भाग्य मानुष तन पाया, व्यर्थ रहा क्यों इसे गंवाई। सीताराम...

जन्म मरण जरा व्याथि आदि से, जाने कब से झुलस रहा है।
अनुकूलता प्रतिकूलता पाकर, रोता कभी–कभी मुस्काई। सीताराम...

मन जिसको तू अपना कहता, वे अपने मन के मतवाले।
प्यार का सौदा केवल जग में, बात समझ न अब तक आई। सीताराम...

घटती उम्र बढ़ रहा मोह है, पकड़ रहा है केवल छाया।
अंत में कुछ नहीं कर पाएगा, यहीं रहेगी तेरी कमाई। सीताराम....

यदि अब भी नहीं नींद से जागा, समय गए पर पछतायेगा।
संकुल प्रेम राम से केवल, जग से कर्तव्य किए भलाई। सीताराम...

¼147½

प्रेम के बस में हैं रघुराई।
ज्ञान संचालन बुद्धि करती, देती अहंकार उलझाई। प्रेम....

सही गलत में क्या अंतर है, यद्यपि पृथक ज्ञान ही करता।
पर अपने को श्रेष्ठ समझना, राम से दूरी देता बनाई। प्रेम....

प्रेम सरल है मगर कठिन है, इसकी रीति निभाना जग में।
खुद अपना अस्तित्व मिटाकर, करना केवल प्रिय सेवकाई। प्रेम.....

मिट जाती सुख-दु:ख की कामना, कर्तव्य पर जीवन बलिहारी।
राम की इच्छा समझ जगत में, प्रेम को दोष न पड़े देखाई। प्रेम....

वास प्रेम का जिस उर होता, दुखी किसी को देख न पाता।
नहीं कपटता उर में होती, कृपा राम की जाता पाई। प्रेम....

प्रेम ज्ञान दोनों का संगम, जिस हृदय में हो जाता है।
संकुल ऐसे प्रभु भक्तों को, बार-बार रहा शीश झुकाई। प्रेम....

¼148½

ठाँव चरणों में दो रघुराई।
इस असार संसार में तुम बिन, कोऊ नहीं मेरा सहाई। ठाँव....

मैं पामर उलझा माया में, नहीं खुद को पहचाना।
अपना समझ जिया जिनके लिए, पागल दिया बनाई। ठाँव....

मन अशांत तन जर्जर हो रहा, घाव पर लगती घातें।
अपने सुख में मगन जगत के, रिश्ते पड़े देखाई। ठाँव....

कोई नहीं समझ सकता है, होती हृदय जो पीड़ा।
रघुनंदन धीरज दो मन को, दो अज्ञान नसाई। ठाँव....

दया करो मुझ पर रघुनंदन, जड़मति हूँ अज्ञानी।
तुम बिन कोई नहीं जगत में, जो करे मेरी भलाई। ठाँव....

मेरे अवगुण को बिसार कर, नाथ कृपा अब कीजे।
संकुल शरण तुम्हारे रघुवर, बिगड़ी दीजे बनाई। ठाँव....

¼149½

राम भक्ति सुंदर सुखदाई।
मूरख मन दे छोड़ वांछा, गया समय वापस न आई। राम....

राम की भक्ति बहुत सरल है, केवल मन को निर्मल करिए।
विषयों से उसे सिर्फ खींचकर, प्रभु चिंतन में देइ लगाई। राम....

विषय का अनुभव जन्म- जन्म का, मन रहता जिसका दीवाना।
सहज नियंत्रण में नहीं आता, होती यहां परम कठिनाई। राम....

अस्तु प्रथम मन को न रोके, जाता है जहां पर जाने दें।
बस विचार को करें परिष्कृत, लीजे भाव पवित्र बनाई। राम....

भाव पवित्र बनाकर मन के, दिशा वासना को दे दीजे।
दमन वासना बहुत कठिन है, कृपा राम बिन न होय पाई। राम....

मुक्त कामना से हो करके, निश्छल प्रेम भक्ति हो जाता।
राम भक्ति संकुल उर आती, द्वैत न पड़ता कहीं देखाई। राम....

¼150½

आतप में छाया मन भाई।
बहुत बार किया अदला-बदली, मगर चैन की नींद न आई। आतप....

दृष्टि से सहज दिखाई पड़ता, एक तत्व के रूप अनेकों।
तरल वाष्प अरू हिम के रूप में, सब है जल केवल सच्चाई। आतप....

कई नाम में बंधे हुए हैं, दुनिया के ये रिश्ते नाते।
मूल सभी का सिर्फ स्वार्थ है, खत्म स्वार्थ हुए धराशाई। आतप....

दग्ध हृदय को मिले सांत्वना, रिश्ता नया खोजने लगते।
समय का ध्यान कभी नहीं देते, अंतिम तट जीवन गया आई। आतप....

त्याग जगत का तन से करना, मेरे मत से सही नहीं है।
ओस सदृश्य मगर तन के सुख, प्यास न सकते कभी बुझाई। आतप...

रमे राम है सकल भुवन में, जीवन उनको अर्पित कर दें।
संकुल नाता सिर्फ राम से, मुक्ति की केवल एक उपाई। आतप....

¼151½

पद अंबुज बंदउं रघुराई।
कृपा सदा सेवक पर करना, देना भव से पार लगाई। पद....

राम रमापति हे रघुनंदन, जो भी शरण तुम्हारे आया।
भाल हुआ उसका जग ऊपर,सुर नर मुनि सब किया बड़ाई। पद....

भ्रात पिता जग के रिश्तों से, हो निराश जब तुम्हें पुकारा।
पल भर की न देर लगाया, सारी पीड़ा दिया नसाई। पद....

जब -जब भीर पड़ी भक्तों पर, अनाचार ने शीश उठाया।
विविध भेष में हे नारायण, लिया भक्तों की लाज बचाई। पद....

ऊंच-नीच और जाति-पांति से, ऊपर मानवता बतलाया।
एक कुटुंब सा जग सारा है, महिमा विश्वव बंधुत्व की गाई। पद....

चरण पादुका प्राप्त भरत कर, संकुल राम कथा के नायक।
गौतम तिये मुक्त रज छूकर, केवट भाग्य नहीं कहि जाई। पद....

¼152½

सीतापति अब शरण तुम्हारी।
तात मातु गुरु बंधु तुम्ही हो, नाथ राखिये लाज हमारी। सीतापति...

श्याम गात अनुपम छवि लखकर, जो देखा दिया होश गंवाई।
ज्ञानी भी न रोक सका खुद को, मगन हुआ हरि रूप निहारी। सीतापति...

देव दनुज गंधर्व मनुज में, नहीं कोऊ अस जन्मा जग माहीं।
राम सरिस पुनीत आचरण, सीता जैसी न सुकुमारी। सीतापति...

जब तक मोह का उर में डेरा, नेत्र देखते वही दिखाता।
उसे पकड़ने की कोशिश में, उम्र बीत जाती है सारी। सीतापति...

लहूलुहान ह्रदय होता है, जब परिणाम सामने आता।
रक्त से सींचा जिस कुटुंब को, अन्न की जगह खिलाते गारी। सीतापति...

निकले प्राण की इससे पहले, अब प्राणी रघुनाथ सुमिर ले।
संकुल यदि अब भी नहीं जागा, श्रवान की होगी मृत्यु तुम्हारी। सीतापति...

¼153½

हे राघवेंद्र संताप हरें।
अज्ञान में भटक रहे जन को, अवलम्बन दें निस्तार करें। हे....

हे दयासिंधु हे करुणाकर, तुम सा उदार न भूतल पर।
दीनों पर करते सदा दया, मेरा भी अब कल्याण करें। हे....

जो शरण राम के आता है, दुःख उसको नहीं सताता है।
कर देते पावन उसका हृदय, ऐसे प्रभु दीनदयाल हरे। हे....

दैहिक दैविक भौतिक दुःख से, जब हृदय सुलगने लगता है।
संसार में दिखे न जब अपना, निराश न हो हरि ध्यान धरें। हे....

सब रोगों की एक ही औषधि, श्री राम को जीवन कर अर्पित।
कर्तव्य के पथ पर सदा चलें, रघुनंदन से बस प्यार करें। हे....

बिन कृपा तुम्हारे रघुनंदन, आता न ज्ञान का उर प्रकाश।
संकुल पर कृपा तुम्हारी है, अवगुण का प्रभु न ध्यान धरें। हे....

¼154½

तुम सम को दयालु रघुराई।
सहज कृपा भक्तों पर करते, देते सब संताप मिटाई। तुम....

दीनबंधु करुणा के सागर, नाथ दया अब मुझ पर कीजे।
जाने कब से भटक रहा हूं, दीजे अब उस पार लगाई। तुम....

राजीव नयन धरे धनु सायक, दुष्ट निकंदन हे रघुनायक।
दया दृष्टि अब मुझ पर कीजे, दें उर के त्रिय ताप नसाई। तुम....

सही गलत का बोध नहीं है, अधम नीच हूं मैं संसारी।
करूणाकर अब कृपा कीजिए, ज्ञान की दें उर ज्योति जलाई। तुम....

काम क्रोध मद मोह लोभ से, नाथ सुलगती रहती छाती।
कृपासिंधु अवगुण बिसार कर, सत् पथ की दें राह देखाई। तुम....

रखा मान सदा भक्तों का, सर्वनाश कर दी दानवता।
संकुल शरण तुम्हारे रघुवर, दीजे भक्ति नाथ सुखदाई। तुम....

¼155½

जगत प्रकाशक जय रघुराई।
कृपा सदा सेवक पर करना, बिगड़ी दीजे नाथ बनाई। जगत....

हे कण-कण में रमने वाले, तुमसे भी क्या छिप सकता है।
मेरी त्रुटियों को बिसार कर, नैया दीजे पर लगाई। जगत....

निज गंतव्य का बोध नहीं है, भटक रहा हूं माया प्रेरे।
बिना तुम्हारी कृपा के राघव, तम से मुक्ति न कोऊ पाई। जगत....

जब तक शरण जीव नहीं आता, बहुत कठिन दुःख से छुटकारा।
मूल मंत्र जीवन का यह है, राम भजे सब काज बिहाई। जगत....

सत्य जगत के रामचंद्र हैं, ध्यान केंद्रित इस पर करिए।
मूरख मन अब राम सुमिर ले, तज दे हृदय से कुटिलाई। जगत....

बाह्य जगत में बहुत भटक चुका, मन अपने अंदर अब झांको।
संकुल स्वयं से दृष्टि मिलाकर, लो जीवन परिपूर्ण बनाई। जगत....

¼156½

नहीं रघुपति सम कोऊ हितकारी।
सुर नर मुनि संसार के नाते, मतलब के सब मीत पुजारी। नहीं....

प्रेम चाहे कितना ही कर लो, सबको हित अपना है प्यारा।
संतुलन अगर जरा भी बिगड़ा, पीठ पीछे देते हैं गारी। नहीं....

आवश्यकता की पूर्ति मूल है, दुनिया में हैं जितने नाते।
अदला-बदली करते रहते, यहां चतुर सारे व्यापारी। नहीं....

मन को शांति नहीं मिल सकती, जब तक हृदय ज्ञान नहीं आता।
ज्ञान हृदय में तभी टिकेगा, रघुपति पद रति होय हमारी। नहीं....

बिन रघुनाथ शरण में आए, चाहे कर लो कोटि उपाई।
प्यास बुझेगी न अंतस् की, अतृप्त मरेंगी इंद्रियां सारी। नहीं....

संकुल प्रेम सिर्फ राघव से, पर कर्तव्य से कभी न भागे।
निश्चित अखिल विश्राम मिलेगा, छंट जाएगी सारी अंधियारी। नहीं....

¼157½

सगुण ब्रह्म जय–जय रघुराई।
जासु कृपा अज्ञान नसावे, द्वैत पड़े न कहीं देखाई। सगुण...

भ्रम बस सर्प दिखाई पड़ता, आगे कदम कभी नहीं बढ़ता।
जब प्रकाश अंधकार मिटाता, रस्सी लख बुद्धि चकराई। सगुण...

जीव अंश अविनाशी ईश्वर, ज्ञान हृदय में जब यह आता।
माया का आवरण तब हटता, पुत्र भार्या न कोई भाई। सगुण....

निर्गुण सहज समझ नहीं आता, अतः प्रथम है सगुण जरूरत।
राम हृदय में जब रम जाते, निर्गुण ब्रह्म समझ तब आई। सगुण....

एक ब्रह्म के नाम अनेकों, पृथक- पृथक ऋषियों ने गाया।
तत्व एक है जैसे सूरज, नदी सरोवर कूप समाई। सगुण...

ब्रह्म सच्चिदानंद रघुवर है, हृदय में रखिए श्यामल मूरत।
संकुल निश्चित मोक्ष मिलेगा, जन्म मरण सब दुःख मिट जाई। सगुण....

¼158½

सीताराम चरण चित्त दीजे।
कर्म त्यागना उचित नहीं है, पर आसक्ति न उर में कीजे। सीताराम....

जिसने जन्म लिया दुनिया में, दुःख से उसे गुजरना होगा।
रोग शोक अरू जरा आदि की, पीड़ा को हंस करके पीजे। सीताराम....

यह दुनिया है रैन बसेरा, छोड़कर इसको जाना होगा।
जाएगा क्या साथ हमारे, चिंतन इसका भी कर लीजे। सीताराम....

पाप कर्म जिनके लिए करता, काम अंत में नहीं आएंगे।
धर्म जाति सब झूठे बंधन, इनसे पृथक आत्मा कीजे। सीताराम....

जग में केवल प्रेम सार है, राम को केवल प्रेम पियारा।
प्राणी त्याग जगत से आशा, पकड़ प्रेम के मार्ग को लीजे। सीताराम....

उलझ न अब दुनियादारी में, आत्मा का उद्धार कीजिए।
संकुल हृदय राम को रखकर, जग में पालन कर्तव्य कीजे। सीताराम....

¼159½

परमारथ केवल रघुराई।
प्रतिभासिकी पृथक माया से, बिना स्वप्न टूटे न जाई। परमारथ....

जितने पल सपनों में रहते, उसे झूठ नहीं कह सकते हैं।
मगर नींद जब खुल जाती है, कुछ भी पड़ता नहीं देखाई। परमारथ....

व्यवहारिकी भी माया ऐसे, कभी नहीं झूठी दिखलाती।
जब तक काम इंद्रियां करती, मन को लगती अति सुखदाई। परमारथ....

पाने खोने के चक्कर में, मन को ज्ञान कभी न भाता।
झूठे नहीं मगर मिथ्या है, जीवन के सुख दु:ख समुदाई। परमारथ....

हंसने रोने अरू गाने में, समय जिंदगी का कट जाता।
बोध न परमारथ का होता, जीवन देते व्यर्थ गंवाई। परमारथ....

राम ब्रह्म परमारथ रूप हैं, जिसने राम से नाता जोड़ा।
संकुल मुक्त हुआ दुनिया से, कीर्ति अमर धरती पर छाई। परमारथ....

¼160½

जग के केंद्र बिंदु रघुराई।
सरल हृदय रघुपति को भाता, जहां न छल प्रपंच चतुराई। जग....
राम सरिस कोऊ उदार नहीं, जन का दोष हृदय नहीं धरते।
जो भी शरण कपट तज आता, देते सब संताप नसाई। जग....

पूजा व्रत शास्त्रों को पढ़कर, चाहे कितने तीर्थ भटक लो।
जब तक मन पर मैल जमी है, सत्य पड़ेगा नहीं देखाई। जग....

सत्य निष्ठ आचरण है जिसका, वही राम के मन को भाता।
बेईमानी के धन से यज्ञ कर, स्वर्ग कल्पना दें बिसराई। जग....

जन सेवा हरि की सेवा है, मानवता है सार धर्म का।
दाढ़ी तिलक वस्त्र रंगने से, मन की नहीं मलिनता जाई। जग....

दुनिया को धोखा दे करके, धन यश मनुज कमा सकता है।
मगर राम तो सिर्फ देखते, प्राणी तेरी सत्य कमाई। जग....

कल को भूल आज से प्राणी, रघुनंदन के शरण में आजा।
संकुल अब तज दे कुटिलाई,यदि अपनी चाहते भलाई। जग....

¼161½

रघुपति कृपा अविद्या जाई।
बोध चेतना का होता है, जीवन से जाती जड़ताई। रघुपति...

वस्तु दिखाई तब तक पड़ती, जब तक हम जाग्रत रहते हैं।
नेत्र बंद जैसे कर लेते, कुछ भी पड़ता नहीं देखाई। रघुपति...

निद्रा में सपनों की दुनिया, हमको हंसती और रुलाती।
टूटी नींद स्वप्न भी टूटा, मस्तिष्क स्मृति रही समाई। रघुपति...

भौतिक जगत से जब तक नाता, ध्यान केंद्रित नहीं हो पाता।
ध्यान केंद्रित जब हो जाता, द्वैत से मुक्त बुद्धि होय जाई। रघुपति...

अगर साधना नहीं कर सकते, तो श्रीराम का चिंतन करिए।
जीवन भार छोड़ रघुवर पर, सुख दुःख से ऊपर उठि जाई। रघुपति...

निश्चित करेंगे राम अनुग्रह, मन में तनिक न संशय करिए।
संकुल राम हृदय में सुमिरों मृत्यु का भय न कभी सताई। रघुपति...

¼162½

प्रेम से सहज द्रवहिं रघुराई।
दीनबंधु ऐसे रघुवर को, भज मन अब तज दे कुटिलाई। प्रेम...

प्यास इंद्रियों की न बुझती, चाहे कितना जोर लगा लो।
राम के सिवा कौन दुनिया में, दे मन जो तुझे धैर्य बंधाई। प्रेम...

मैं मेरा तेरा में फंसकर, मन तू जिससे आश लगाया।
सब स्वार्थ में बंधे हुए हैं, कौन करेगा तेरी भलाई। प्रेम...

अपना पेट काट- काट कर, जिनके लिए तू कौड़ी जोड़ा।
पाप पुण्य में भेद किया न, अंत में देंगे वे बिसराई। प्रेम...

प्रेम हृदय में तभी टिकेगा, जब मन सत्य से नाता जोड़े।
जब तक पावन नहीं आचरण, प्रभु पद प्रीति नहीं उमगाई। प्रेम....

जग का संबंध सिर्फ देह से, मन रघुपति के शरण में आजा।
संकुल मन यह मार्ग पकड़ ले, अंत दुःखों का तेरे होय जाई। प्रेम...

¼163½

रसना रट ले राम रघुराई।
कर दे बंद अब झूठ बोलना, दो नंबर की कमाई। रसना....

लाख रुपए वेतन पाता, फिर भी पेट न भरता।
चालीस प्रतिशत लेता कमीशन, पद पाकर बौराई। रसना....

संविधान की कसम को खाकर, जनता मूर्ख बनाता।
सत्यमेव का लगाकर नारा, दीन्हा सत्य छिपाई। रसना....

लक्ष्य इंद्रिय सुख जीवन का, पैसा ही मां - बाप।
शेर के जैसा भोजन करता, न्याय नियम लिया खाई। रसना....

खेल समय का रहा जगत में, ध्यान न इस पर दीन्हा।
अब पछताने से क्या होगा, अंत समय गया आई। रसना....

रघुपति कृपा उसी पर करते, सत् पथ पर जो चलता।
संकुल जीवन क्षणभंगुर है, तज न कभी सच्चाई। रसना....

¼164½

मानवता भूषण रघुराई।
जाति धर्म सीमा से ऊपर, मानव मूल्य दिया पहुंचाई। मानवता....

राष्ट्र धर्म के लिए समर्पित, रामचंद्र ने किया था जीवन।
भारत की संस्कृति सभ्यता, राम ने जीवन में अपनाई। मानवता....

मानव क्या मर्कट भालू को, दिया राम आदर्श की शिक्षा।
उच्च नीच लिंग भेद मिटाकर, सबरी के झूठे फल खाई। मानवता....

किया असुर सभ्यता से रक्षा, यद्यपि धनुष को पड़ा उठाना।
दुष्ट दुष्टता कभी न तजता, चाहे कर लो लाख उपाई। मानवता....

जीत कर लंका दिया बिभीषण, दिया शांति संदेश जगत को।
मर्यादा को कभी न छोड़ें, हर प्राणी की करें भलाई। मानवता....

मानव जीवन बहुत कठिन है, राग द्वेष में जलता रहता।
संकुल इसलिए आज जरूरत, रामचरित सबको सुखदाई। मानवता....

¼165½

राम चरण जब मन रम जाई।
माया का आवरण तब हटता, जाती जीवन से जड़ताई। राम....

राम का बोध नहीं हो सकता, जब तक जड़ से मोह रहेगा।
दृष्टि नहीं दृष्टिकोण को बदलें, होगा पंथ सुगम सुखदाई। राम....

राम ब्रह्म सच्चिदानंद हैं, सगुण रूप कीन्हा नर लीला।
सुख-दुःख से न कभी हों विचलित, पालन कर्तव्य किए भलाई। राम....

मृगतृष्णा से बाहर निकलो, बाहर नहीं देखिए अंदर।
आत्मबोध जब हो जाता है, त्रिविध ताप न सके सताई। राम....

हृदय निष्कपट जिसका होता, वही राम के मन को भाता।
जिस पर कृपा राम की होती, वहां तिमिर न सकता आई। राम....

राम को जीवन करें समर्पित,विचलित जगत नहीं कर सकता।
संकुल निश्चित मोक्ष मिलेगा, जन्म मरण सब दुःख मिट जाई। राम....

¼166½

बंधन मुक्त करो रघुराई।
क्षमा करें अपराध हमारे, अब दीजे उस पार लगाई। बंधन....

अज्ञानता के वशीभूत हो, मैंने जग से नाता जोड़ा।
जिनको अपना समझा जग में, सबने दिया मुझे ठुकराई। बंधन....

दुनिया के मिथ्या हैं नाते, सहज समझ में कभी न आता।
भौतिक सुख का नशा है ऐसा, मल को भी देता महकाई। बंधन....

होश नहीं आता जीवन भर, विषय बना देते हैं पागल।
कृपा राम न जब तक करते, गंतव्य पड़ता नहीं देखाई। बंधन....

जाने कब से भटक रहा हूं, रघुनंदन अब पास बुला लो।
जगह चरण में देकर राघव, दीजे सारे ताप नसाई। बंधन....

भूल हुई है मुझसे भारी, पर तुम तो हो दया के सागर।
अब संकुल को शरण लो राघव, दो जग के प्रपंच छुडाई। बंधन....

¼167½

रघुपति लीजे लाज बचाई।
तुम बिन नहीं कोई दुनिया में, मेरा संगी सहाई। रघुपति....

छल प्रपंच से भरा जगत है, पल- पल लगती घातें।
वस्त्र के रूप में आज धर्म है, सत्य को रहा छिपाई। रघुपति....

मुँह देखी बातें करते हैं, अक्सर दुनिया वाले।
स्वार्थ संचालित रिश्ते देखे, कर्तव्य रहे बिसराई। रघुपति....

हार कर आया शरण तुम्हारी, दया दृष्टि अब करिए।
असहनीय हो रही वेदना, दो उर धीर धराई। रघुपति....

राम रमे हो तुम कण-कण में, तुमसे क्या छुप सकता।
त्याग दिया दुनिया को मन से, अब लो नाथ से अपनाई। रघुपति.....

व्यर्थ खो दिया सारा जीवन, बुद्धि काम नहीं करती।
पतन न हो संकुल का रघुवर, जन्म न अब फिर पाई। रघुपति....

¼168½

राम की भक्ति मुक्ति उपाई।
ओस के जैसे भौतिक सुख हैं, प्यास न सकते कभी बुझाई। राम....

ज्ञान इंद्रियों का भ्रामक है, सीमा बहुत है इनकी छोटी।
मन इनको न समझ हितैषी, देंगे ये तुझको उलझाई। राम....

पेट मनुज का नहीं भरेगा, यदि सारी पृथ्वी मिल जाए।
आत्म संतोष बिना अपनाए, शांति जगत न कोऊ पाई। राम....

मनुष्यता है सार धर्म का, सदाचार ही केवल पूजा।
राम देखते नहीं आडंबर, जाति धर्म धन सुंदरताई। राम....

राम को प्रिय सत्कर्म जो करता, हानि लाभ से ऊपर उठकर।
दया सभी जीवों पर करता, नहीं कामना पास में आई। राम....

प्रेम की डोर बांध राघव से, जग में निर्भय विचरण करता।
संकुल ठगा वह पग- पग जाता, रोता नहीं सिर्फ मुस्काई। राम.....

¼169½

हे मन राम भजन अब कीजे।
परमारथ का चिंतन करके, मानव जन्म सफल कर लीजे। हे मन....

बड़ा विचित्र जगत का मेला,सहज समझ में कभी न आता।
लेने देने के चक्कर में, व्यर्थ समय बर्बाद न कीजे। हे मन....

पल- पल यहां बदलते रहते, जगत में हैं जितने आकर्षण।
साथ न देता कोई सफर में, मीत बना चाहे कितने लीजे। हे मन....

घूम रहा है चक्र प्रकृति का, इसीलिए हमसफर दिखाता।
प्रकृति करती पूर्ण प्रयोजन, ध्यान जरा इस पर भी दीजे। हे मन....

जब तक खुलते नेत्र न उर के, राम में ध्यान नहीं लग पाता।
बिना राम में ध्यान लगाए, शांति नहीं कुछ भी कर लीजे। हे मन....

अकथ अलौकिक अविगत हरि है, कोई नहीं वाणी दे सकता।
संकुल हृदय कीजिए पावन, अब बिगड़े न ध्यान यह दीजे। हे मन....

¼170½

कण- कण में रमते रघुराई।
बोध चेतना जब हो जाता, माया सकती नहीं नचाई। कण....

जड़ से चेतन सदा पृथक है, पर चेतन जब जड़ बन जाता।
नहीं समझ तब रघुपति आते, जड़ ही पड़ता सत्य देखाई। कण....

सत्य बोध जब जड़ में होता, तब बुद्धि की होती हानि।
बुद्धि संतुलन जैसे बिगड़ा, घिर आते हैं दु:ख समुदाई। कण....

नए-नए भावों में फंसकर, बुद्धि कर्म रचाती रहती।
ध्यान उम्र का कभी न रहता, देते जीवन कर्म नसाई। कण....

कर्म का बंधन बड़ा प्रबल है, तोड़ न कोई इसको पाता।
इन्हें भोगने को नर जग में, विविध जन्म लेता है आई। कण....

अगर चाहते दु:ख से बचना, तो जड़ता का त्याग कीजिए।
संकुल राम हृदय में रखकर, कर्ता पन दीजे बिसराई। कण....

¼171½

आश्रय राम सदा सुखदाई।
जग के आश्रय सदा बदलते, एक नियम न कहीं देखाई। आश्रय....

मां से बड़ा न भौतिक नाता, प्रथम आश्रय होती माता।
कहीं दिखाई पड़ती हलचल, मन माँ की गोदी में जाई। आश्रय....

बड़ा पिता से कुछ न दिखाता, प्रथम समझ में इतना आता।
जैसे–जैसे तन बढ़ता है, आश्रय भी विभक्त होय जाई। आश्रय....

सरकारी नौकरी का आश्रय, पाकर मन अतिशय हर्षाता।
अभिषंग आश्रय प्रिया का पाकर, जीवन आह्लादित होय जाई। आश्रय....

वक्त के साथ बदलते रहते, दुनिया के ये आश्रय सारे।
नहीं शांति उर को मिल पाती, फिर भी मोह न इन से जाई। आश्रय....

जड़ से जो निर्मित होता है, होता जड़ का ही दीवाना।
संकुल लिया राम जो आश्रय, परमानंद में गया समाई। आश्रय....

¼172½

नित्य संबंध एक रघुराई।
जब तक यह प्रतीत नहीं होता, कड़कड़ पीड़ा सही न जाई। नित्य....

बिना झूठ अरु बेईमानी के, भौतिक उन्नति नहीं हो सकती।
नोट प्रकाश जब देने लगते, रात न पड़ती कहीं देखाई। नित्य....

पापियों से संसार भरा है, भाग न कोई इनसे सकता।
अस्तु भागना उचित नहीं है, विष पीने में ही है भलाई। नित्य....

पर शिव जैसे कंठ पर रोकें, अंदर गया प्राण जाएंगे।
बिना राम का किए स्मरण, सरल नहीं है कठिन उपाई। नित्य....

यही समझ लो राम की इच्छा, दुष्ट को मौज मनाने दीजे।
समय का चक्र घूमता रहता, मरेंगे दुष्ट श्वान की नाई। नित्य....

धैर्य का साथ कभी न छोड़े, राम को कर दें जीवन अर्पित।
संकुल मन को शांति मिलेगी, संतों को यह नीति सुहाई। नित्य....

¼173½

आनन्द के सागर रघुराई।
हैं असीम कण-कण में व्यापक, जो जाना सो मुक्ति पाई। आनन्द....

हो कितना अंधकार पुराना, पर प्रकाश न देर लगाता।
पल भर में करता उजियाला, सब कुछ पड़ता साफ देखाई। आनन्द....

राम बोध जब हृदय में होता, स्वतः हो जाते बंधन ढीले।
आत्मज्ञान जब हो जाता है, माया सकती नहीं नचाई। आनन्द....

सीमित दायरा मन इंद्रियों का, बहुत दूर ये देख न पाती।
इसीलिए संशय के बादल, अक्सर देते सूर्य छिपाई। आनन्द....

कण-कण व्यापक राघवेंद्र हैं, प्रकृति में जब दिखने लगता।
अनुभूति होती परम तत्व की, जीवन में आती सच्चाई। आनन्द....

सत्य राम में भेद नहीं है, सत्य का वास हृदय जब होता।
संकुल प्रेम का झरना बहता, परमानंद न सो कहि जाई। आनन्द....

¼174½

चोट लगी आंखें भर आई।
कहूँ तो किससे कोई न अपना, मेरे तो केवल रघुराई। चोट....

पशु से बदतर आज मनुज है, न्याय नियम न इसको भाता।
रिश्वत दे दो अधिकारी को, मनचाहा लो काम कराई। चोट....

कीचड़ से कीचड़ मिलता है, पापी से मिलते हैं पापी।
न्याय की बात कहो अफसर से, नौकरी से देते हैं हटाई। चोट....

देह के सुख में लिपट गए हैं, संत्री मंत्री अरु अधिकारी।
अंधकार में मानवता है, जहां जो है रहा मौज मनाई। चोट....

भौतिक सुख में हो कर पागल, सूकर बन गया है अब मानव।
दोनों हाथ से लूट रहा है, क्या जाएगा दिया बिसराई। चोट....

रैन बसेरा है धरती पर, सत्कर्म साथ में केवल जाता।
संकुल इसे नहीं जो भूला, राम कृपा वह निश्चित पाई। चोट....

¼175½

मनुजता के सूरज रघुराई।
ऊंच-नीच सब भेद छोड़कर, प्रेम की धार बहाई। मनुजता.....

सत्ता सुख के लिए जगत में, रक्त की नदियां बहती।
मनुष्य मनुष्यता को खा करके, घूम रहा इतराई। मनुजता....

राजनीति में रिश्ते नाते, सब होते निरर्थक।
भाई- भाई का हत्या करके, पिता को कैद कराई। मनुजता....

असुर संस्कृति त्याग राम ने, पिता का मान बढ़ाया।
लात मार करके सत्ता पर, लिया मुनि भेष बनाई। मनुजता....

नारी की क्या मर्यादा है, सीता ने बतलाया।
भ्रात प्रेम का अनुपम आदर्श, लिया लक्ष्मण अपनाई। मनुजता....

त्याग उदाहरण जैसा भरत का, कहीं जगत न मिलता।
कर्तव्य से बड़ा कुछ भी नहीं है, संकुल राम सिखाई। मनुजता....

¼176½

आत्मा भारत के रघुराई।
दया क्षमा करूणा समता से, मानवता दीन्हा महकाई। आत्मा....
राष्ट्रप्रेम पर जीवन अर्पित, किया न मूल्यों से समझौता।
एक सूत्र में देश को बांधा, असुरों को दिया धूल चटाई। आत्मा....

कष्ट सहे यद्यपि जीवन में, स्वाभिमान पर कभी न छोड़ा।
प्रेम की भाषा दुष्ट न समझा, तब कर में लिया धनुष उठाई। आत्मा....

राम की तुलना नहीं हो सकती, पूर्ण ब्रह्म हैं वे परमेश्वर।
मानव देह में भू पर आये, संत जनों की किया भलाई। आत्मा....

आज जरूरत है भारत को, राम की शिक्षा करे अनुगमन।
राष्ट्र से बड़ा न कुछ हो सकता, नीति यही जाए अपनाई। आत्मा ....

मानवता भूषण रघुवर हैं, जाति धर्म सीमा से ऊपर।
संकुल संकीर्णता को तज दे,छिपी इसी में देश भलाई। आत्मा....

¼177½

दीनों के रघुनाथ सहाई।
सहज कृपा सेवक पर करते, कष्ट से लेते उसे बचाई। दीनों....

जाके हृदय भावना जैसी, उसको वैसे गले लगाते।
ज्ञानी के लिए हैं सर्व व्यापक, भक्त को पत्थर में दिखलाई। दीनों ....

अतिशय पावन नाम तुम्हारा, कहीं नहीं धरती पर मिलता।
एक बार जो राम सुमिर ले, चिर विश्राम गया सो पाई। दीनों ....

पाप का घड़ा न जब तक भरता, तब तक दंड न खल को देते।
जब सीमा के बाहर जाता, तब देते यम लोक पठाई। दीनों ....

जब जब पाप बढ़ा भारत में, विविध भेश में तब-तब आए।
अभय संत जन पा जाते हैं, दंड पापियों को मिल जाई। दीनों ....

कृपा सदा भक्तों के ऊपर, हे रघुनंदन करते रहना।
संकुल जो अनाथ दुनिया में, अवलम्बन देना रघुराई। दीनों ....

¼178½

राम नाम गुण बरनि न जाई।
एक बार जो राम पुकारा, परमानंद गया सो पाई। राम...

अवर्णनीय जो परम तत्व है, नेति- नेति जिसको श्रुति कहते।
राम में होती अनुभूति उसकी, वाणी सके न उसे बताई। राम....

राम मात्र स्मरण करने से, सहज हृदय आलोक आ जाता।
सत्यबोध हृदय में होता, जाते सारे ताप नसाई। राम....

सुख दु:ख की चिंता से मुक्ति, परवाह न अपमान मान की।
ज्ञान इंद्रिये भ्रामक लगता, तस्वीर पड़ती साफ देखाई। राम....

शाश्वत सत्य नित्य अविनाशी, राम ब्रह्म सच्चिदानंद हैं।
लिया आश्रय राम नाम जो, वहां तिमिर न सकता आई। राम....

हे अखिलेश्वर दया की दृष्टि, सदा भक्त पर करते रहना।
संकुल आचरण पावन जिनका, भव से देना पार लगाई। राम....

¼179½

प्रेम राम के सन्मुख लाता।
जिसने प्रेम किया दुनिया में, परपंच उसको नहीं सुहाता।
इस असार संसार के अंदर, प्रतिपल होता है परिवर्तन।
ठहर न सकता इनका चिंतन, जाता टूट इसलिए नाता। प्रेम ....

अस्तु प्रथम इस भौतिक जग में, प्रेम के पथ पर कदम बढ़ाएँ।
दीन दुखी जो पास में आएं, दु:ख जो उनके दूर कराता। प्रेम....

करुणा का जब भाव उमड़ता, तब विचार निर्मल हो जाते।
प्रेम धार जब बहने लगती, पर पीड़ा देखा न जाता। प्रेम ....

धवल हृदय जब हो जाता है, कण-कण में दिखते रघुराई।
मानवता की सेवा करना, तब जीवन का सार दिखाता। प्रेम....

व्रत पूजा साधना त्याग कर, जो लोगों की करते भलाई।
संकुल ऐसा मनुज राम को, प्राणों से भी प्रिय हो जाता। प्रेम ....

¼180½

दुष्ट संग अतिशय दुखदाई।
राम भजन ही मूसला जड़ है, दु:ख निवृत्ति की एक उपाई।
स्यात् नर्क में नहीं वह दु:ख है, दुष्टों के संग में जो होता।
अगर भुला दो राम का चिंतन, अंधकार जाएगा छाई। दुष्ट ....

मन इंद्रियों के अधीन है, अधिक दूर तक देख न पाता।
नेत्र को जो सुंदर लग जाता, पास चला वह उसके जाई। दुष्ट ....

असली रूप सामने आता, तब मन को है रोना आता।
प्राण से प्रिय जिसको समझा था, उसके अंदर छिपा कसाई। दुष्ट ....

अब पछताने से क्या होगा,गया समय वापस न आता।
जिनको प्रिय रघुनाथ नहीं हैं, कर्तव्य देते वे बिसराई। दुष्ट ....

कर्म का बंधन बड़ा प्रबल है, व्यर्थ दोष दूसरे का देना।
संकुल समझ राम की इच्छा, प्राणी इसमें तेरी भलाई। दुष्ट ....

¼181½

जय राम–राम रघुनाथ हरि।
श्री राम का अब कर ले स्मरण, मन बांध पाप की न गठरी। जय राम...

सत् का चिंतन न कभी किया, मिथ्या को अपना बना लिया।
पशु सा जीवन भर चरता रहा, पर भूख अभी तक नहीं मरी। जय राम....

हड्डी चाटने में श्वान मग्न, रक्त अपना पी हर्षाता है।
तू मौज मना रहा जो पाकर,वे हो सकती न कभी तेरी। जय राम....

जब तलक अविद्या का डेरा, संसार ये प्यारा लगता है।
आया क्यों था यह बोध नहीं, छाया केवल अब तक पकरी। जय राम....

सागर में लहरों का अस्तित्व, नकार न कोई सकता है।
पर नहीं ठहरती वे पल भर, नश्वरता से क्यों मोह करी। जय राम....

श्री राम के सिवा नहीं कोई, प्राणी का हो सकता अपना।
संकुल अब स्वयं को पहचानो, अन्यथा हो जाएगी देरी। जय राम....

¼182½

त्रिगुण मुक्त सदा रघुराई।
नहीं व्यक्त वाणी कर सकती, सोई जाना जेहि दिया जनाई। त्रिगुण ....

पूर्ण ब्रह्म रघुवर परमेश्वर, जगत संचालन सीता करती।
जब तक बुद्धि शुद्ध नहीं होती, आवरण ही पड़ता दिखलाई। त्रिगुण ....

सत्य राम संसार है मिथ्या, सहज समझ में कभी न आता।
सीमित ज्ञान है इंद्रियों का, देती प्राणी को भरमाई। त्रिगुण ....

जब तक ज्ञान नहीं उर आता, तब तक चिंतन ठहर न पाता।
दृढ़ निश्चय कर प्राणी चलता, मंजिल उसे अवश्य मिल जाई। त्रिगुण ....

अपने को कमजोर समझ कर, हीन भावना कभी न पाले।
समझ राम का अंश स्वयं को, दीजे जग का मोह मिटाई। त्रिगुण ....

जगत में रहिए जगत का न बन, मुँह कर्तव्य से कभी न मोड़ें।
संकुल रस्सी में न सर्प है, दीजे यह अज्ञान नसाई। त्रिगुण ....

¼183½

जिसने छोड़ दिया चतुराई।
सरल ह्रदय जो राम पुकारा, रघुपति उसके हुए सहाई। जिसने....

मन कर्म वचन कपट को तजकर, जो भी राम शरण में आता।
कभी अमंगल पास न आता, जीवन देते सुगम बनाई। जिसने....

जगत एषेणा नहीं सताती, हर स्थिति में वह मुस्काता।
जिस पर कृपा राम की होती, ताप न सकता उसे सताई। जिसने....

जन्म लिया जिसने दुनिया में, निश्चित पड़ेगा उसको जीना।
रामभरोसे जो रहता है, कभी न आती जटिलताई। जिसने....

राग द्वेष से ऊपर उठकर, प्रेम की भाषा वह अपनाता।
कौन मान अपमान किया है, बात न यह चिंतन में आई। जिसने....

पर पीड़ा अपनी लगती है, विश्वव को वह परिवार मानता।
संकुल जिसका ह्रदय निश्चल, वास वहाँ करते रघुराई। जिसने....

¼184½

राम भक्ति बिन मोह न जाई।
बिना मोह आवरण हटाए, चिर विश्राम न कोउ पाई। राम ....
सब व्याधियों का मोह मूल है, काम क्रोध मद को उपजाता।
दिशा का ही यदि भ्रम हो जाए, दोष न पड़ता कभी देखाई। राम ....

है अथाह संसार यह सागर, बैठे जंतु बहुत खाने को।
इसे लांघ उस पार यदि जाना, राम भजन बस एक उपाई। राम ....

सब रोगों की एक दवा है, राम से केवल नाता जोड़े।
जगत में केवल कर्तव्य करिए, प्रेम करें केवल रघुराई। राम ....

राम कृपा बिन बहुत कठिन है, मोह से मिल पाए छुटकारा।
मोह पर जिसने विजय प्राप्त की, मृत्यु के भय से मुक्ति पाई। राम ....

परमानंद राम अविनाशी, संशय मन में कभी न कीजे।
संकुल राम का स्मरण करिए, दु:ख दरिद्र पास न आई। राम ....

¼185½

कोमल अति स्वभाव रघुराई।
गये शरण प्रभु काहू न त्यागा, दोष दिये सारे बिसराई। कोमल ....

मन प्रपंच में क्यों उलझा है, अब भी तुझे होश नहीं आया।
बार-बार ठोकर खा गिरता, फिर भी जग से प्रीति लगाई। कोमल ....

समझ रहा तू जिन्हें हितैषी, सब अपने मतलब के साथी।
जैसे हित पूरा होता है, तात पुत्र प्रिया कोई न भाई। कोमल ....

कोई रिश्ता नहीं जगत का, अंत समय तक साथ निभाता।
जो कर्तव्य के पथ पर चलता, जाती उसकी हंसी उड़ाई। कोमल ....

उर रिक्तता नहीं भर सकती, चाहे कितने मीत बना लो।
मूल मंत्र है स्वार्थ जगत का, संतों ने यह बात बताई। कोमल ....

कलि का जीवन क्षणभंगुर है, मन अब माया को तज दीजे।
संकुल राम के सन्मुख आ जा , देंगे प्रभु सब क्लेश नसाई। कोमल ....

¼186½

प्राण प्रिये जिनको रघुराई।
लोभ के वशीभूत नहीं होते, तजते नहीं कभी सच्चाई। पाण....

राम चरण जब रति हो जाती, अंधकार तब पास न आता।
भेद बुद्धि तब मिट जाती है, कण-कण पड़ते राम देखाई। प्राण....

छोटा बड़ा न कर्म दिखाता, निष्ठा कर्तव्य से हो जाती।
जीविका के लिए कर्म जो करता, पक्षपात देता बिसराई। प्राण....

कर्म ही धर्म है यही समझ कर, कर्म को सच्चे मन से करता।
अहित किसी का कभी न करता, भाषा प्रेम सदा अपनाई। प्राण....

गृहस्थ आश्रम में रह करके, यद्यपि कुटुंब का पालन करता।
पर परिवार के लिए जगत में, रिश्वत से न महल बनाई। प्राण....

सत्य निष्ठ आचरण है जिसका, व्यर्थ न जीवन उसका जाता।
संकुल जब वह तन तजता है, राम में जाकर तब मिल जाई। प्राण....

¼187½

बिन संतोष शांति को पाई।
सीताराम हृदय में जपये मोह सकेगा नहीं सताई। बिन ....

मोह मूल है सभी दुखों का, काम क्रोध का बेग बढ़ाता।
अहंकार के पैदा होते, देती बुद्धि विवेक गंवाई। बिन ....

जगत संचालन माया करती, माया में जब मन रम जाता।
भौतिक सुख का संग्रह करना, लक्ष्य यही पड़ता दिखलाई। बिन ....

प्यास न बुझती भौतिक सुख से, भार और सिर पर बढ़ जाता।
नींद न आती कोमल सैया, सिर में पीड़ा रही सताई। बिन ....

मृगतृष्णा जैसा जीवन है, पार नहीं कोई जा सकता।
अगर कोई विश्राम चाहता, राम भजन बस एक उपाई। बिन ....

आये चाहे कोई परिस्थिति, केवल धैर्य हृदय में धरिये।
संकुल स्वप्न सदृश्य जगत है, हानि लाभ दीजे बिसराई। बिन ....

¼188½

भाव देखते हैं रघुराई।
जाति धर्म वैभव कुटुंब न, भाषा लिंग न सुंदरताई। भाव....

जो असीम वाणी से परे है, उसका वर्णन नहीं हो सकता।
भक्त भाव के वशीभूत हैं, जो खोजा उसने लिया पाई। भाव....

निर्गुण नाम रूप नहीं जिसका, समझ में ज्ञानी के बस आता।
झुलस रहे संसार ताप में, रामचरित केवल सुखदाई। भाव....

भाव पवित्र न तब तक होता, जब तक काम क्रोध का डेरा।
बिना बुद्धि का किये मार्जन, भाव पबित्र न सकते आई । भाव....

जिनका हृदय निर्मल होता राग द्वेष न उन्हें सताता।
ऐसे लोग राम को प्रिय हैं, करते मानवता की भलाई। भाव....

दुनिया की चिंता को तजकर, अपनी नजर कभी न गिरिये।
संकुल छिपा न कुछ रघुवर से, परमानंद अवश्य मिल जाई। भाव....

¼189½

सेव्य मेरे केवल रघुराई।
मान स्वयं का चाहे जाये, सेवक मान न जाने पाई। सेव्य ....

नहीं अनाथ का कोई जग में, देने वाला यहाँ सहारा।
राम कृपा जब कर देते हैं, नहीं पड़ती रिक्तता देखाई। सेव्य ....

हृदय आनंदित हो जाता है, पुलकित हो जाता तन सारा।
अश्रु प्रेम के बहने लगते, सो आनंद नहीं कहि जाई। सेव्य ....

अज्ञान में उलझी बुद्धि, बार-बार कर देती घायल।
बोझ न ढो पाता जीवन का, यदि रघुपति न होते सहाई। सेव्य ....

छोड़ दिया दुनिया की चिंता, अब कोई न जगत हमारा।
राम से नाता जिस दिन जोड़ा, सब दुःखों से मुक्ति पाई। सेव्य ....

रघुनंदन के सिवा न कोई, प्राणी का हो सकता अपना।
संकुल राम जपा जो उलटा, उज्जवल कीर्ति जगत में छाई। सेव्य ....

¼190½

अज शाश्वत नित्य रघुराई।
राम कृपा बिन बहुत कठिन है, माया से मुक्ति मिल जाई। अज....

माया सिये रघुनंदन की हैं, जगत सृजन अरू पालन करती।
चित्त ज्ञानियों का अपहरण कर, देती विषयों में उलझाई। अज....

माया के अधीन हुआ चित्त, भंवर सदृश्य घूमने लगता।
हो जाता फिर कठिन निकलना, मौत गले आ लेती लगाई। अज....

जिस पर कृपा राम की होती, माया असर दिखा न पाती।
कोई नहीं जगत आकर्षण, सत्य से सकता उसे डिगाई। अज....

सत्य प्रकाश हृदय जब आता, अज्ञानता से मुक्ति मिलती।
कर्तव्य कर्म जगत के करके, ऋण देता वह सभी चुकाई। अज....

पितृ ऋषि और देवताओं का, जब तक ऋण प्राणी पर रहता।
संकुल मुक्त नहीं हो सकता, नर तन धरि प्रभु गये सिखाई। अज....

¼191½

मेरे एक तुम्ही रघुराई।
मातु पिता गुरु बंधु तुम्ही हो, कोई न मेरा संगी सहाई। मेरे....

हे रघुनंदन जग प्रतिपालक, स्वीकार करिये विनय हमारी।
मेरे अवगुण को बिसार कर, दीजे भव से पार लगाई। मेरे....

हे करुणानिधि दीनबन्धु प्रभु, नहीं उदार तुम सा जग माहीं।
जो भी आया शरण तुम्हारे, परम शांति हृदय में पाई। मेरे....

दयासिंधु है नाम तुम्हारा,पतितों पर रही कृपा तुम्हारी।
ठुकरा दिया जिसे दुनिया ने, उसको अपना लिया बनाई। मेरे....

राम सा पावन नाम न जग में, सुमिरन से मिटता अंधियारा।
प्रभु अपराध क्षमा कर मेरे, अब दु:ख दीजे सभी नसाई। मेरे....

भक्तवत्सल करुणा के सागर, नाथ शरण में अपनी लीजे।
संकुल तुम बिन कोई नहीं है, जीव की जो कर सके भलाई। मेरे......

¼192½

कीजे अंत:करण सफाई।
बिना इंद्रियाँ किये नियंत्रण, रामचरित न कभी सुहाई। कीजे....

सुंदर रूप देखकर आँखें प्रज्वलित तृष्णा कर देती।
त्वचा व्यग्र स्पर्श को होती, रसना स्वाद हेतु अकुलाई। कीजे....

कर्म ज्ञान इंद्रियों का स्वामी, मन इनके अधीन में रहता।
नाना कर्म को अपनाकर भी, प्यास न इनकी सका बुझाई। कीजे....

शुद्ध बुद्धि के द्वारा मन पर, निश्चित अंकुश लग सकता है।
मन जिसके अधीन हो गया, इंद्रियां सकती नहीं नचाई। कीजे....

अंत:करण जो शुद्ध कर लिया, राम में उसका चित्त रम जाता।
ब्रह्म ज्ञान जब हो जाता है, मिथ्या पड़ता जगत देखाई। कीजे....

मन मतंग को शुद्ध बुद्धि से, खींच राम की ओर में लायें।
संकुल परमानंद मिलेगा, अतुलनीय सो न कहि जाई। कीजे....

¼193½

सब तजि गहो चरण रघुराई।
मूल मंत्र है यही शांति का, संत शास्त्र यह दवा बताई। सब....

जगत में जहं तक नेह सगाई, सब अपने मतलब के साथी।
मतलब पूर्ण कर लिया जैसे, देते असली रूप देखाई। सब....

देह रिक्तता को भरने को, कहते जिसे भुवन में प्यारी।
उसके मन में क्या बसता है, बात न उसने कभी बताई। सब....

है अजीब दुनिया का मेला, यहाँ सभी करते खरीददारी।
कोई किसी के लिए न जीता, मरते देते चिन्ह मिटाई। सब....

पल-पल होते परिवर्तन में, रिश्ते नाते सब बह जाते।
हो जाती असहाय देह जब, डांट बिना जल नहीं पिलाई। सब....

काम क्रोध मद मोह के बस में, रूप वास्तविक नहीं दिखाता।
संकुल राम शरण जो आया, चिंता उसको नहीं सताई। सब....

¼194½

राम कृपा अति सुगम उपाई।
कर्तव्य कर्म करें निष्ठा से, परितोषिक की चाह मिटाई। राम....

जैसे भी हों जिस स्थिति में, मन में कुंठा कभी न पालें।
समझ राम की इच्छा मन में, विचलित हों न कभी घबराई। राम....

कोई कर्म बड़ा न छोटा, ध्यान रहे सदा नैतिकता पर।
नैतिक मूल्य जो अपनाते हैं, पड़ते सदा प्रसन्न देखाई। राम....

कर्म का फल निश्चित मिलता है, देर भले चाहे हो जाये।
सद्‌गुण परिणाम सदा सुखद है, लीजे नीति यही अपनाई। राम....

कर्तव्य से मुंह फेर जगत में, कभी न आडंबर अपनायें।
निष्ठा से कर्तव्य कीजिये, उंगली सकता कौन उठाई। राम....

राम के सन्मुख वही जा सकता, जिसके मन में पाप नहीं है।
संकुल जो बबूल बोया है,सका आम फल कभी न खाई। राम....

¼195½

करहिं अनुग्रह जब रघुराई।
अंत अविद्या तब होता है, तिमिर पास न सकता आई। करहिं....

माया का संसार निराला, सहज समझ में कभी न आता।
धुआं पकड़ में कभी न आता, बस आँखों को रहा देखाई। करहिं....

निर्मित पांच तत्व से यह तन, चिंतन सदा देह का करता।
चेतन भूल स्वयं को जाता, देह को अपना लिया बनाई। करहिं....

जो आधीन है परिवर्तन के, कभी नहीं अपना हो सकता।
जाते बदल इसलिए नाते, दु:खमय यह जीवन होय जाई। करहिं....

जिसे ज्ञान हो गया स्वयं का, फिर वह देह न खुद को माना।
आत्मप्रकाश हृदय जब हो गया ,तब संसार नहीं दु:खदाई। करहिं....

सुख दु:ख से भी महत्वपूर्ण है, परोपकार जीवन में करिये।
संकुल जब तक रहें धरा पर, करें किसी की नहीं बुराई। करहिं....

¼196½

राम भजन जब मन रम जाई।
मकड़जाल सम रिश्ते नाते, सकते तब न कभी उलझाई।

मन चंचल विषय सुख अभ्यासी, सहज नियंत्रण में न आता।
करता रहा सदा मनमानी, नीति की बात इसे न सुहाई। राम....

खेल समय का रहा जगत में, जिसने मूल्य समय का जाना।
सदुपयोग उसने किया जीवन, कोसा समय न फिर पछताई। राम....

प्रपंच युक्त जगत में रिश्ते, नाते सब मतलब के साथी।
अंत में काम न कोई आता, फिर क्यों रहा पाप है बोई। राम....

जिनको प्रिय रघुनाथ नहीं हैं, नारि मित्र अथवा हो कोई।
हित अपना पूरा कर सारे, घाव पर देते नमक लगाई। राम....

पार न पा सकता दुनिया का, प्राणी भटक कर थक जायेगा।
संकुल रामचरण जो पकड़ा, दु:ख न उसको सका सताई। राम....

¼197½

कलियुग सके पास न आई।
राम नाम जे जपिंह निरंतर, कलि सकता न उन्हें सताई। कलियुग...

चार में केवल एक पैर ही, शेष रह गया आज धर्म का।
भेष बनाकर के साधु का, पापी रहे हैं मौज मनाई। कलियुग....

आचरण हीन अफसर कर्मचारी, रुधिर पी रहे हैं जनता का।
पति को धोखा देकर नारी, प्रेमी को रही गले लगाई। कलियुग....

धर्म परायण नारि त्याग कर, पति वेश्या से नेह लगाये।
वैभव शीघ्र नाम आ जाये, पुत्र पिता विष रहा पिलाई। कलियुग....

ऐसी लगी है अब आश्रम में, कार में घूम रहे सन्यासी।
अनुजा तनुजा नहीं देखते, अविवेक ग्रस्त युवा समुदाई। कलियुग....

कैसे भी धन का हो संग्रह, निर्लज्ज लूट रहे हैं सारे।
संकुल ऐसे विषम समय में, को रघुपति बिन मोर सहाई। कलियुग....

¼198½

अस वर देउ मोहि रघुराई।
देह कहीं हो पर मानस में, श्यामल मूरति पड़े देखाई। अस....

राजीव नयन धरे धनु सायक, भक्तवत्सल करुणा के सागर।
जिसने भी देखी यह मूरति, सुध बुध दी अपनी बिसराई। अस....

भक्ति पावनी देकर अपनी, मन के सारे ताप मिटा दो।
असहनीय वेदना हो रही, तुम से छिपा नहीं सुरसाईं। अस....

जाने कब से भटक रहा हूँ, मगर संभल न अब तक पाया।
दया करें मुझ पर रघुनंदन,अब दीजे अज्ञान नसाई। अस....

बिना तुम्हारे कृपा के राघव, छूट न सकती दुनियादारी।
जब तक मन उलझा दुनिया में, मुश्किल बहुत शांति मिल जाई। अस....

राम तुम्हारे सिवा जगत में, कोई नहीं हितू हो सकता।
संकुल राघव मोह का पर्दा, कृपा करें दीजिये हटाई। अस....

¼199½

को श्री राम सरिस हितकारी।
परिहर आस भरोस भजहिं जे, मिटहि अमंगल होय सुखारी।

सुर नर मुनि संसार के नाते, सब ही अपना स्वार्थ साधे।
नहीं वेदना कोई समझता, राम के सिवा कौन उपकारी। को....

नहीं प्यास हृदय की मिटती, चाहे करिये कोटि उपाई।
अंत में तन मन थक जाएगा, सुनेगा न कोई बात तुम्हारी। को....

जगत के सच को जो पहचाना, नहीं समय को व्यर्थ गंवाया।
कर्तव्य कर्म किए जीवन में, नहीं किसी को किया दुखारी। को....

राग द्वेष को त्याग हृदय से, दीन दुखी की सेवा कीन्हा।
जिस स्थिति में राघव रखा, हर स्थिति उसने स्वीकारी। को....

मन में चिंतन जिनके राम का, बांध न सकता उनको बंधन।
संकुल मानव जन्म सार्थक, राम में जब रति होय हमारी। को....

¼200½

रघुपति नाम जपहु मन लाई।
चहुँ जुग जहुँ श्रुति नाम की महिमा, कलि विध्वंस अमोघ उपाई।

राम से अधिक नाम ने जग में, भक्तजनों के कष्ट मिटाया।
श्री राम राम राम राम जय जय, जो सुमिरा गया देह भुलाई। रघुपति....

हृदय को पावन कर देती है, राम नाम की अद्‌भुत शक्ति।
जड़ से नाश द्वैत का होता, भेद बुद्धि देती बिसराई। रघुपति....

ज्ञान हृदय में हो जाता है, मिट जाता सारा अंधियारा।
नहीं पराया अपना दिखता, सियाराम मय जगत देखाई। रघुपति....

सकल अमंगल मूल विनाशक, राम नाम ऋषियों ने गाया।
राम नाम का चषक पिया जो, विजय मृत्यु पर उसने पाई। रघुपति....

जगत वांछा नहीं सताती, राम नाम का जो दीवाना।
संकुल जिसने राम को जाना, राम में फिर वह गया समाई। रघुपति....

¼201½

राम के सिवा न कोई मेरा हितकारी।
झूठे सारे जगत रिश्ते, बंधु भ्रात नारी।

राम सा दयालु नहीं, मुझ सा खल न कामी।
सदा दया दृष्टि रखी, जाऊं मैं बलिहारी। राम....

सुख को खोजा जगत में, बहुत भटक करके।
प्यास और बढ़ती गई, भूल हुई भारी। राम....

आदमी बड़ा विचित्र, समझ में न आया।
आदमी से आस करना, सदा कष्टकारी। राम....

मन को परम शांति मिली, नींद चैन आई।
जबसे राम शरण आया, छोड़ दुनियादारी। राम....

शाश्वत नाता राम से, जग से न हमारा।
संकुल जिस दिन जान लिया, चाह मिटी सारी। राम....

¼202½

सुखधाम राम जय रघुराई।
हे पूर्णब्रह्म हे परमेश्वर, अज्ञान दो मेरा नसाई।

संसार से हो करके निराश, अब शरण तुम्हारे आया हूँ।
संताप मिटा दीजे मन के, दु:ख असहनीय न सहि जाई। सुखधाम....

सर्वज्ञ आप से छिपा है क्या, मुझ पतित पर अब दया करें।
विचलित न हो प्रभु मेरा मन, दो धैर्य हृदय को बंधाई। सुखधाम....

होती है घुटन जो दुर्गंध से, शब्दों से कहना मुश्किल है।
दासता की पीड़ा असहनीय, विश्वास को देती चरमराई। सुखधाम....

पशु से बदतर मेरे जीवन को, हे राघवेंद्र अब संबल दो।
ठुकरा दिया सारी दुनिया ने, लो नाथ मुझे अब अपनाई। सुखधाम....

संसार में जिसका कोई नहीं, उनके बस तुम्हीं सहारे हो।
संकुल का अब निस्तार करो, संसार बहुत है दु:खदाई। सुखधाम....

¼203½

राम सम नहीं कोउ कृपानिधान।
शरणागत को कभी न त्यागा, हित अनहित अनुमान।

जन के दोष भुला देते हैं, अति कोमल रघुनाथ।
मन मूरख ऐसे रघुवर को, भज तज दे अभिमान। राम....

जैसे पिता पुत्र के अवगुण देता सदा बिसार।
जगत पिता श्री रामचंद्र है, मन अब ले पहचान। राम....

सहज कृपा भक्तों पर करते, दीनदयाल हरि।
ऐसे प्रभु को भज संशय तज, अवश्य होगा कल्यान। राम....

इस असार संसार में नहीं कुछ, जो दे चिर विश्राम।
आस कीजये सिर्फ राम से, सार यही है ज्ञान। राम....

कर्तव्य कर्म करें निष्ठा से, रहें पाप से दूर।
संकुल निश्चित शांति मिलेगी, मन न हो परेशान। राम....

¼204½

बसते जिनके उर रघुराई।
वर्त्म से विचलित कभी न होते, करते हर प्राणी की भलाई।

भेद नहीं कथनी करनी में, प्रेम की धार हृदय में बहती।
संघर्ष से न कभी घबड़ाते, आलस्य पास न उनके आई। बसते....

कोई शत्रु मित्र नहीं होता, सबसे होता प्रेम का नाता।
चाहे जो स्थिति आ जाये, करते किसी की नहीं बुराई। बसते....

स्वर्ग नर्क का मोह छोड़कर, इस भूतल को स्वर्ग बनाते।
पर पीड़ा निज पीड़ा लगती, होती हृदय में कोमलताई। बसते....

दमन वासना न कर पाते, तो फिर दिशा उसे दे देते।
ऐसा कर्म कभी न करते, अहित दूसरे का होय जाई। बसते....

पूर्ण नहीं कोई धरती पर, श्रेष्ठ वही सत्कर्म जो करता।
संकुल भाव कीजिए पावन, जीवन मंगलमय होय जाई। बसते....

¼205½

रघुपति सिवा मीत नहीं कोई।
प्रेम डोर जो राम से बाँधा, उर से दिया विषमता खोई

नेति-नेति जिसको श्रुति कहती, निर्गुण नाम रहित अविनाशी।
जेहि जाने प्रपंच मिट जाता, सोई सच्चिदानंद रघुराई। रघुपति....

अकथ अलौकिक अविगत राघव, पूर्ण ब्रह्म परमारथ रूपा।
आगम निगम पार नहीं पावें, अलख निरंजन मुनि कहें सोई। रघुपति....

दीनबंधु करुणा के सागर, शिव बिरंचि जेहि शीश नवावे।
जासु नाम सुमिरन करने से, आवे शांति राम प्रभु सोई। रघुपति....

शब्द -शब्द में समा रहा है, प्रकृति गीत गा रही जिसकी।
वही राम जिसके चिंतन से, मन की जाए मलिनता खोई। रघुपति....

प्रेम के योग्य जगत में कुछ नहीं ,कर प्रयोग इस सत्य को माने।
संकुल ज्ञान का सार यही है, बिन हरि भजे मुक्ति न होई। रघुपति....

¼206½

सुंदरता सागर रघुराई।
परम सौंदर्य जिसने जाना, जग सुंदरता गई हेराई।

अवध के जिस पथ पर प्रभु बिचरहिं, प्रमुदित होय देख पुरवासी।
मोहित करे राम की यह छवि, जो देखे सोइ करे बड़ाई। सुंदरता....

विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी, आये अवध राम को लेने।
रामचंद्र की देखकर मूरति, दीन्ही अपनी सुध बिसराई। सुंदरता....

राम को देखा जब विदेह ने, ज्ञान काम न उनके आया।
एकटक रहे देखते प्रभु को, चाह कर दृष्टि न सके हटाई। सुंदरता....

जनकपुरी लगे राम घूमने, युवती राम निरखने लागी।
भई मगन देखत मुख शोभा, लगी सराहन सुंदरताई। सुंदरता....

पुष्प वाटिका गये राम जब, सखी एक सीता पर आई।
जिनकी छवि सब लोग बरनि रहे, देख नयन लो प्यास मिटाई। सुंदरता....

सुन सिया मन उत्कंठा जागी, चली सखी सो आगे करके।
संकुल देखा जब रघुपति को, सकुच सिये लिया नयन झुकाई। सुंदरता....

¼207½

सुंदरता सागर रघुराई।
परम सौंदर्य जिसने जाना, जग सुंदरता गई हेराई।

सिया स्वयंवर राम जब पहुंचे, प्रमुदित भये देख पुरवासी।
जिनकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति परी उन्हें देखाई। सुंदरता....

पिता बचन तजि राज चले बन, संग में लखन और थी सीता।
जहि पुर के समीप प्रभु पहुंचे, देखन रूप भीड़ होय जाई। सुंदरता....

सूपनखा जब देखा राघव, मोहित भई लाज गई भूली।
खर दूषण देखा रघुपति को, कुछ पल दिया बैर बिसराई। सुंदरता....

कोल किरात भील बनवासी, जिसने भी देखा प्रभु सूरत।
संकुल रोक न खुद को पाया, राम की थी अस सुंदरताई। सुंदरता....

¼208½

भक्त भूलते नहीं रघुराई।
एक बार जो शरण आ गया, कृपासिंधु नहीं उसे बिसराई।

जिमि अबोध बालक के ऊपर, सदा दृष्टि रखती महतारी।
बालक आग पकड़ना चाहे, माता देती अग्नि हटाई। भक्त....

यद्यपि रोता वह अबोध है, पर माँ इस पर ध्यान न देती।
रोते-रोते जब सो जाता, तब माता देती मुस्काई। भक्त....

सरल हृदय जिन्हें राम भरोसा, अनासक्त जग में कर्म करते।
ऐसे भक्त अबोध ज्यों बालक, रक्षा स्वयं करें हरि आई। भक्त....

होकर युवा जिस तरह बालक, याद कभी करता नहीं माता।
पर माँ ध्यान भले कम करती, मगर प्रेम न कभी घटाई। भक्त....

इसी तरह से रामचंद्र भी, कभी भूलते नहीं भक्त को।
संकुल जननी इसीलिए तो, हरि को कहें संत समुदाई। भक्त....

¼209½

दीजे दरस मोहि रघुराई।
जन्म –जन्म की प्यासी अखियाँ, रघुपति दीजे प्यास मिटाई।

खद्योत जैसे जगत सौंदर्य, कुछ पल में आभा खो देते।
स्थिर मन को विचलित करके, देते हैं फिर आग लगाई। दीजे....

अदला–बदली मन करता है, स्यात् शांति उसको मिल जाए।
मन मूरख यह नहीं जानता, रस्सी में रहा सर्प देखाई। दीजे....

मिथ्या जग के आकर्षण हैं, केवल माया में उलझाते।
कुछ पल का इनका सुख होता, फिर देते हैं प्यास बढ़ाई। दीजे....

कितना भी कोई प्रयास करे, शांति जगत में नहीं मिल सकती।
प्रकृति जगत संचालन करती, बरबस देती मन उलझाई। दीजे....

हे सर्वज्ञ जगत के स्वामी, मेरे अवगुण को बिसार दो।
संकुल कृपा कीजिए राघव, नयनों की दो प्यास बुझाई। दीजे....

¼210½

सीताराम चरित्र सुखदाई।
नहीं अस कोउ जन्मा धरती पर, त्याग की दी इतनी ऊँचाई।

सत्ता सुख के लिए जगत में, रक्त की बहती रहती नदियाँ।
भ्रात के लिए त्याग कर सत्ता, चले राम मुनि भेष बनाई। सीताराम....

राज महल में रहने वाली, जनक दुलारी अति सुकमारी।
पति के संग चली कानन में, मन में तनिक नहीं घबराई। सीताराम....

निज दुःख की परवाह नहीं की, सिया राम के लिए समर्पित।
राम को कष्ट कभी न पहुँचे, करती हरदम यही उपाई। सीताराम....

लंका लेकर गया दसानन, दिये अनेकों उसने प्रलोभन।
नारी की क्या मर्यादा है, जग को दीन्ही राह देखाई। सीताराम ....

सिया के बिना बिकल भये राघव, खग पादप से पूछन लागे।
संकुल देख चंद्र द्वितीय का, सिये दृष्टि एक नैन भरि आई। सीताराम....

¼211½

देना मुझे न राम भुलाई।
तुम बिन मेरा कौन जगत में, जो मन को दे धैर्य बंधाई।

बहुत कठिन है कर्तव्य पालन, कोई साथ नहीं देता है।
भ्रात भार्या या हो कोई, दु:ख में देते सब ठुकराई। देना....

राग द्वेष से ऊपर उठकर, सत्कर्म को जीवन में करना।
असहनीय जो पीड़ा होती, राम के सिवा समझ को पाई। देना....

मिथ्या प्रीति जगत में देखी, सब अपने मतलब के साथी।
कोई साथ नहीं देता है, धर्म निभाना अति कठिनाई। देना....

मातु पिता की सेवा करके, उनसे मुक्त न जो हो पाया।
मरने पर चाहे लाख तीर्थ करे, करते क्षमा नहीं रघुराई। देना....

बाह्य दिखावा आज धर्म है, बहुत कठिन हो गया है जीवन।
संकुल ऐसे विषम समय में, रघुनंदन तुम्हीं मेरे सहाई। देना....

¼212½

भज मन राम त्याग कुटिलाई।
शरण गए प्रभु अभय करेंगे, कृपासिन्धु दयालु रघुराई। भज ....

प्रतिपल काया जर्जर हो रही, मगर मोह यह बढ़ता जाता।
जिनके लिए पाप तू करता, अंत में देंगे वे ठुकराई। भज ....

भौतिक जगत में जितने नाते, सबका केंद्र बिंदु है स्वार्थ।
जिनके प्रेम में भूला खुद को, अंत में देंगे वे बिसराई। भज ....

पांच तत्व से निर्मित यह तन,पता नहीं कब धोखा दे दे।
इसको अपना मान के मूरख, पाप से वैभव रहा कमाई। भज ....

साथ तुम्हारे क्या जाएगा, मन तू कभी न सोचा इसको।
व्यर्थ हो गया सारा जीवन, अब क्यों आँसू रहा बहाई। भज ....

कल को भूल आज से भी यदि, राम में रति हो जाय तुम्हारी।
संकुल मन दु:ख मिट जाएगा, रघुपति लेंगे हृदय लगाई। भज ....

¼213½

दया करो मुझ पर रघुराई।
किसको अपनी व्यथा सुनाउं, दिया जगत ने मूर्ख बनाई। दया ....

जब जब मन आहत होता है, अंधकार आगे छा जाता।
इस स्थिति में हे रघुनंदन, तुम ही हो बस एक सहाई। दया ....

दु:ख की होती कई श्रेणियाँ, मगर दुष्ट के साथ में रहना।
बुद्धि भी विचलित हो जाती है, पीड़ा कही नहीं वह जाई। दया ....

तुम से छिपा नहीं रघुनंदन, जान रहे हो दर्द हमारा।
चाहे जिस स्थिति में रखो, दो सहने की शक्ति बढ़ाई। दया ....

बार बार ठोकर खाता हूँ, पामर अधम नीच अज्ञानी।
बिनती यही मेरी रघुनंदन, अब दीजे अज्ञान मिटाई। दया ....

बड़ी स्वार्थी यह दुनिया है, नहीं दर्द दूसरे का जाना।
संकुल रघुपति ज्ञान दीजिए, दो माया आवरण हटाई। दया ....

¼214½

चल मन अवध जहां रघुराई।
पावन धार बहत सरजू की, कर ले अपनी साफ-सफाई।

ऊंच-नीच का भेद नहीं है, कोई जाति न पंथ यहाँ है।
बहती सदा प्रेम की धारा, ऐसी कहीं न पावन ताई। चल....

मनुज -मनुज में भेद नहीं है, धर्म एक केवल मानवता।
नहीं धरा पर कोई जगह है, परहित धर्म जहाँ कहा जाई। चल....

स्त्री पुरुष में भेद नहीं है, नहीं किसी पर कोई बंधन।
अंतरात्मा को पहचानों, संत रहे यह मंत्र सिखाई। चल....

जन सेवा ही राम की सेवा, यह संदेश भुवन को जाता।
दु:खी न कोई हो पृथ्वी पर, धरा अयोध्या तब होय जाई। चल....

मन मूरख न भटक जगत में, बस अपने को पावन करले।
संकुल कण-कण राम देखेंगे, जहाँ पर वहीं अवध दिखलाई। चल....

¼215½

जब मन राम रंग–रंग जाई।
हृदय मलिनता तब मिट जाती, जीवन भार न सके सताई।

राजीव नयन धरे धनु सायक, सीता लखन सहित रघुनायक।
जो यह मूरति उर में आनी, उज्जवल कीर्ति जगत में छाई। जब....

राम रंग जिस पर चढ़ जाता, दु:ख फिर उसके पास न आता।
चाहे जिस स्थिति में रहता, हर स्थिति में बस मुस्काई। जब....

चार दिनों का यह जीवन है, पता नहीं कब धोखा दे दे।
राम में जिसका रंगा हुआ मन,कर्तव्य कर्म करे हरषाई। जब....

राम कथा जिनको प्रिय लगती, दया सभी जीवों पर करते।
अपना कोई नहीं पराया, रघुनंदन में जगत समाई। जब....

राम रंग सा रंग नहीं है, राम सा चरित्र जगत में नाहीं।
संकुल मानव जन्म सार्थक, राम भजन करें तजि कुटिलाई। जब.....

¼216½

मन यदि तू चाहता भलाई।
मत तृष्णा में उलझ बावरे, गह श्री राम चरण सुखदाई।

जिनको अपना मान रहा है, अपना कभी नहीं हो सकते।
आसक्ति से संतोष न आता, जीवन झुलस खत्म होय जाई। मन....

प्रकृति रूप बदलती रहती, प्रति पल होता है परिवर्तन।
जब तक जुड़ा रहेगा इससे, सत् समझ न सकता आई। मन....

सीमित ज्ञान है इंद्रियों का, इनकी प्यास कभी नहीं मिटती।
ज्यों–ज्यों सलिल सरोवर भरता, देता अंबुज शीस उठाई। मन....

चलते चलते थक जाएगा, अगर स्वयं को नहीं पहचाना।
क्यों आया था प्रश्न यक्ष यह, बिन हल किए समय दिया बिताई। मन....

यदि मन शांति चाहिए तुझको, तो अज्ञान त्यागना होगा।
संकुल जगत की चाह छोड़ कर, रघुपति भजन अचूक दवाई। मन....

¼217½

मैं सेवक प्रभु स्वामि हमारे।
सीतापति अब दया कीजिए, हार कर आया शरण तुम्हारे।

कहूं तो किससे नहीं जगत में, जो समझेगा व्यथा हमारी।
समझ न पाया इस दुनिया को, दिखे मतलबी रिश्ते सारे। मैं....

जान रहा हूं दुःख का कारण, फिर भी मोह छोड़ नहीं पाया।
बहुत कठिन है भेद समझना, मीठे कौन-कौन हैं खारे। मैं....

नेत्र उलझ आवरण में जाते, जगत कल्पना करने लगते।
पर यथार्थ है यही भुवन का, यहाँ व्यर्थ हैं सभी सहारे। मैं....

मेरे एक तुम्हीं रघुराई, नाथ लगा दीजिए किनारे।
कृपासिन्धु अब दया कीजिए, दो बिसार मेरे अवगुण सारे। मैं....

एक बार जो नाम सुमिर ले, पतन नहीं उसका हो सकता।
संकुल भक्ति दीजिए राघव,भव बंधन से अब निस्तारे। मैं....

¼218½

राम सम नहीं कोउ कृपानिधान।
जग की चाह छोड़ दे मनुवा, कर ले प्रभु का ध्यान।

दीनदयाल भक्तवत्सल हैं, अति कोमल रघुनाथ।
शत्रु को मुक्त कर दिया भव से, राम सा प्रभु न आन। राम....

भक्त प्राण है भक्त के कारण, लेते हैं अवतार।
सदा भक्त की रक्षा करते, कहता जग भगवान। राम....

हृदय से कपट त्याग दिया जिसने, किया राम से आस।
उसका पतन न हुआ जगत में, कहते संत पुरान। राम....

राम की व्यापकता दुनिया में, संत कबीर ने गाया।
मीरा तुलसी सूरदास ने, किया हरि का गुणगान। राम....

राम में जिनका चित् लग जाता, बहती प्रेम की धार।
संकुल जीवन प्रमुदित होता, हो जाता कल्यान। राम....

¼219½

मम दु:ख दूर करो रघुराई।
सीतापति बिन कृपा तुम्हारे, नहीं विश्राम जगत कोउ पाई।

मन चंचल विषय सुख अभ्यासी, बार–बार यह रहा नाचता।
जाने कितने लगे हैं ठोकर, फिर भी चाह न इसकी जाई। मम....

ज्ञान ठहरता नहीं हृदय में, पशु सदृश खो रहा हूँ जीवन।
दया के सागर दया कीजिए, अघ दीजिए नाथ बिसराई। मम....

ठुकरा दिया जिसे दुनिया ने, रघुनंदन उसे गले लगाया।
जाति धर्म नहीं कभी देखते, निर्बल के हैं राम सहाई। मम....

यह दुनिया मतलब की साथी, कष्ट में काम न कोई आता।
कृपा कीजिए हे रघुनंदन, जग में लीजे लाज बचाई। मम....

निश्चल हृदय शरण जो आया, त्रिविध ताप से हुआ छुटकारा।
संकुल रघुपति शरण तुम्हारे, सेवक लीजे नाथ बनाई। मम....

¼220½

रघुपति सिवा किसे गोहराई।
कोई साथ न दु:ख में देता, यही जगत की है सच्चाई।

राम रमापति रघुकुल नायक, सुन लीजे प्रभु विनय हमारी।
नाथ जगत में लाज को रखो, दया दृष्टि कीजे रघुराई। रघुपति....

मेरे एक तुम्हीं हो स्वामी, जाऊं कहाँ तजि चरण तुम्हारे।
जैसा भी हूं कृपा कीजिए,नैया दो उस पार लगाई। रघुपति....

ज्यों अबोध बालक हो व्याकुल, सहज पुकार लगाता माता।
वैसे याद मुझे अब आए, जब दुनिया ने दिया ठुकराई। रघुपति....

रूप वास्तविक नहीं दिखाता, बड़ी निराली है यह दुनिया।
सब को अपना हित प्यारा है, जहं तक भुवन स्नेह सगाई। रघुपति....

करो अनुग्रह अब सीतापति, नहीं पतन हो जगत हमारा।
संकुल कष्ट हरो रघुनंदन, विरह वेदना न सहि जाई। रघुपति....

¼221½

भ्रम तजि भजो राम रघुराई।
प्रनतपाल करुणा सुख सागर, सुमिरत नाम अमंगल जाई।

तब तक बसत हिय खल नाना, जब तक प्रेम राम से नाहीं।
नेह राम जेहि हृदय समाया, तहाँ तिमिर न सकता आई। भ्रम....

नहीं सफलता मिल सकती है, जिनके मन में संशय रहता।
बिना राम से नेह लगाए, नहीं आत्मबल सकता आई। भ्रम....

राम का चिंतन अगर हृदय में, बुद्धि नहीं विचलित हो सकती।
ज्ञान इंद्रियों का सीमित है, माया में देती हैं फंसाई। भ्रम....

कर्तव्य कर्म करें जीवन में, नहीं किसी से आशा रखें।
अगर चाहते सुख से जीना, तो दीजे आसक्ति मिटाई। भ्रम....

अपने को कमजोर समझ कर, कभी स्वयं को दंड न दीजे।
आस्था राम में संकुल दृढ़ रहे, जीवन मंगल मय होय जाई। भ्रम....

¼222½

नाथ चरण से न दुत्कारे।
टूट गई दुनिया से आशा, अब केवल हो तुम्हीं सहारे।

नहीं दयालु तुम सा भूतल पर, जो दीनों को गले लगाए।
भूल से राम नाम जो ले ले, मिट जाते उसके दुःख सारे। नाथ....

अति उदार रघुनाथ सुभाउ, सहज कृपा भक्तों पर करते।
निश्छल हृदय राम जो भजते, रघुनंदन को अतिशय प्यारे। नाथ....

मैं मेरा में उलझा यह मन, जाने कितने कष्ट उठाए।
अब हूँ शरण तुम्हारे राघव, अपराध क्षमा कीजिए सारे। नाथ....

नहीं निराश हुआ दुनिया में, जो भी द्वार तुम्हारे आया।
दीनदयाल दया के सागर, महिमा अमित शास्त्र कहें सारे। नाथ....

इस असार संसार में केवल, अगर सार तो राम नाम है।
संकुल के बस एक तुम्हीं हो, जीवन बंधन से निस्तारे। नाथ....

¼223½

हरो अविद्या रघुकुल नायक।
बार–बार है विनय हमारी, जीवन करो नाथ सुखदायक।

बिना तुम्हारी कृपा के राघव, काम क्रोध मद छूट न सकता।
हृदय शांति कैसे आ सकती, जब तक अंदर छिपी है पावक। हरो....

सूकर सम भर रहा उदर हूँ, अधम नीच हूँ मैं अज्ञानी।
करें अनुग्रह अब सीतापति,दया दृष्टि कीजे रघुनायक। हरो....

श्रवण सुजस सुनि शरण में आयों, दूर न अब चरणों से कीजे।
दे दो दरस नाथ अखियों को, प्रभु समर्थ दुःख द्वंद्व विनाशक। हरो....

रूप मनोहर मुनि मन मोहे, कैसे स्तुति करों तुम्हारी।
कृपा की दृष्टि कीजिए रघुवर, जन दुःख दूर करो जग पालक। हरो...

मुझ अनाथ पर हे सीतापति, सदा बनी रहे कृपा तुम्हारी।
संकुल शरण तुम्हारे रघुपति, रक्षा करें जगत के नायक। हरो....

¼224½

रघुनंदन अब शरण तुम्हारी।
मुक्त कीजिए भव बंधन से, विनती सुन लो नाथ हमारी।

तुम्हें भूल कर इस दुनिया से, मूरख मन ने नाता जोड़ा।
जाने कितने घाव लगे पर, बुद्धि सकी न मोह बिसारी। रघुनंदन....

जिनके मोह में कौड़ी जोड़ा, भटक–भटक खत्म की जिंदगानी।
उनके लिए रहा मात्र खिलौना, नचा रहे सब बने मदारी। रघुनंदन....

बड़ी स्वार्थी यह दुनिया है, सहज समझ में कभी न आता।
कोई नहीं जगत में अपना, कहूँ जिसे अपनी लाचारी। रघुनंदन....

असली रूप छिपा रहता है, आंखें धोखा अक्सर खाती।
मिथ्या हैं दुनिया के नाते, भूल हो गई मुझसे भारी। रघुनंदन....

रघुपति तुम्हें समर्पित जीवन, पार लगा दो जग से नैया।
संकुल चरण पड़ा है राघव, विपदा हरण कीजिए सारी। रघुनंदन....

¼225½

कलि मल हरन चरित्र रघुराई।
जे यह सुनहिं गुनहिं मन माहीं, स्वस्थ बुद्धि निश्चित होय जाई।

स्वस्थ बुद्धि जब तक नहीं होती, जगत प्रपंच छूट नहीं सकता।
जब तक मन प्रपंच में उलझा, अवगुण पड़ता नहीं देखाई। कलि....

रामचरित्र जब भाने लगता, तब उर में शुचिता आ जाती।
हृदय नेत्र जैसे खुल जाते, मोह पास सकता नहीं आई। कलि....

अंधकार को हरने वाली, ज्ञान का दीपक हृदय जलाती।
राम कथा जे सुनहिं निरंतर, राम कृपा उन पर होय जाई। कलि....

जिस पर कृपा राम की होती, पास न उसके माया आती।
जन्म-जन्म के दु:ख मिट जाते, परमानंद बरनि को पाई। कलि....

रामचरित्र सा नहीं जगत कुछ, जो जीवन को पावन कर दे।
संकुल प्रेम की धार बहा उर, भवसागर दे पार कराई। कलि....

¼226½

रघुपति होते उसके सहाई।
तोड़ दिया जो जड़ से नाता, राम चरण में प्रीति लगाई।

राम अंश निर्लिप्त आत्मा, बिना ज्ञान के समझ न आता।
आकृति जो दर्पण में दिखती, भ्रम बस अपना लिया बनाई। रघुपति....

माया के संबंध न स्थिर, जीवन हो जाता है स्वाहा।
अगर चाहते दु:ख से बचना, सत् चिंतन कीजे मन लाई। रघुपति....

मार्ग कठिन है बहुत ज्ञान का, अत: राम की शरण में आओ।
जग की छोड़ कामना सारी, रघुपति को लो हृदय बसाई। रघुपति....

टूट गया जब जड़ से नाता, कर्म का बंधन बांध न सकता।
चाहे रहे वह जिस स्थिति में, माया सकती नहीं नचाई। रघुपति....

प्रकृति से न पुरुष का नाता, ज्ञान हृदय जब हो जाता है।
संकुल राम कृपा तब होती, जन्म मरण पीड़ा मिट जाई। रघुपति....

¼227½

राम कृपा कैवल्य मिल जाई।
कृपा राम जो चाहे पाना, अंत:करण की करे सफाई।

अंत:करण शुद्ध होने पर, नित्य अनित्य भेद समझ में आता।
जो अनित्य है उसे छोड़ कर, ले जीवन में नित्य अपनाई। राम....

तीन एषेणा है धरती पर, बहुत कठिन इनसे छुटकारा।
राम हृदय में यदि बस जाएं, इन पर विजय सहज होय जाई। राम....

जगत एषेणा खत्म हो गई, तब निर्मल हृदय हो जाता।
मोह जगत का मिट जाता है, पड़ता तब प्रकाश दिखलाई। राम....

आलोकित जैसे उर होता, द्वैत जगत के सब मिट जाते।
आत्मज्ञान तब हो जाता है, जो मैं तू वही पड़े देखाई। राम....

मिट जाते संताप जगत के, परम सत्य यह जिसने जाना।
संकुल नहीं भटकता फिर वह, राम में जाता स्वयं समाई। राम....

¼228½

सुमिरत राम तिमिर मिट जाई।
परम तत्व जो जड़ करइ चेतन, जो जाना सोइ मुक्ति पाई।

एक राम कण–कण में रमते, नाम अनेकों दुनिया कहती।
भाषा धर्म बनी हैं सीमा, लेकिन सत् केवल रघुराई। सुमिरत....

सदाचार जो अपनाते हैं, रघुनंदन को अतिशय भाते।
परोपकार जीवन में करते, वे जन जाते राम समाई। सुमिरत....

नदी अंततोगत्वा सारी, जाकर सागर में मिल जाती।
जो सत्कर्म धरा पर करते, राम कृपा जाते हैं पाई। सुमिरत....

बाह्य दिखावा अरू आडंबर, पावन नहीं हृदय कर सकते।
जब तक पावन हृदय न होता, राम समझ न कोउ पाई। सुमिरत....

ब्रह्म राम तो सिर्फ एक हैं, घट–घट में है उनकी छाया।
संकुल जो रहस्य यह जाना, मृत्यु का भय न सका सताई। सुमिरत....

¼229½

समर्पित जीवन किया रघुराई।
आन जगत में मेरी रखो, बिगड़ी दीजे बनाई।

व्रत पूजा नहीं किया साधना, विषय में रत खल कामी।
अवगुण पामर के बिसार कर, दो भव पार लगाई। समर्पित....

मैं अज्ञानी मोह में पड़कर, पकड़ी सदा है छाया।
स्थिर कभी न माया काया, समझ न बुद्धि पाई। समर्पित....

अंधकार में उलझ गया हूँ, सुलग रही है छाती।
जगत पिता अब दया कीजिए, लीजे पास बुलाई। समर्पित....

हे सीतापति जान रहे हो, कैसे कहूं हृदय की।
दया के सागर दया कीजिए, अवगुण दो बिसराई। समर्पित....

राम रमापति हे अविनाशी, नाथ विनय सुन लीजे।
संकुल अयश न जग में पाए, रघुपति होउ सहाई। समर्पित....

¼230½

नमो राम रघुनाथ दुःख दैन्य हारी।
गले से लगाया शरण में जो आया, दिया अंत कर उसकी चिंताएं सारी।

सुर नर असुर ध्यान जो भी लगाते, कृपा रामजी की अवश्य ही पा जाते।
नहीं कोई ऐसा जो भक्तों के कारण, लेकर मनुज तन सहे कष्ट भारी। नमो....

श्री राम जो नाम हृदय में जपते, नहीं पास उनके कभी विपदा आती।
जो रघुनाथ के प्रेम में रंग गए हैं, वही राम भक्ति के बनते अधिकारी। नमो....

जगत में जो भक्ति का लेता सहारा, श्री रामजी को फिर होता वह प्यारा।
किया भक्त पर राम जी ने जब कृपा, नहीं बांध सकती उसे दुनियादारी। नमो....

समर्पण अरु सेवा को कहते हैं भक्ति, कभी कामना पास आने न दीजे।
अवश्य रामजी की दया दृष्टि होगी, ऋषि एवं मुनियों की है बात न्यारी। नमो....

कृपासिन्धु करूणा के सागर हैं राघव,सदा नाथ भक्तों पर कृपा को करना।
संकुल से पतित को लगा पार दीजे, रमानाथ बस प्रार्थना है हमारी। नमो ....

¼231½

राम दया सेवक पर कीजे।
अंतर्यामी जान रहे हैं, चंचल मन स्थिर कर दीजे।

मन मूरख माया में उलझा, बार–बार रहा मुझे नचाता।
घाव हो गया अब नासूर है, शक्ति दर्द सहने की दीजे। राम....

दुनिया जिसे बनाती पागल, उसके होते तुम्हीं सहाई।
मेरी भी अब रक्षा करिए, स्वीकार विनय नाथ कर लीजे। राम....

जिसने कपट छोड़ दिया जग में, मान न उसका जाने पाया।
अब मैं भी हूँ शरण तुम्हारे, दोष पर ध्यान नाथ नहीं दीजे। राम....

मतलब के सब जग के नाते, नहीं निभाना कर्तव्य आता।
रघुनंदन संताप मिटा दो, ग्लानि सहने की शक्ति दीजे। राम....

व्यर्थ खो दिया सारा जीवन, दीनदयाल दया अब करिए।
संकुल शरण तुम्हारे राघव, अब उद्धार नाथ कर दीजे। राम....

¼232½

राम भजन सुख शांति उपाई।
परिहर आस भरोस राम भज, प्राणी यदि चाहते भलाई।

नहीं भुवन में कुछ भी ऐसा, जो चिरकाल साथ में रहता।
इनकी आसक्ति में पड़ कर के, देते अपना होश गंवाई। राम....

झूठी प्रीति जगत में देखी, कोई किसी के लिए न जीता।
पृथक–पृथक करनी अरु कथनी, समझ रहे इसको चतुराई। राम....

देह आवश्यकता की पूर्ति हित, बनते सभी जगत के नाते।
अगर संतुलन जरा भी बिगड़ा, देते हैं सौ बात सुनाई। राम....

प्रेम जगत का भटका करके, बस संताप हृदय को देता।
अस्तु प्रेम केवल राघव से, जग में कर्तव्य ही निपुणाई। राम....

राम का जिसने लिया सहारा, नहीं हुआ विचलित उर उसका।
संकुल ज्ञान का सार यही है, सब तजि एक भजे रघुराई। राम....

¼233½

राम नमामि जगत प्रतिपालक।
सदा कृपा सेवक पर करना, बार–बार विनती रघुनायक।

नयनाभिराम देख कर मूरत, मन की चली मलिनता जाती।
ऐसा न उदार धरती पर, भक्त पुकार सुन आये धावक। राम....

मृदुल मनोहर गात है जैसे, वैसे अति कोमल है स्वभाऊ।
शरणागत जो हुआ राम के, जीवन किया नाथ सुखदायक। राम....

संशय शोक को हरने वाले, नाम सुमिर निर्मल मति होती।
हे दु:खभंजन दीनानाथ हरि, दया करो जन पर सुरनायक। राम....

कर्म ज्ञान साधना हीन हूँ, नहीं छिपा तुमसे कुछ स्वामी।
दीनदयाल दया अब करिए, जल रही नाथ हृदय में पावक। राम ....

मेरे अवगुण नाथ भूल कर, कीजे बंधन से छुटकारा।
भटक–भटक कर संकुल थक गया, अब करो मुक्त यद्यपि नहीं लायक। राम....

¼234½

हे कृपानिधान आया हूं शरण तुम्हारी।
तात मातु बंधु तुम्हीं, मेरे एक खरारी।

भक्तवत्सल कौन तुम बिन, दीनों का हितकारी।
स्वार्थ मूल मंत्र जग का, मित्र हो या नारी। हे....

मानता जिनको था अपना, काम जब न आए।
अश्रु बह कर सूख गए, आई याद तिहारी। हे....

हे रमानिवास अब, अपराध क्षमा कीजे।
कृपा करके दूर कर दो, फैली है अंधियारी। हे ....

ज्ञान ध्यान से रहित, हूँ अधम संसारी।
डूबने पाए न नैया, नाथ अब हमारी। हे....

तुम सा न दयालु कोई, मुझ सा नीच कामी।
संकुल को उबार लीजे, राम धनुषधारी। हे....

¼235½

हे रमानाथ रघुनाथ आया शरण।
मन व्यथित है बहुत किस तरह से कहूं, नाथ अब कीजिए पाप मेरे क्षरण।

कौन है जिससे मन की कहूं वेदना, घिर गया है अंधेरा अब चारो तरफ।
कर कृपा नाथ शक्ति हृदय दीजिए, बाँध पाए न अब मुझको जीवन मरण। हे....

ज्ञान अनुभव नहीं किन्तु ऐसा लगा, आदमी से विचित्र और कुछ भी नहीं।
रक्त पिलाकर खिला करके पालो जिसे, प्राण अक्सर वही करना चाहते हरण। हे....

दुष्ट दुष्टता जगत में न तजता कभी, नम्रता में चाहे प्राण दे दीजिए।
इससे बढ़कर के पीड़ा जगत में नहीं, दुष्ट का जिंदगी में यदि हो जाय वरण। हे....

सहनशक्ति भी जाती है जब डगमगा, क्या करूं तब समझ में कुछ आता नहीं।
इस परिस्थिति में रघुनाथ कीजे कृपा, कीजिये ताप का नाथ मेरे हरण। हे....

जब जगत के सहारे हो जाते विफल, हार कर जो पुकारा है रघुनाथ को।
देर संकुल नहीं नाथ पल भर किया, कर दिया उसका फिर जग से निस्तारण। हे....

¼236½

जय रघुनंदन दुष्ट निकंदन।
नाथ जगह चरणों में दीजे, स्वीकार करो हमारा वंदन।

को उदार तुम सा भूतल पर, दया सदा भक्तों पर करते।
ठुकरा दिया जिसे दुनिया ने, आया शरण मुक्त किया बंधन। जय....

दुनिया में जितने भी नाते, हृदय का केवल ताप बढ़ाते।
मन मूरख इन्हें समझ कर अपना, व्यर्थ कर दिया सारा जीवन। जय....

स्वाद सदा गन्ना का मीठा, बर्फी गुड़ या बना लो चीनी।
यही सत्य जग के नातों का, नाम रूप का व्यर्थ है चिंतन। जय....

जग के सुख में जीवन खोकर, अंतकाल पड़ता पछताना।
पानी पुत्र पौत्र नहीं देते, कहें संत जन नारी नागिन। जय....

गया समय वापस नहीं आता, पर यदि अब भी राम सुमिर ले।
संकुल अंत तिमिर का होगा, जीवन बन जाएगा चंदन। जय....

¼237½

नहीं नाथ भूले कभी छवि तुम्हारी।
श्री राम कह अंत हो जिंदगी का, प्रभु कामना पूर्ण करना हमारी।

नहीं मान अपमान की मुझको चिंता, कहें चाहे कुछ भी ये दुनिया के प्राणी।
मगर भूलना न कभी मुझको रघुवर, दयासिंधु हूँ अब शरण में तिहारी। नहीं....

बहुत से अधम तारे हैं इस जगत में, मुझे भी लगा पार भव से अब दीजे।
भटकते- भटकते गया नाथ थक हूँ, कहूं क्या सर्वज्ञ जानते बात सारी। नहीं....

तुम्हारे सिवा अब न कोई जगत में, गया टूट संसार से मेरा नाता।
जैसा भी हूँ अब बस तुम्हारा सहारा, जगत में नहीं नाथ हो मेरी ख्वारी। नहीं...

मेरी चेतना में रहो प्रभु समाए, नहीं एक पल बिसरे मूरत तुम्हारी।
कहीं भी रहूँ चाहे जिस स्थिति में, नहीं नाथ विचलित हो बुद्धि हमारी। नहीं....

नहीं ज्ञान भक्ति अधम हूँ संसारी, मेरे दोष रघुपति हृदय में न रखना।
संकुल पर सदा कृपा ऐसे ही करना, नहीं पास दु:ख दैन्य आए खरारी। नहीं..

¼238½

अति पावन रघुनाथ का नाम।
सशंय लोभ मोह को तजकर, प्राणी सुमिर ले सीताराम।

परमतत्व को विज्ञजनों ने, दिया धरा पर अगणित नाम।
मगर राम सा और नहीं है, जिसमें छिपा है पूर्ण विराम। अति....

अक्षर कभी नहीं क्षय होता, प्रारंभ होता यहीं से ज्ञान।
परमतत्व को जिसने जाना, नहीं जगत से उसका काम। अति....

राम का कीर्तन राम का चिंतन, कर देता है शुद्ध विचार।
जब विचार पावन हो जाते, हृदय को मिल जाता विश्राम। अति....

नाम की महिमा संत जनों ने, बार-बार है किया बखान।
राम में जिसका चित्त रम जाता, मिटते उसके कष्ट तमाम। अति....

राम नाम की अमित है महिमा, जो करते इस पर विश्वास।
संकुल राम नाम को जप कर, जाते चले राम के धाम। अति....

¼239½

मूल धर्म के हैं रघुराई।
परहित बसता जिसके ह्रदय में, वही धार्मिक व्यक्ति कहाई।

कोई कितना भी प्रयास करे, सूर्य पर कीचड़ फेंक न सकता।
परमतत्व रघुनाथ जगत के, शत्रु भी जिनकी करें बड़ाई। मूल....

सही गलत का व्यर्थ विश्लेषण, काल परिस्थिति को लख करके।
अपनायें जो हितकारी हो, राम ने नीति यही बतलाई। मूल....

पूर्व मान्यताओं को ध्वस्त कर, एक नारी व्रत को अपनाकर।
राम ने बतलाया दुनिया को, नर नारी समता सुखदाई। मूल....

विगत न देखा कभी राम ने, एक बार जो शरण में आया।
कर दिया क्षमा दुष्ट को रघुवर, सारे पाप दिया बिसराई। मूल....

शत्रु पर दया किया रघुवर ने, कभी मान अपमान न देखा।
संकुल धर्म का सार यही है, मानवता की करें भलाई। मूल....

¼240½

भक्तवत्सल जय-जय रघुवीर।
दया सदा भक्तों पर करना, हरना तन मन पीर।

जगत नियंता जग प्रतिपालक, हे सीतापति राम।
सीता लखन सहित उर बसये, दीजे मन को धीर। भक्त ....

कौन तुम्हारे सिवा जगत में, समझे ह्रदय की पीड़ा।
जान रहे हो नाथ ह्रदय की, सूख नयन गये नीर। भक्त ....

प्रारब्ध वशीभूत जीवन है, व्यर्थ किसी का दोष।
बस वह शक्ति दीजिए रघुवर, सहू जगत के तीर। भक्त ....

मैं अज्ञानी भटक गया हूँ, नाथ जगत मेला में।
आहट आने लगी साँझ की, हो गया शिथिल शरीर। भक्त ....

अब तो तुम्हीं लगा सकते हो, रघुपति मुझे किनारे।
संकुल का कल्याण कीजिए, मिटा दो तम गंभीर। भक्त ....

¼241½

सुखधाम राम जय जगपालक।
हे परमपिता हे अविनाशी, अवगुण बिसार दो हम बालक।

हे कण–कण में रमने वाले, प्रेमी के बस में रहते हो।
जिस भाव में याद भक्त करता, वह रूप लिया धरि सुरनायक। सुखधाम....

इंद्रियां बुद्धि मन से हो परे, अव्यक्त न वाणी कह सकती।
जो प्रेम में हो जाता विभोर, हो जाता जीवन सुखदायक। सुखधाम....

जब प्रेम हृदय में आ जाए, छल कपट द्वेष मिट जाता है।
सत् जगत समझ में तब आता, संसार सार बस रघुनायक। सुखधाम....

जड़ चेतन के इस संगम से, संसार में जीवन चलता है।
आचरण पवित्र किया जिसने, श्री राम से वह मिलने लायक। सुखधाम....

जड़ से पहले निश्चित चेतन, वह चेतन है बस एक राम।
संकुल संशय भ्रम को तजकर, भजे राम भुवन के प्रतिपालक। सुखधाम....

¼242½

सुमिरे हृदय सदा रघुनंदन।
निश्चित मन को शांति मिलेगी, बांध न सकता कोई बंधन।

रामप्रताप हृदय जब आता, काम क्रोध उर नहीं जलाते।
जगत प्रपंच नहीं उलझाता, पुलकित हो जाता है जीवन। सुमिरे....

प्राप्त जगत में कुछ भी कर लो, साथ सदा वह कभी न रहता।
जब तक राम में रति नहीं होती, स्थिर कभी नहीं होता मन। सुमिरे....

थक जाओगे भटक–भटक कर, कहीं जगत में शांति नहीं है।
सार ज्ञान का राघवेंद्र हैं, जो जाना वह बन गया चंदन। सुमिरे....

भौतिक सुख कुछ पल का होता, फिर संताप बढ़ा देता है।
करते रहते अदला बदली, पर परिणाम मिलता है क्रंदन। सुमिरे....

सुख दुनिया में व्यर्थ खोजना, सिर्फ कीजिए कर्तव्य पालन।
संकुल सार यही जीवन का, सत्कर्म संग राम का चिंतन। सुमिरे....

¼243½

ॐ नमो जय जगत के स्वामी।
पूर्ण ब्रह्म जय-जय परमेश्वर, राम नमामि नमामि नमामी।

नारद शिव बिरंचि सनकादिक, शेष गणेश पार नहीं पावे।
अकथ अगोचर अविगत रघुपति, दया करें मूरख मैं कामी। ॐ....

हे कण-कण में रमने वाले, नाम रूप से यद्यपि रहित हो।
भक्त प्रेम साकार रूप धरि,धरा के नष्ट किए खल गामी। ॐ....

नहीं दयालु भूतल पर तुम सा, दीन दुःखी का जो हितकारी।
दानवता के हे संहारक, कृपा कीजिए अंतर्यामी। ॐ....

राम सियापति हे रघुनंदन, नाथ दया सेवक पर कीजे।
नाथ शरण में अपनी लीजे, तुम सा नाम नहीं कोई नामी। ॐ....

हे असीम विभु दोष भूलकर, अब कीजे जग से छुटकारा।
तुम बिन नहीं कोई संकुल का, सब मुँह देखी भरते हामी। ॐ....

¼244½

ब्रह्म राम जय-जय अविनासी।
अब दो दरस नाथ अंखियों को, जन्म-जन्म से हैं ये प्यासी।

जगत दृश्य से झुलस गई हैं, अब पड़ता नहीं साफ देखाई।
दीनानाथ उबारो मुझको, हुई जिंदगी रघुपति बासी। ब्रह्म....

जब तक दया दृष्टि नहीं होगी, अंधकार कभी भाग न सकता।
तिमिर छिपा है जब तक उर में, कैसे होगी माया नासी। ब्रह्म....

द्वैत मिटा दो अब हृदय से, जीवन में करो नया सवेरा।
महामूर्ख में अधम नीच हूँ, कृपा करो मुझ पर सुख रासी। ब्रह्म....

परमतत्व करते जड़ चेतन, है संसार विवर्त तुम्हारा।
जिसके हृदय में राम बस गए, वह हो गया अयोध्यावासी। ब्रह्म....

भेद बुद्धि का अंत हो गया, निज स्वरूप को उसने जाना।
संकुल परमानंद मिल गया, माया हो गई उसकी दासी। ब्रह्म....

¼245½

दु:ख हरो राम करुणा निधान।

यदि कृपा तुम्हारी हो जाए, मिट जाए विधाता का विधान।

माया के वशीभूत होकर, न जाने कब से भटक रहा।
इस आवागमन की पीड़ा से,कीजिए नाथ मेरा निदान। दु:ख ....

हे नाथ मोह का अंत करें, जो बनता है दु:ख का कारण।
वह ज्ञान हृदय को दे रघुवर, कर लूं जिससे अपनी पहचान। दु:ख....

संसार में ऐसा कुछ भी नहीं, जिससे मिट जाए उर की प्यास।
रघुनाथ भक्ति दीजे अपनी, जिससे मिट जाता है अज्ञान। दु:ख....

दुनिया से हो करके उदास, अब पास तुम्हारे आया हूँ।
हे नाथ दया करें सेवक पर,कीजिए नाथ मेरा कल्यान। दु:ख....

पशु तुल्य चरा जीवन खोया, पर नाथ भरा अब तक न पेट।
संकुल अब शरण तुम्हारे है, रघुपति रखो जग मेरा मान। दु:ख....

¼246½

यदि चाहते विश्राम को पाना।

तोड़ जगत से अपना नाता, पड़ेगा राम शरण में आना।

प्रेम जगत से कितना कर लो, स्थिर कभी नहीं रह सकता।
सबको हित होता है प्यारा, बहुत कठिन है प्यार निभाना। यदि......

पल-पल होते परिवर्तन में, प्रेम जगत का बहता रहता।
पकड़ न कोई इसको सकता, अंतकाल पड़ता पछताना। यदि ....

आवश्यकता की पूर्ति मूल है, दुनिया के संबंध है जितने।
जिस दिन पूर्ण हुई आवश्यकता, पुत्र पिता को नहीं पहचाना। यदि....

जिस नारी के आकर्षण में, भूख प्यास का ध्यान न रहता।
वही एक दिन आहत करती, दुनिया का यह नियम पुराना। यदि....

पाकर उर गदगद हो जाए, ऐसा कुछ भी नहीं जगत में।
संकुल प्रेम सिर्फ रघुपति से, सभी दु:खों का एक निदाना। यदि....

¼247½

हे रमाकांत जगदीश आया शरण।
मुक्त आवागमन से मुझे कीजिए, आखिरी बार हो नाथ मेरा मरण।

अभ्र से बूंद होती है जिस दम पृथक, कल्पनाओं में संसार लगता सुखद।
जो मिला उससे संतोष होता नहीं, चाहती और पुष्पों का करना वरण। हे....

कूप में तो कभी जा सरोवर गिरी, कभी नाले से जा करके पहुंची नदी।
नदी से जाकर जैसे वह सागर मिली, सोचा अब हो गया जिंदगी का तरण। हे....

रवि की रश्मियों ने सोख उसको लिया, कसमसाई मगर कुछ भी कर न सकी।
फिर गगन में गई वायु के संग बही, बूंद फिर बन गई और गिरी आ धरणि। हे....

जड़ से चेतन का संबंध ऐसा ही है, टूटता बनता मिटता बिगड़ता रहा।
अंत दोनों का होता जगत में नहीं, होता रहता है बस इनका रूपांतरण। हे....

इस क्रिया से बहुत हो चुका हूं व्यथित, नाथ जड़ से मुझे अब पृथक कीजिए।
संकुल को राम अपने में लीजे मिला, दुःख सदा के लिए काजिये अब क्षरण। हे...

¼248½

प्रणतपाल जय-जय रघुनायक।
राजीव नयन धरे धनु सायक, बंदौ चरण कमल सब लायक।

जगत के सुख ज्यों आइसक्रीम है, कुछ पल तक ठंडक पहुंचाते।
एक समय ऐसा आता है, हो जाते हैं वे ही दाहक। प्रणतपाल....

श्वान मगन चाटने में हड्डी, ध्यान कभी इस पर न जाता।
निज रक्त को वह स्वयं पी रहा, होगा अंत फिर पीड़ादायक। प्रणतपाल....

भौतिक सुख में डूब गया जो, लाश ही उसकी बाहर आती।
अगर निकलना कोई चाहे, तो बस एक मंत्र निर्णायक। प्रणतपाल....

देह बोध से मुक्ति लेकर, स्वयं को सर्वप्रथम पहचाने।
केवल प्रेम करे रघुपति से, जग से कर्तव्य ही निर्वाहक। प्रणतपाल....

जड़ से जड़ चेतन से चेतन, का शाश्वत संबंध रहा है।
संकुल अस विचारि भजे रघुपति, जग आसक्ति व्यर्थ दुखदायक। प्रणतपाल....

¼249½

राम सहारा ही सुखकारी।
दु:ख में साथ न कोई देता, भ्रात पुत्र अथवा हो नारी।

ढोंग प्यार का जग में देखा, सब अपने स्वार्थ के साथी।
कोई किसी के लिए न जीता, मतलब के हैं सभी पुजारी। राम....

है स्वभाव मानव का ऐसा, ध्यान कभी उपकार न रखता।
एक बार न गए ब्याह में, टूट जाएगी रिश्तेदारी। राम....

पट्टीदार ऐसे होते हैं, दस रूपये का न्योता दे दो।
अरबपति भाई पांच वर्ष बाद, देगा दस जग नीति न्यारी। राम....

कथा सत्यनारायण की करिए, अगर गए न पड़ोसी के घर।
द्वार तुम्हारे नहीं आएगा, देखी मैंने दुनियादारी। राम ....

बिना स्वार्थ के कभी किसी के, काम जगत में कोई न आता।
इस असार संसार से रघुपति, संकुल को अब लेहु निकारी। राम....

¼250½

भज राम छोड़ दुनियादारी।
मन कर ले जग सच्चा सौदा, जिसे काट न सके वक्त आरी।

जब तलक जगत की चाहत है, तब तक मिट सकती प्यास नहीं।
इसलिए जगत से छत्तीस हो, कीजिए यहाँ पर खरीदारी। भज....

जिनको तू अपना कहता है, वे सदा साथ नहीं रह सकते।
उनके लिए भूल गया खुद को, कर रहा पाप बोझा भारी। भज....

स्वार्थी फरेबी दुनिया है, सब मुँह देखे के नाते हैं।
आखिरी समय जब आ जाता, तब देते हैं ये ही गारी। भज....

संसार में कर लें कुछ भी प्राप्त, संतोष न उससे मिल सकता।
सत् चिंतन किया जगत में जो, हरि शरण कहा कल्याणकारी। भज....

श्री राम भक्ति ही जीवन से, कर सकती दु:ख का सर्वनाश।
संकुल जीवन निष्कर्ष यही, मृगतृष्णा है दुनिया सारी। भज....

¼251½

दुनिया है एक भूल भुलैया।
प्रीति राम से जिसकी सांची डूब न सकती उसकी नैया।

पल-पल बहता रहता जीवन, अंधकार में खो जाता है।
सहज समझ में कभी न आता, कौन यहाँ है असली सैंया। दुनिया....

उदर भरने के ही उपक्रम में, कर देते हैं जीवन स्वाहा।
पेट भरा न कभी आज तक, चतुर हो चाहे कितना चरैया। दुनिया....

छल प्रपंच से भरा जगत है, बड़े मतलबी दुनिया वाले।
इनके मोह में भूल रास्ता, सोचो कहाँ जा रहे भैया। दुनिया....

जो अनित्य है उसका नाता, बनता सदा ही दु:ख का कारण।
अस्तु जोड़िये राम से नाता, कर्तव्य से पग नहीं उठैया। दुनिया....

निश्चित मन को शांति मिलेगी, राम को अर्पित जीवन करके।
संकुल मैं तो निमित्त मात्र हूँ, कर्ता धर्ता हैं रघुरैया। दुनिया....

¼252½

मन धर धीर सुमिर रघुराई।
प्रणतपाल संतन हित कारण, सगुण रूप लिया ब्रह्म बनाई।

व्यापक अज अखंड अविनासी, आदि अंत श्रुति जान न पावा।
जो असीम नाम रूप परे है, प्रेम बिवस साकार होय जाई। मन....

केंद्र बिंदु है जो चिंतन का, वाणी प्रकट नहीं कर सकती।
जान लिया जिसने रघुपति को, छूट गई उसकी जड़ताई। मन....

शांति जगत में कहीं नहीं है, प्राप्त चाहे तुम कुछ भी कर लो।
प्रेम राम से अगर हो गया, निश्चित उर शीतलता आई। मन....

कभी हताश न हों जीवन में, आए चाहे कोई परिस्थिति।
कुछ भी स्थिर नहीं जगत में, अस विचारि कर्तव्य निभाई। मन....

सब रोगों की एक दवा है, राम पर दृढ़ विश्वास हमारा।
संकुल निशा सदा नहीं रहती, ले आती उषा अरुणाई। मन....

¼253½

लिया जगत जो राम सहारा।
नहीं आत्मविश्वास को खोया, जीवन में वह कभी न हारा।

आत्मसमर्पण कर रघुपति को, निज कर्तव्य कभी नहीं छोड़ा।
हुए सहायक उसके रघुवर, हर दुःख से प्रभु उसे निकारा। लिया....

क्या था मेरा जिसको खोया, जो था वह सब था रघुपति का।
यदि आसक्ति नहीं हो मन में, सुख-दुःख फिर न कहीं संसारा। लिया....

व्यक्ति वस्तु अनुकूल हो जब तक, तब तक उससे सुख मिलता है।
हो जाए प्रतिकूल अगर तो, मन करना चाहता किनारा। लिया....

सुख-दुःख दोलन जैसी गति है, जीवन इसमें झूला करता।
भाव संवेग संचालित जीवन, देता डूबा सदा मँझधारा। लिया....

कृपा राम की जिस पर होती, हर स्थिति में वह मुस्काता।
संकुल रंगमंच है दुनिया, पर्दा गिरा न कुछ इस पारा। लिया ....

¼254½

लो उबार अबकी रघुराई।
समदर्शी है नाम तुम्हारा, सब प्रिये सहज कृपा रहे पाई।

कर्म प्रधान किया ब्रह्मा ने, भाग न कोई इससे सकता।
लेकिन कपट छोड़ दिया जिसने, उसकी बिगड़ी दिया बनाई। लो ....

तुम तो नाथ जानते जन की, कैसे बात कहूं हृदय की।
मनस्थल को धैर्य बंधा दो, नाथ वेदना न सहि जाई। लो....

अनंत काल से भटक रहा हूँ, जन्म मरण दुःख पीड़ा सहते।
अब न पतन नाथ हो मेरा, लीजे सेवक नाथ बनाई। लो....

ऐसा कोई नहीं जगत में, जिसको अपनी बात बताऊं।
देर सही पर जान लिया अब, प्रभु बिन कोई नहीं सहाई। लो....

पतित पावन है नाम तुम्हारा, एक बार जो राम पुकारा।
संकुल मुक्त हुआ बंधन से, संत पुराण रहे यश गाई। लो......

¼255½

नमो राम रघुनंदन संताप हारी।
परम ब्रह्म परमात्मा मूल कारण, रहे नाथ सेवक पर कृपा तुम्हारी।

तुम्हीं एक ब्रह्मांड के मूल कारण, जिसे उपनिषदों कहा नेति–नेति।
नहीं दूसरा कोई बस एक तुम हो, लिया जान जिसने हुआ वह सुखारी। नमो ....

प्रबल है बहुत इस जगत का आकर्षण, जो डूबा निकल फिर नहीं इससे पाया।
इसी में जो सब कुछ यहाँ खोजते हैं वे बन जाते हैं जग में फिर स्वेच्छाचारी। नमो....

यथार्थवाद तल से निकलता है कीचड़, प्रगतिवाद नर को बना देता पशु है।
आदर्शवाद से शांति मिलती हृदय को, श्री राम को मार्ग यह ही था प्यारा। नमो....

बिना ज्ञान के हम भटकते जगत में, बहुत ही कठिन रास्ता खोज पाना।
अगर चाहता कोई दु:ख से निकलना, तो हो जाइये रामजी के पुजारी। नमो....

यह जीवन श्री राम को कर समर्पित, जगत में निज कर्तव्य का कीजे पालन।
संकुल इंद्रिय सुख के पीछे न भागे, ये कर देती हैं मलिन आत्मा हमारी। नमो....

¼256½

मुक्त करो प्रभु जीवन बंधन।
सीतापति अब शरण तुम्हारी, नहीं सहा जाता है क्रंदन।

है अजीब दुनिया का मेला, नहीं समझ में मेरी आया।
अब दे दो जग से छुटकारा, स्वीकार करो हमारा वंदन। मुक्त....

यहाँ न साथी कोई किसी का, सबको अपना मतलब प्यारा।
आज चतुर वह कहलाता है, जो काटे लोगों की गर्दन। मुक्त....

गुड से लिपट गई यदि चींटी, छोड़ नहीं फिर उसको पाती।
जीवन लक्ष्य आज भौतिक सुख, कौन करे औरों का चिंतन। मुक्त....

पेट भरा हो अगर सिंह का, नहीं शशक का प्राण हरेगा।
पर मनु की संतान मनुज का, होता खाली पेट ही मरन। मुक्त....

ठुकरा दिया मुझे दुनिया ने, नालायक नीच कहते पागल।
अब संकुल को गले लगा लो, करो सनाथ मुझे रघुनंदन। मुक्त....

¼257½

मंगल मूरत बिपत्ति विभंजन।
त्रिबिध ताप को हरने वाले, नाथ मुक्त कीजे भव बंधन।

श्याम गात विशाल विलोचन, नयनाभिराम परम सुखदायक।
ध्यान ज्ञानियों का हर लेते, सुर नर मुनि करते सब वंदन। मंगल....

हृदय बसा ली जो यह मूरति,जन्म सफल उसने कर पाया।
मुक्त कामनाओं से होकर, हो गया उसका जीवन चंदन। मंगल ....

परम सौंदर्य जिसने जाना, फिर वह कभी जगत नहीं भटका।
रामकृपा निश्चित वह पाई, सुमिरा हृदय में जो रघुनंदन। मंगल....

शांति जीव को नहीं जगत में, जब तक रामचरण नहि प्रीति।
प्रिय रघुपति को सिर्फ प्रेम है,कहा प्रेम को सार संत जन । मंगल....

दीनदयाल ऐसे रघुवर को, भजिए हृदय छोड़ कुटिलाई।
संकुल जन्म सार्थक होगा, मिट जाएगा जीवन क्रंदन। मंगल....

¼258½

हे राम सियापति कृपा करें।
तिमिर में भटक रहे जन को, अवलंबन दें संताप हरें।

जब तक न ज्ञान उर में आता, तब तक न साफ दिखलाता है।
दें ज्ञान सर्व प्रथम मुझे नाथ, भ्रम संशय से प्रभु करें परे। हे....

श्री राम जगत के केंद्र बिंदु, सारे दर्शन का है निचोड़।
ज्ञानी कर देते नाम पृथक, जो जान लिया दु:ख से उबरे। हे....

सत् एक नाम उसके अनेक, यह ज्ञान हृदय जब टिकता है।
खुल जाते हैं तब हृदय नेत्र, आवरण टूट जाते सगरे। हे....

बहती हृदय तब प्रेम धार, हर तरफ दिखाती हरियाली।
जब दया राम की हो जाती, तृष्णा फिर हृदय कहाँ ठहरे। हे....

जब राम हृदय बस जाते हैं, माया तब सकती बाँध नहीं।
मायापति अवगुण को बिसारि, संकुल जीवन अब न बिखरे। हे....

¼259½

बार-बार विनती रघुनायक।
नाथ शरण में अपनी लीजे, दीजे भक्ति नाथ सुखदायक।

नहिं उर भक्ति ज्ञान अनुरागा, जीवन कर दिया व्यर्थ अभागा।
अब तो तुम्हीं बुझा सकते हो, चहुं दिश नाथ जल रही पावक। बार-बार....

मैं अज्ञानी मोह में उलझा, जगत सत्य को समझ न पाया।
अब विश्वास भुवन से टूटा, करुणाकर अब तुम्हीं सहायक। बार-बार....

अब तो एक तुम्हीं हो स्वामी, कैसे भी उस पार लगाओ।
मेरे अवगुण को बिसारि कर, दीजे चरण जगह जगपालक। बार-बार....

नहीं दयालु तुम सा धरती पर, दीन दुःखी का जो हितकारी।
सब तजि द्वार तुम्हारे आया, करिए क्षमा जगत प्रतिपालक। बार-बार....

राम सियापति हे रघुनंदन, जग वाले मतलब के साथी।
संकुल सचराचर में केवल, तुम्हीं प्रेम करने के लायक। बार-बार....

¼260½

जय सच्चिदानंद रघुराई।
ठुकरा दिया जिसे दुनिया ने, उसकी बिगड़ी दिया बनाई।

अंतर्यामी घट-घट वासी, पूर्ण ब्रह्म जय-जय परमेश्वर।
दया कीजिए अब सेवक पर, दीजे मेरे अघ बिसराई। जय....

कृपा तुम्हारी यदि हो जाए, बांध न सकता कोई बंधन।
माया में बुद्धि उलझी है, मिथ्या पड़ रहा सत्य देखाई। जय....

जिसने आश्रय लिया तुम्हारा, मिला उसे दुःख से छुटकारा।
महामूर्ख मैं हूँ खल कामी, तुमसे छिपा नहीं सुरसाईं। जय....

भरी जटिलता से यह दुनिया, माया ठगनी नाच नचावे।
अब रघुनंदन कृपा कीजिए, जग दुर्गंध सहा न जाई। जय....

बहुत पतित तारे धरती पर, अब कल्याण मेरा कर दीजे।
संकुल सेवक नाथ तुम्हारा, करूणाकर अब होउ सहाई। जय ....

¼261½

श्री राम सहारा सुखदाई।
हैं बड़े मतलबी जग वाले, करते हैं केवल बेवफाई।

भाषा न प्रेम की ये समझें, होते हैं सुख के दीवाने।
देह की रिक्तता पूर्ण करना, सर्वदा नीति ये अपनाई। श्री राम ....

सारे रिश्ते संबंध यहाँ, केवल स्वार्थ से चलते हैं।
जो सरल जगत में होता है, उसे नोच कर लेते सब खाई। श्री राम ....

अक्सर उदारता का मतलब, कायरता समझा जाता है।
नर नारी में जो अधिक दुष्ट, वह मौज यहाँ रहा मनाई। श्री राम....

संसार में कोई सुखी नहीं, सब झूठ बोलते रहते हैं।
अपना कुटुंब यदि रक्त पिए, तो कौन गीत सकता गाई। श्री राम ....

चाहे कोई कितना यत्न करे, छाया को पकड़ नहीं सकता।
संकुल बिन रघुपति शरण गए, विश्राम जगत न कोउ पाई। श्रीराम....

¼262½

राम ने दिया सरल संदेश।
भेद करे मानव-मानव में, कभी नहीं उपदेश।

महापुरुष जो हुए धरा पर, राग द्वेष से दूर।
चिंता नहीं अपमान मान की, सबका हरा क्लेश। राम....

पर पीड़ा से पाप बड़ा नहीं, झूठ पतन का मूल।
मानवता से नहीं बड़ा है, कभी धर्म अरू देश। राम....

मानवता की रक्षा करना, ही है धर्म का सार।
प्रेम से विराट ग्रंथ नहीं है, सशंय करें न लेश। राम ....

इस संसार का सत्य एक है, धर्म सीमा से ऊपर।
नहीं दुखाएं हृदय किसी का, रखें कुछ भी भेष। राम....

धर्म जाति भाषा अरू देश से, कभी न राम को बांधे।
संकुल जिसने राम को जाना, रहा न फिर कुछ शेष। राम....

¼263½

रघुपति रखिए लाज हमारी।
दीनदयाल कृपा कर मुझ पर, दीजे मिटा कष्ट अब भारी।

जिसका कोई नहीं जगत में, एक बार जो तुम्हें पुकारा।
मान न उसका जाने पाया, रक्षा उसकी किया खरारी। रघुपति....

मिथ्या हैं दुनिया के नाते, इनका मोह कष्ट का कारण।
जिसने प्रीति किया राघव से, जीवन में नहीं हुआ दुखारी । रघुपति....

भटक गया यद्यपि दुनिया में, हित अनहित पहचान न पाया।
पशु सम उदर भरा दुनिया में, हार कर आई याद तुम्हारी। रघुपति....

अब तो तुम्हीं दया के सागर, दे सकते हो मुझे किनारा।
हे सर्वज्ञ कहूं क्या तुमसे, जान रहे मेरी लाचारी। रघुपति ....

नहीं जगत में कोई मेरा, जिसको अपनी कथा सुनाऊ।
संकुल शरण तुम्हारे राघव, मिटा दीजिए विपदा सारी। रघुपति....

¼264½

बना लो रघुपति मुझको दास।
जगह चरण में दो सीतापति, सदा राखिए पास।

जो भी कपट छोड़ कर आया, राघव शरण तुम्हारी।
जन्म सफल हो गया धरा पर, मिट गई भव की त्रास। बना ....

जब तक रहता मोह जगत से, गिरे उठे फिर चलते।
ठहर न पाता सत् का चिंतन, मिटे फिर कैसे प्यास। बना....

सीधी साधी बहुत सरल है, इस जहान की रीति।
यहां न साथी कोई किसी का, कभी न बनता खास। बना....

हृदय में रखकर श्यामल मूरति, करें जगत में काम।
कभी नहीं कर्तव्य को छोड़े, करें न किसी से आस। बना....

अंत में साथ अगर कोई देगा, तो केवल सत्कर्म।
दुखी न प्राणी हो कोई मुझसे, संकुल यही प्रयास। बना....

¼265½

राम सम कोई नहीं जहान।
धर्म जाति लिंग भेद न देखा, किया सबका उत्थान।

मानवता है मूल धर्म का, दिया यही संदेश।
भेद नहीं मानव-मानव में, किया सबका कल्यान। राम....

मातु पिता से बड़ा नहीं है, कहता जग जिसे ईश्वर।
दुखी करें कभी मातु पिता न, करें सदा सम्मान। राम....

कीश भालु निशचर या कोई, पास राम जो आया।
सबको गले लगाया राघव, शत्रु किया गुणगान। राम....

दमन अनाचार करने के लिए, कर में धनुष उठाया।
मनुष्यता के जो थे दुश्मन, हर लिया उनके प्रान। राम ....

राम ब्रह्म सृष्टि के कारण, सब संतान हैं उनकी।
संकुल सबकी करें भलाई, दिया राम ने ज्ञान। राम....

¼266½

माया अब न मोहि सतावे।
मायापति अब दया कीजिए, हृदय को धैर्य बंधावे।

मेरी करनी को बिसारि कर, राम अनुग्रह कीजे।
अंधकार में भटक रहा हूँ, नाथ मार्ग दिखलावे। माया....

काम क्रोध मद मोह में फंसकर, व्यर्थ कर दिया जीवन।
अब क्या करूं समझ नहीं आवत, रह -रह उर घबरावे। माया....

अब सह जाती नहीं यातना, घाव पर लगती घातें।
तुम बिन कौन जगत के स्वामी, जिसको दुःख बतलावे। माया....

नाथ छिपा नहीं कुछ भी तुमसे, जान रहे हो जन की।
अब उबार इस पतित को लीजे, भव से पार लगावें। माया....

दीनों के हो तुम्हीं सहायक, नाथ संत जन कहते।
संकुल शरण तुम्हारे रघुवर, भूल चूक बिसरावें। माया....

¼267½

हे रघुनंदन दया के सागर।
नाथ क्षमा करें मेरे अवगुण, बना लीजिए अपना चाकर।

मुझ सा नहीं कुटिल खल कामी, नहिं उदार तुम सा जग माहीं।
मैं विषयों में फंसा हुआ हूँ, नहीं धरा पर मुझ सा पामर। हे....

नहीं कभी प्रकाश देखता, अंधकार है कितना पुराना।
जो भी पास तुम्हारे आया, रीती नहीं रही फिर गागर। हे....

बहुत पतित तारे वसुधा पर, अब उद्धार मेरा कर दीजे।
जग प्रलाप अब सहा न जाता, तुम से छिपा नहीं करूणाकर। हे....

नहीं शांति तब तक सपनेहुं मा, जब तक राम चरण नहिं प्रीति।
अब अज्ञान नष्ट कर मेरा, काटे कष्ट दरस दें आकर। हे....

नाथ दरस को नेत्र हैं प्यासे, प्यास मिटा दो जन्म-जन्म की।
संकुल मुक्त जगत से कीजे, त्राहिमाम रघुकुल गुण आगर। हे....

¼268½

रामचरित्र जीवन करे पावन।
क्रियान्वयन जो किया धरा पर, हुई जिंदगी उनकी सावन।

मानव के सारे रिश्तों में, सबसे ऊपर होती माता।
पुत्र कहाने का अधिकारी, करे पिता की आज्ञा पालन। रामचरित्र....

पति का चिंतन कभी न छोड़े, आ जाए चाहे कोई परिस्थिति।
छोड़ जगत के सभी प्रलोभन, नारि जो करे मर्यादा धारन। रामचरित्र....

अपने प्राणों से भी बढ़कर, पत्नी का हित जिनको प्यारा।
होता श्रेष्ठ पति वही जग में, रामकथा करती है गायन। रामचरित्र....

अनुज के लिए छोड़ दे सत्ता, मन में तनिक मलाल न लाये।
अग्रज के लिए निज सुख त्यागे, होता वह ही बंधु सुहावन। रामचरित्र....

जग के सारे संबंधों में, कर्तव्य रहे सर्वदा ऊपर।
संकुल करें न आचरण धूमिल, होता जिसका नहीं समापन। रामचरित्र....

¼269½

भक्ति राम की है सुखखानी।
सीताराम हृदय में भजिए, होगी दूर सभी परेशानी।

राम की भक्ति बहुत सरल है, तज दें हृदय से कुटिलाई।
स्वयं को कर दे हरि को समर्पित, सफल हो जाएगी जिंदगानी। भक्ति....

व्यर्थ आस न करें जगत से, केवल प्रीति राम से करिए।
भक्त की जाति –पांति नहीं होती, सदा बोलते मीठी बानी। भक्ति....

बहुत कठिन है मार्ग ज्ञान का, अस्तु सहारा भक्ति का लीजे।
भौतिक जगत का प्रबल आकर्षण, अक्सर गिर जाते हैं ज्ञानी। भक्ति....

निर्गुण सहज समझ नहीं आता, अतः जटिलता में मत पड़िए।
सगुण ब्रह्म श्री रामचंद्र को, मन क्रम वचन सुमिर ले प्रानी। भक्ति....

अति उदार करुणानिधान हैं, राम अखिल ब्रह्मांड के स्वामी।
संकुल भजन करें राघव का, होगी कभी नहीं फिर हानि। भक्ति....

¼270½

नाथ हरें अज्ञान हमारा।
सीतापति हूँ शरण तुम्हारी, करिए जग से वारा–न्यारा।

मिल जाए हृदय को राहत, ऐसा कुछ भी नहीं जगत में।
देर सही पर जान लिया अब, रघुनंदन दो मुझे सहारा। नाथ....

कोई नहीं समझ सकता है, होती हृदय में जो पीड़ा।
मेरे एक तुम्हीं हो स्वामी, रखिए लाज भुवन में हारा। नाथ....

राम सियापति हे करुणाकर, प्रार्थना करें स्वीकार हमारी।
दया करें मुझ पर रघुनंदन, दे दें रघुपति मुझे किनारा। नाथ....

तुम्हें जानना बहुत कठिन है, जान रहा हूँ जग के स्वामी।
अस्तु दया कर मुझ पामर पर, दे भक्ति काटे दुःख सारा। नाथ....

परमानंद उसे मिल जाता, जिस पर होती कृपा तुम्हारी।
संकुल पतन हुआ नहीं उसका, एक बार जो राम पुकारा। नाथ....

¼271½

मेरी बना दो बिगड़ी राम।
इष्टदेव मम रघुकुल नायक, सिद्ध करें मेरा काम।

मानुष तन का मर्म न जाना, पशु सम उदर भरा।
भूल गया आने का कारण, अब ढल रही है शाम। मेरी....

दर-दर भटका ठोकर खाई, फिर भी न मोह गयो।
प्रेम का सौदा जग में देखा, सभी चाहतें दाम। मेरी....

मुंह देखी मतलब की दुनिया, बड़े स्वार्थी लोग।
इनमें फंसकर बहुत कठिन है, मिले अखिल विश्राम। मेरी ....

अब तो तुम्हीं बचा सकते हो, दीनबंधु रघुनाथ।
नाथ भुला दें मेरे अवगुण, स्वीकार करें प्रणाम। मेरी....

मन वाणी बुद्धि से परे हो, हो अतर्क अविनाशी।
संकुल अब हरि शरण तुम्हारे, काटो कष्ट तमाम। मेरी....

¼272½

जय-जय-जय-जय अवध बिहारी।
जो भी सुमिरा हृदय राम को, नहीं जगत में हुआ दुखारी।

दीनबंधु भक्तन हित कारण, सगुण ब्रह्म हो गए अविनाशी।
जब जब पाप बढ़ा धरती पर, विविध रूप धर लिया खरारी। जय-जय....

किया सदा भक्तो की रक्षा,हर कष्टो से उन्हें बचाया।
भक्त का मान जगत में रखा, दीन्हा अपना मान बिसारी। जय-जय....

विगत न देखा कभी राम ने, जो भी आपके सम्मुख आया।
अभय कर दिया उसको जग में, भक्तवत्सल रघुपति धनुधारी। जय-जय....

जो चेतन को जड़ कर सकता, जड़ करे चेतन अस प्रभुताई।
ऐसे परम ब्रह्म परमेश्वर, भजे राम संशय भ्रम हारी। जय-जय....

मन में चिंतन रहे राम का, तन से काम जगत में करिए।
सदा करें कर्तव्य का पालन, संकुल होगें सदा सुखारी। जय-जय....

¼273½

राम भजन जब मन रम जाई।
आए चाहे कोई परिस्थिति, चिंता सकती नहीं सताई।

राम अनुकंपा जब होती है, प्रेम धार तब बहने लगती।
मन की सकल मलिनता बहती, पड़ता अपना बिंब देखाई। राम....

अपना तब कुछ नहीं दिखाता, जो भी है हरि का हो जाता।
राम का कीर्तन राम का चिंतन, सो आनंद सके को गाई। राम ....

रघुपति सदा भाव के भूखे, भाव पवित्र कर लिया जिसने।
एक पुष्प भी किया समर्पित, होते मगन सहज रघुराई। राम ....

मानव जन्म जगत में दुर्लभ, व्यर्थ कभी न जाने पाए।
जन सेवा हरि की सेवा है, करिए जग में सदा भलाई। राम....

शत्रु का भी जो करे न अनहित, संत कहाने का अधिकारी।
संकुल ऐसे भक्त जनों को, रघुपति लेते गले लगाई। राम ....

¼274½

रघुपति बिन न कोई हमारा।
करुणाकर अब सहा न जाता, जान रहे मेरा दुःख सारा।

दुष्ट संग जो होती पीड़ा, बांध शब्द से उसे न सकता।
इस असार संसार में केवल, शेष बचा रघुनाथ सहारा। रघुपति....

बड़े विचित्र जगत के प्राणी, पीकर रक्त आह्लादित होते।
अपने सुख के लिए जगत में, रिश्तो का बाजार है सारा। रघुपति....

परवाह करता नहीं जगत यह, चाहे किसी को प्राण ही दे दो।
बड़े शिकारी दुनिया वाले, लगा विचित्र मुझे संसारा। रघुपति....

किसको अपनी व्यथा सुनाऊं, कोई नहीं समझ सकता है।
रघुनंदन अब तुम्हीं बचा लो, डूब न जाऊं कहीं मंझधारा। रघुपति....

प्रेम जगत से करके देखो, पड़ेगा अंत अवश्य पछताना।
संकुल केवल रघुपति भक्ति, शांति का जग में एक अधारा। रघुपति....

¼275½

तुम्हीं मेरे मालिक तुम्हीं हो हमारे।
उदासी नहीं छू सकी नाथ उसको, जिया जिसने जीवन तुम्हारे सहारे।

ये माना की संसार है दु:ख का सागर, यहाँ कोई साथी नहीं है किसी का।
मगर जिसने रघुपति को हृदय से पूजा, निराशा छटी हो गए वे सुखारे। तुम्हीं....

दया दृष्टि रघुनाथ कर देते जिस पर, सभी नाश संताप हो जाते उसके।
अनाथों के स्वामी कहें संत जिनको,न जाने पतित कितने वसुधा पर तारे। तुम्हीं....

ये मन मोक्ष बंधन का बनता है कारण, इसे जो किया रामजी को समर्पित।
नहीं आश कीन्हा कभी वे किसी से, नहीं जिंदगी में कभी फिर वे हारे। तुम्हीं......

नहीं छोड़े साहस न करिए शिकायत, यही सोच लो न कोई है हमारा।
निश्चित मन को राहत जगत में मिलेगी, लगा देंगे रघुनाथ नैया किनारे। तुम्हीं....

मानव और पशु में नहीं कोई अंतर, जिसने अपना विवेक कर लिया जागृत।
संकुल बस वही पार होता है भव से, जिसे प्राण से भी हैं रघुनाथ प्यारे। तुम्हीं....

¼276½

घिर जाए जब घोर उदासी।
सीताराम हृदय में जपिए, नहीं जिंदगी रहेगी प्यासी।

ध्यान रहे इस बात का हरदम, बड़े स्वार्थी हैं जग वाले।
धर्म का करते सिर्फ दिखावा, मजलूम पर आती है हांसी। घिर....

इनके लिए व्यथित हो करके, अपना लक्ष्य कभी न भूल।
मंजिल मिल करके ही रहेगी, बने सर्वदा आत्मविश्वासी। घिर ....

कभी न उलझे धर्म ग्रंथ में, क्या कहते हैं धर्म प्रचारक।
दर्द की अनुभूति सिर्फ एक है, बनें किसी के न उपहासी। घिर....

सब रोगों का एक है भेषज, रामचंद्र का चिंतन करिए।
जो आवाज हृदय से आती, वही सत्य होती सुखरासी। घिर....

आ जाए चाहे कोई समस्या, नहीं पलायन उससे करना।
संकुल राम पर आस्था रखना, रहना जग मन से सन्यासी। घिर ....

¼277½

श्री राम राम राम जय राम।
नाम संकीर्तन हर लेता है, जग में कष्ट तमाम।

उलझन में जब मन फंस जाए, हों न कभी परेशान।
राम नाम का कीर्तन करिए, मिल जाएगा विश्राम। श्री राम....

आपाधापी के जीवन में, धीरज कभी न खोये।
मनो व्याधि की प्रबल दवा है, जग में राम का नाम। श्री राम....

मन को मिलेगी निश्चित राहत, कर मत सोच विचार।
जब भी मन में छाये उदासी, यही कीजिए काम। श्री राम....

राम नाम जो हृदय में जपते, होता मन न अधीर।
दिया ज्ञान यह संत जनों ने, देता सुखद परिणाम। श्री राम....

बहुत गूढ़ है सत्य जगत का, तर्क वितर्क न करिए।
संकुल जिससे मिले सांत्वना, वह है राम का नाम। श्री राम....

¼278½

करो प्यार राघव मिटेगा अंधेरा।
फिसल जाते हैं हमसफर इस जगत के, नहीं आज तक बन सका कोई मेरा।

प्रबल है बहुत इस जगत का आकर्षण, कठिन है बहुत भौतिक सुख छोड़ पाना।
पैसों से ही व्यापार होता जगत का, जिसके पास पैसा वह बनता बडेरा। करो....

पतन के तो कारण बहुत हैं जगत में, मगर नारी इनमें रही सबसे ऊपर।
कंचन कामिनी में है जब तक आसक्ति, नहीं छूट सकता जगत का ये फेरा। करो....

जगत में सभी होते सुख के दीवाने, अधिक सुख मिला तो बहक जाते अक्सर।
बदल देते ये आचरण की परिभाषा, बता देते जग को नया है सवेरा। करो....

प्रकृति ने जगत के संचालन के कारण, जादू देह आकर्षण का है बनाया।
मगर मौज हम खोजने लगे इसमें, इसी चित्र को फिर हृदय में उकेरा। करो....

जगत में सदा धार सृष्टि की बहती, जो इसमें बहे लापता हो गए हैं।
संकुल इस मर्म को समझ लिया जिसने, दिया रामजी ने हृदय डाल डेरा। करो....

¼279½

मेरी जिंदगी के तुम्हीं हो सहारे।
दयादृष्टि रघुनाथ सेवक पर करके, लगा दीजे नैया मेरी अब किनारे।

तुम्हीं एक शाश्वत जगत के नियंता, नहीं जान सकता तुम्हें शास्त्र कोई।
मगर प्रेम के बस में रहते सदा हो, किया प्रेम जो धन्य हो गए सारे। मेरी....

दिया धर्म का सार तुमने मानवता, नहीं प्रेम से बढ़कर ऊंची इबादत।
मिटेगी नहीं जब तक उर की मलिनता, सभी व्यर्थ तीरथ घूमों चाहे सारे। मेरी....

जगत में कई पंथ जिनमें भटक कर, नहीं मिल सकेगी कभी मन को राहत।
श्री राम देखते कभी न आडंबर, कृपासिंधु सत्कर्म को ही निहारे। मेरी....

परोपकार से बढ़कर कोई न पूजा, कभी भी किसी का हृदय न दुखाएं।
छुआछूत ऊंच-नीच मिटा भेद सारे, वही भक्त रघुपति को लगते हैं प्यारे। मेरी....

नारी अरु पुरुष में नहीं भेद कोई, न थोपे भी विचार अपने किसी पर।
संकुल अंतरात्मा सही जानती है, कभी उसके आदेश को न नकारे। तुम्हीं....

¼280½

यदि मन चाहे निज कुशलाई।
नाता अपना जोड़ राम से, बंद कर दो नंबर की कमाई।

भाव के भूखे रामचंद्र हैं, भाव में शुचिता लायें।
अन्न धन वस्त्र न प्रभु को चाहिए, प्रेम के बस रघुराई। यदि....

पल -पल होता परिवर्तन है, कल क्या किसने जाना।
चिंता छोड़ कर चिंतन करिए, दु:ख सके पास न आई। यदि......

पर उपकार जगत में कीजे, यही सार्थक पूंजी।
भौतिक सुख के भाग कर पीछे, खुद को भूल न जाई। यदि....

ईमानदारी पर जो चलता है, वही राम को भाता।
दो दिन का है जग का मेला ,सबकी करें भलाई। यदि....

व्रत पूजा तीरथ से बढ़कर, सत्कर्म जगत में करिए।
संकुल दया राम की होगी, परमानंद मिल जाई। यदि....

(281)

स्वामि राम की हूँ मैं दासी।
निश दिन तड़प रही हूँ तुम बिन, लोग कर रहे मेरी हांसी।

ताने सुन–सुन कर दुनिया की, कभी कभी विचलित हो जाती।
विरह का अंत प्राणपति करिए, ज्ञात नहीं कब से हूँ प्यासी। स्वामि....

कई नाम से बुला रहे हैं, जग कहता जिनको संबंधी।
भूल कभी मैं जाती खुद को, जलता हृदय फिर आती खांसी। स्वामि....

कभी स्वप्न में आ जाते हो, दौड़ कर पास तुम्हारे आती।
एकाएक नेत्र खुल जाते, लेती फिर से घेर उदासी। स्वामि....

जीवन भार सहा नहीं जाता, प्रियतम एक बार आ जाओ।
चौरासी में बंधी हुई हूँ, साजन खोल दीजिए फांसी। स्वामि....

निर्गुण नाम रहित अविनाशी, हे रघुनंदन विनय हमारी।
संकुल रहित हूँ ज्ञान ध्यान से, कृपा करें मुझ पर सुखरासी। स्वामि....

(282)

जब रघुनाथ चरण अनुरागा।
आत्मबोध तब हो जाता है, मिल जाता जीवन का परागा।

नेत्र बंद हो जाते बाहरी, निज स्वरूप पड़ता दिखलाई।
भौतिक जगत में जितने नाते, जाता टूट सभी से धागा। जब ....

न चिंता न कोई चाहत, बस उर धार प्रेम की बहती।
जिसने जान लिया रघुपति को, छूट गया दुनिया का रागा। जब ....

हानि लाभ से ऊपर उठकर, वह अपना कर्तव्य निभाता।
आशा रखता नहीं किसी से, अंधकार से डरा न भागा। जब ....

जगत के सुख में रमे हुये जो, बात सहज ये समझ न सकते।
देह को जितना सुख पहुंचाते, ग्रसित व्याधि असमय तन त्यागा। जब....

राम भक्ति जो चाहे पाना, तज दे हृदय से कुटिलाई।
संकुल भक्त वही राघव का, भक्ति के सिवा नहीं कुछ माँगा। जब ....

¼283½

राम सम को उदार संसार।
नहीं चिंता अपमान मान की, किया सबका उपकार।

मानव के इतिहास में ऐसा, हुआ न आदर्शवादी।
एक नारी व्रत निर्वाहन कर, किया समाज सुधार। राम....

दृढ़ निर्णय सत्कर्म के बल पर, होती जग पहचान।
राष्ट्र की उन्नति तभी हो सकती, जब छोटा परिवार। राम....

प्रकृति ने जो कुछ भी बनाया, सबका अपना मकसद।
लता वृक्ष पशु खग गण सारे, कीजे सबसे प्यार। राम ....

जैसे पावक जल अरु बादल, भेद कभी नहीं करते।
है असीम इस तरह धर्म भी, प्रेम है जिसका सार। राम....

आज जरूरत है भारत को, रामचरित अपनाये।
संकुल जनता तजे संकीर्णता, करे राष्ट्र श्रृंगार। राम ....

¼284½

रघुनंदन काटे यम की त्रास।
हे कमलनयन हे करुणानिधि, सेवक को लीजे बना दास।

लगती जब चोट हृदय में है, बुद्धि विचलित हो जाती है।
चेतना शून्य हो जाती है, हो जाता हूँ अतिशय उदास। रघुनंदन ....

हूँ अंधकार के कूप पड़ा, कुछ नहीं समझ में आता है।
बस इधर-उधर टकराता हूँ, कभी लगता है हो गया लाश। रघुनंदन....

पल-पल होते परिवर्तन में, कोई दृश्य ठहर नहीं पाता है।
जो लगता कभी प्राण प्यारा, बन जाता एक दिन वही फांस। रघुनंदन....

अनुभूति इंद्रियां जो करती, वह ज्ञान न थिर कभी रह पाता।
शिशिर में जो मन भाती धूप, ग्रीष्म में देती वह संत्रास। रघुनंदन ....

परिवर्तनशील जगत में इस, स्वार्थ में बद्ध सभी प्राणी।
संकुल अब पतन न हो मेरा, करें कृपा नाथ जग के प्रकाश। रघुनंदन....

¼285½

जब रघुनाथ भगति उर आई।
मिट जाती कामना ह्रदय से, पड़ता अपना बिंब देखाई।

वर्षा ऋतु जिस तरह धरा को, नहला कर निखार देती है।
छा जाती चहुं दिश हरियाली,बहती मंद सुरभि पुरवाई। जब....

पावस जिमि संवार धरती को, नई बना देती है दुल्हन।
राम भक्ति भी इसी तरह से, जीवन को देती महकाई। जब....

नवजीवन की उद्‌गम वर्षा, हर जीवों की प्यास मिटाती।
इसी तरह से राम की भक्ति, अंत:करण की करती सफाई। जब....

राम भक्ति में जो रम जाता,सहज ह्रदय आलोक आ जाता।
हट जाता आवरण माया का, जीवन मंगलमय होय जाई। जब....

जल बिन ठहर न सकता जीवन, जल संरक्षण अस्तु जरूरी।
संकुल ऐसे राम भक्ति भी, सफल जीवन में होय सहाई। जब ....

¼286½

दीनदयाल भगत हितकारी।
नारद सारद शेष गणेश, जपहिं हरि नाम सदा त्रिपुरारी।

जगत सत्य श्री रामचंद्र हैं, सगुण रूप नर चरित्र दिखाया।
मनुष्यता से धर्म बढ़ा नहीं, वंदनीय जो पर उपकारी। दीनदयाल....

अभ्र के यद्यपि रंग अनेकों, पर वे केवल जल बरसाते।
नाम पृथक हम कितने कर ले, ब्रह्म एक केवल निर्विकारी। दीनदयाल....

हर जीवों को दे कर स्वतंत्रता, दिया विवेक स्वयं ले निर्णय।
पाप पुण्य दो पंथ अलग हैं, परिणाम सकता कोई न टारी। दीनदयाल....

शुद्ध बुद्धि से मन पर नियंत्रण, जो आचरण जगत में करते।
धर्म जाति भाषा कोई देश हो, करते याद उन्हें नर नारी। दीनदयाल ....

मानव के इतिहास में अब तक, नहीं राम सा नीति नियंता।
संकुल जो हो गया शरणागत, उसकी बिगड़ी दिया सुधारी। दीनदयाल....

¼287½

शुद्ध बुद्धि करें नाथ हमारी।
सीतापति तुम बिन भूतल पर, निर्बल का न कोई हितकारी।

सुख के साथी सभी जगत में, दु:ख में काम न कोई आता।
रक्त से सींच कर जिसको पाला, वहीं अंत में देते गारी। शुद्ध....

आधुनिक शिक्षा के मतवाले, नहीं सम्मान बड़ों का करते।
बेटी बहन न बहू देखते, सिर्फ देखते केवल नारी। शुद्ध ....

अधिकारी हो या कर्मचारी, वह समाज में पूजा जाता।
जो रिश्वत ले करे बेईमानी, बनता राष्ट्र रत्न अधिकारी। शुद्ध....

जन्नत का बन जाता गामी, जो तीरथ हज को कर आये।
धर्म की बदल दिया परिभाषा, कलियुग धन्य तेरी बलिहारी। शुद्ध....

पशु सम जीना बहुत सरल है, भक्षाभक्ष मिले जो खाओ।
संकुल मनुज वही होता है, शत्रु को भी न करे दुखारी। शुद्ध....

¼288½

निर्बल के रघुनाथ सहाई।
ठुकरा दिया जिसे दुनिया ने, उसको लीन्हा हृदय लगाई।

अति उदार करूणानिधान है, आर्त हृदय जो राम पुकारा।
अवगुण उसके बिसरा करके, दीन्हा भव से पार लगाई। निर्बल ....

केवल हृदय पावन करिए, कृपा राम की हो जाएगी।
जिस पर दया राम की होती, विपदा सकती पास न आई। निर्बल ....

जो धोखा देते दुनिया को, मनुज तत्व वे समझ न सकते।
धन का करें न कभी देखावा, सुंदर तन पर न इठलाई। निर्बल....

खाते-पीते सोते जगते, सदा राम का चिंतन करिए।
जीवन भार छोड़ रघुपति पर, निज कर्तव्य करें हर्षाई। निर्बल....

कोई साथी नहीं जगत में, मत बेईमान इनके लिए बनिए।
संकुल सत्य आचरण तप है, निगमागम पुराण यह गाई। निर्बल....

¼289½

प्रेम में बंध जाते रघुराई।
ऊंच–नीच सब भेद भूलकर, भक्त की करते हैं सेवकाई।

राजपाट धन धरा त्यागकर, जिन्हें खोजते हैं सन्यासी।
ऐसे दीनबंधु करुणाकर, प्रेम को दिया सदा ऊँचाई। प्रेम ....

जासु कृपा मद मोह नसावे, माया ठगनी पास न आवे।
सो हरि प्रिया के केश संवारे, दी नारी वंदनीय बनाई। प्रेम....

ब्रह्म छिपा देती है माया, जग में उसके खेल निराले।
जब तक नेत्र न उर के खुलते, सत् पड़ता नहीं कभी देखाई। प्रेम....

माया सीता रघुनंदन की, जगत सृजन पालन लय करती।
जब तक आसक्ति माया में, चित्त स्थिर न कभी होय पाई। प्रेम....

कृपा राम जिस पर कर देते, माया उसको नहीं नचाती।
संकुल जीवन क्षणभंगुर है, सीताराम चरित अपनाई। प्रेम ....

¼290½

नहीं भूलना मुझे रघुराई।
इतनी शक्ति हृदय को देना, माया सके न नाच नचाई।

लोभ मोह के वशीभूत हो, व्यर्थ खो दिया सारा जीवन।
जगत सत्य को समझ न पाया, झूठी जग में प्रीति सगाई। नहीं....

गिरगिट की तरह रंग बदलते, दुनिया के सारे संबंधी।
देर सही पर जान लिया अब, प्रभु बिन कोई नहीं सहाई। नहीं....

तत्व जगत में कोई न ऐसा, जिससे चिर राहत मिल जाए।
जब तक प्रत्यक्ष न ज्ञान का होता, उर में सत् सकता नहीं आई। नहीं....

बहुत निकृष्ट कृत्य है मेरा,नहीं क्षमा का हूँ अधिकारी।
प्रनतपाल हे दया के सागर, दीजे मेरे अघ बिसराई। नहीं....

चिंता मुझको नहीं जगत की,लोग हंसे चाहे दें गारी।
सानकूल संकुल पर राघव, लीजे अपना मुझे बनाई। नहीं....

¼291½

जाऊं कहां तजि चरन तुम्हारे।
मातु पिता गुरु बंधु तुम्हीं हो, तुम्हीं सखा हो तुम्हीं सहारे।

पतित पावन है नाम तुम्हारा, जो सुमिरे हुआ भव से पारा।
दीनदयाल दया के सागर, नाथ बिसारि दें दोष हमारे। जाऊं....

अधम नीच हूं मैं संसारी, सदा कृपा रहे बनी तुम्हारी।
नाथ काम मद मोह छुड़ा दें, हे रघुनंदन प्राण पियारे। जाऊं....

जन्म-जन्म से भटक रहा हूं, ओस चाट कर तड़प रहा हूं।
जग के सुख में सिर्फ नशा है, भ्रमित बुद्धि करें लगते प्यारे। जाऊं....

अगर बिगड़ गया बुद्धि संतुलन, तब अज्ञान डालता डेरा।
मुक्ति न तब दु:ख से हो सकती,यत्न बहुत पर अंत में हारे। जाऊं....

हैं आनंद सिन्धु सुखरासी भजहिं राम चाहें कल्याना।
संकुल राम शरण जो आए,कष्ट मिटे हो गए सुखारे। जाऊं....

¼292½

असुरों का करिए सर्वनाश।
हे राम सियापति संतो की, तुम पर केवल अब टिकी आश।

आग्नेय अस्त्र शस्त्रों युक्त, सेना की टुकड़ी लिए साथ।
महलों में सजी सिंह हिरण खाल, मानवता की खा रहे मांस। असुरों ....

जो जहाँ वहीं पर लूट रहे, कोई बोले तो हर लेते प्राण।
नहीं मानते ये अनुजा तनुजा, लक्ष मात्र भोग इनका बिलास। असुरों....

इनके आतंक से काँप रहे,भारतीयता जिनको प्यारी है।
जो सबका भला चाहते हैं, सत्य करुणा का उर में निवास। असुरों....

कलियुग का यद्यपि प्रथम चरण, पर पाप से धरती हिलती है।
हे दीनबंधु मानवता हित, अब करें पापियों का बिनाश। असुरों....

असुरों के अत्याचारों से, जब -जब भारत माँ रोई है।
संकुल तब धर्म की रक्षा कर, मानवता का कीन्हा विकास। असुरों ....

¼293½

को रघुनाथ सरिस हितकारी।
रे मन मूढ़ छोड़ अब जड़ता, जाने की करले तैयारी।

जिनको मान रहा है अपना, अपना कभी नहीं हो सकते।
जिस दिन प्राण छोड़ दिया तन को, देंगे भवन से त्वरित निकारी। को....

जितने तेरे सगे संबंधी, अंतिम दर्शन को आएंगे।
कुछ पल छाएगी खामोशी, करेंगे फूल फिर शव पर वारी। को....

शव यात्रा में जाने वाले कुछ घंटों तक याद करेंगे।
पूरी तरह न लाश जलेगी, शुरू मसखरी दुनियादारी। को....

तेरहवीं हुई महीने बीते, फिर बरसी का उत्सव होगा।
मन किया पाप तू जिनके खातिर, याद न करेंगे कभी तुम्हारी। को....

दो दिन का जग का मेला है, प्राणी जोड़ राम से नाता।
संकुल कर्म करो कुछ ऐसा, करे याद यह दुनिया सारी। को....

¼294½

हे जगत नियंता रघुनंदन।
मैं अधम नीच अज्ञानी हूँ, स्वीकार करें मेरा वंदन।

जड़मति विषयों में उलझा हूँ, हित अनहित का प्रभु ज्ञान नहीं।
हे दीनबंधु इस पामर का, अब नाथ मुक्त कर दे बंधन। हे....

हे दीनबंधु करुणानिधान, तुम सा उदार संसार नहीं।
कर दिया मुक्त उनको प्रभु ने, जो शत्रु भाव से किया चिंतन। हे....

नहीं पास अमंगल आ सकता, जो राम नाम को लेते हैं।
ऐसा पावन है राम नाम, जीवन को कर देता चंदन। हे....

संसार में दु:ख से बचने का, कोई साधन है तो राम नाम।
जब नाम हृदय में बस जाए, नामी होगा निश्चित प्रसन्न। हे....

इस कलियुग में सच्चे मन से, जो राम शरण में आता है।
संकुल जीवन सत् मिल जाता, थम जाता माया का मंथन। हे....

¼295½

भज मन राम न कर आनाकानी।
क्षणभंगुर कलि का जीवन है, पता नहीं कब खत्म कहानी।

महल कार पुत्र अरु मेहरारू, पद पैसे पर गर्व न करिए।
काल फाँस कब गले डाल दे, बचा न सकता कोई प्रानी। भज....

पद कंचन कामिनी के मद में, मतवाले कभी यह भी सोचो।
पल-पल नष्ट हो रहा जीवन, जगत में रखें अपना पानी। भज....

मत गरीब का शोषण करिए, सुविधा शुल्क बंद कर दीजे।
दर्शन पढ़ कर बने अधिकारी, मगर कर रहे हो नदानी। भज....

दीन दुखी असहाय की सेवा, सभी धर्मों का सार रहा है।
परहित सरिस धर्म नहीं जग में, संत शास्त्र ऋषियों की वानी। भज....

रामचंद्र के शरण में आकर, मन से तज दीजे कुटिलाई।
मंगलमय होगा संकुल जीवन, मृत्यु भी हो जाएगी सुहानी। भज....

¼296½

उमरिया पल-पल घटती जाये।
मैं मेरा में उलझे मन को, राम भजन न भाये।

प्रबल आकर्षण भौतिक जग का, देता बना दीवाना।
शलभ त्यागता तभी दीप को, जब निज पंख जलाये। उमरिया....

बेटा बेटी अरू मेहरारू, जगत में जहाँ तक नाते।
सब मुँह देखी बातें करते, दुःख में काम न आये। उमरिया....

जड़ता से जब तक लिपटा है, आत्मबोध नहीं होगा।
आत्मज्ञान के बिना राम की, भक्ति नहीं हो पाये। उमरिया....

इस असार संसार में कोई, नहीं किसी का साथी।
सदा करें सत्कर्म जगत में, उर न किसी का दुखाये। उमरिया....

राम को जीवन करें समर्पित, कुछ भी नहीं हमारा।
संकुल उर को शांति मिलेगी, कर प्रयोग अपनायें। उमरिया....

¼297½

दयादृष्टि रघुपति बना करके रखना।
समझ सत्य मिथ्या की मुझमें नहीं है, सदा मेरा कल्याण रघुनाथ करना।

ये माया का बंधन बहुत ही प्रबल है, यहाँ भूल कर जाते हैं अक्सर ज्ञानी।
जगत से व्यथित हो चुका मेरा मन है, श्रीराम लीजे बना मुझको अपना। दयादृष्टि....

बदलती है क्षण-क्षण में तन की जरूरत, कभी भूख तो प्यास करती है घायल।
जरूरत की पूर्ति को जग प्यार कहता, कभी साँस घुटती कठिन बहुत रहना। दयादृष्टि ....

बदलता है मौसम समय इसका निश्चित, मगर आदमी का न कोई ठिकाना।
जिसे प्राणप्रिय मानकर करते पूजा, वही चाहता एक दिन प्राण हरना। दयादृष्टि....

श्रीराम भक्ति से बढ़कर जगत में, नहीं कुछ भी जग में जो संतोष दे दे।
अगर चाहते जग के दुःख से निकलना, पड़ेगा फिर रघुनाथ चरणों में पड़ना। दयादृष्टि ....

श्रीराम चरणों में यदि रति हमारी, तो बुद्धि न विचलित कभी भी हो सकती।
संकुल जिसने बुद्धि से मन बस में रखा, उसे दुःख को पड़ता कभी भी न सहना। दयादृष्टि ....

¼298½

सीतापति आश्रय सुखकारी।
दुनिया वाले बड़े मतलबी, निज तन पोषक स्वेच्छाचारी।

जिसने सहारा लिया राम का, दुःख सहने की शक्ति पाई।
जग के फीके लगे आकर्षण, समझ में आई दुनियादारी। सीतापति....

रंग बिरंगी इस दुनिया में, सजा हुआ बाजार निराला।
भरा पेट मुझे मिला न कोई, सब कहते अपनी लाचारी। सीतापति ....

कोई ग्रस्त है कंगाली से, दो रोटी में सिमटा जीवन।
किसी के पास अरब की संपत्ति, पर घेरे शुगर बीमारी। सीतापति....

कोई रोता पुत्र नहीं है, किसी को नारी दिखती नागिन।
कोई किसी से नहीं सुखी है, कारण कर्तव्य दिया बिसारी। सीतापति....

झूठे सारे जग के नाते, इनके लिए पाप मत करिए।
संकुल भजिए सदा राम को, जीवन होगा मंगलकारी। सीतापति....

¼299½

तुम बिन कौन कहूं जिसे मन की।
दुनिया वाले अदला–बदली, बस केवल करते हैं तन की।

राम सियापति हे रघुनंदन, जान रहे सब अंतर्यामी।
दुर्गुण त्याग नाथ सेवक के, दे दें भक्ति नाथ चरनन की। तुम....

सुत दारा जग के संबंधी, सब केवल मतलब के साथी।
सत् का मूल्य न कोई समझे, करते बात सिर्फ हैं धन की। तुम....

मन की प्यास प्रेम से बुझती, पर वह जग में कहीं नहीं है।
तुम्हें भूलकर जगत खोजना, गलती क्षमा नाथ पामर की। तुम....

ज्ञान इंद्रियों का सीमित है, भूल हो गई मुझसे भारी।
रघुनंदन अब शरण तुम्हारी, लाज न जाने पाए जन की। तुम....

मेरे एक तुम्हीं हो स्वामी, जगत ताप से नाथ बचाओ।
जड़मति विषय ग्रस्त संसारी, स्वीकार विनय करें संकुल की। तुम....

¼300½

मिलेंगे राम त्याग दो माया।
जब तक हृदय में बेईमानी है, करते राघवेंद्र नहीं दाया।

कर में माला फिरे जीभ भी, यद्यपि शब्द का कसरत करती।
पर मन में तो बसी रूपसी, व्यर्थ भजन में समय गंवाया। मिलेंगे....

गले में माला माथे पर चंदन, वस्त्र चाहे जिस रंग में रंग लो।
जब तक वास न सत्य हृदय में, राम कृपा नहीं कोई पाया। मिलेंगे....

धर्म सूक्ष्म है हृदय जानता, तन से करें न व्यर्थ देखावा।
कभी न धूमिल करें आचरण, धर्म सार संतों ने गाया। मिलेंगे....

राम सत्य हैं सत्य राम है, अलग कभी न इनको करिए।
जिनके उर में वास सत्य का,हृदय बसे उनके रघुराया। मिलेंगे....

सांच से बड़ा न कोई तप है, न कोई धर्म न साधन पूजा।
संकुल सत्य से प्रेम है जिनको, उन्हें ही रघुनायक अपनाया। मिलेंगे....

¼301½

दया करो मुझ पर रघुराया।
साधन रहित न प्रभु पद प्रीति, अब तक जीवन व्यर्थ गंवाया।

नश्वर जगत के रिश्ते नाते, सुख सुविधा संपदा ये सारी।
उर को शांति नहीं दे सकती, चाहे कर लो कोटि उपाया। दया....

समय गंवाया समझ हितैषी, पर जब दुःख ने डाला डेरा।
भाग गए जो भी थे अपने, दीन्हा छोड़ साथ भी छाया। दया....

बड़ी जटिलता है दुनिया में, ज्ञान इंद्रियों का है भ्रामक।
जगत प्रेम में फंसा जो तड़पा, निज स्वरूप पहचान न पाया। दया....

बिना तुम्हारे कृपा के राघव, अंत नहीं दुःख का हो सकता।
अब लीजे न नाथ परीक्षा,हे जगदीश शरण में आया। दया....

बहुत पतित तारे धरती पर, हे सर्वज्ञ भुवन के स्वामी।
संकुल का उद्धार कीजिए, अब रघुनाथ न ब्यापे माया। दया ....

¼302½

सत् शिव जगत एक रघुराई।
जब तक माया पड़ा आवरण, तब तक पड़ता द्वैत देखाई।

जड़ से चेतन चेतन से जड़, विद्वानों में सदा मतांतर।
अस्तु यहाँ हम यही मानते, जड़ से पहले चेतनताई। सत्....

प्रगट उसे कोई नहीं कर सकता, जिसको हम कहते हैं नाहीं।
तिल से तेल निकलता निश्चित, पर सिकता से न चिकनाई। सत्....

राम ब्रह्म हैं जिनके द्वारा, होता है जीवन का उद्गम।
परमतत्व परमारथ रुपा, अज अखंड निगमागम गाई। सत्....

ब्रह्म निर्गुण है मगर कठिन है, ज्ञान के द्वारा उसको साधे।
अस्तु भक्ति का मार्ग सरल है, बस उर से तज दें कुटिलाई। सत्....

भक्त भाव के वशीभूत हो, निर्गुण ब्रह्म शगुण हो जाता।
संकुल अहिल्या पड़ा चरन रज, पाहन गई चेतना आई। सत्....

¼303½

जगत में राम भक्ति है सार।
आश भरोस त्याग दुनिया से, मन कर प्रभु से प्यार।

कोई अपना नहीं जगत में, सब निज सुख के साथी।
जब तक घाव न होता उर में, नहीं होता ऐतबार। जगत ....

ज्ञान न जब तक उर में होता, मोह कभी न जाता।
मोह मूल है दु:ख का कारण, देता उलझा संसार। जगत....

अपना और पराया में, जब तक हम उलझे रहते।
आत्म उत्थान कठिन है तब तक, तजे संकीर्ण विचार। जगत....

ह्दय में रहे राम का चिंतन, करें जगत सत्कर्म।
कृपा राम की निश्चित होगी, पावन रहे आचार। जगत....

हर स्थिति में धैर्य न खोए, जग में कुछ नहीं स्थिर।
संकुल राम शरण जो आए, हुआ उनका निस्तार। जगत....

¼304½

सदा रहे चरणों में अनुराग।
नाथ दीजिए भक्ति पावनी, जो जीवन का पराग।

दीनदयाल सदा दया करना, नाथ हरें अज्ञान।
बिना तुम्हारी कृपा के राघव,तम सकता न भाग। सदा ....

एक पल भी नहीं उर से बिसरे, नाथ तुम्हारा ध्यान।
तन हो कहीं मगर ह्दय में, रघुपति रहे बिराग। सदा....

नाथ अविद्या को हर लीजे, दयादृष्टि अब करिए।
मुझ पामर का हे रघुनंदन, कभी न करना त्याग। सदा....

साधन रहित ज्ञान नहीं भक्ति, हूं माया आधीन।
नाथ मुक्त बंधन से करिए, जीवन बन गया आग। सदा....

राम सियापति हे रघुनंदन, अवगुण चित्त नहीं धरिये।
बना लीजिए संकुल अपना, रहा यही वर मांग। सदा....

¼305½

को दयालु जैसे रघुराई।
सहज अनुग्रह भक्त पर करते, देते दुःख दरिद्र नसाई।

भक्तवत्सल करुणा के सागर, राम सरिस नहीं कोउ जग माहीं।
शरण गए प्रभु अभय कर दिया, दिया दोष सारे बिसराई। को....

विपत्ति विभंजन रघुकुल नायक, कृपा बनी रहे सदा तुम्हारी।
राम सियापति हे रघुनंदन, महिमा अमित कौन सके गाई। को ....

दीनदयाल दया के सागर, नाथ भाव सदा पावन रखना।
देना शक्ति नाथ हृदय को, सत्पथ पड़ता रहे देखाई। को....

बहुत कठिन है परमतत्व को, तर्क के द्वारा जाना जाए।
अतः आस्था राम पर रखकर, निज कर्तव्य करें हर्षाई। को....

प्रेम के भूखे रघुनंदन है, सच्चा प्रेम कीजिए प्राणी।
संकुल जीवन सुरभित होगा, राम भजे दें छोड़ बुराई। को ....

¼306½

नाथ किनारे लगा दो नैया।
शरण तुम्हारे आया राघव, जीवन के हो तुम्हीं खेवैया।

हे जगदीश्वर अंतर्यामी, स्वीकार करें प्रार्थना हमारी।
जैसे भी हित हो सेवक का, वही कीजिएगा रघुरैया। नाथ....

आत्मा का हित करने वाला, तुम बिन और नहीं हो सकता।
भरा जगत है यह प्रपंच से, कोई मीत न कोई भैया। नाथ....

लघु जीवन तृष्णा में उलझा, अंधकार में भटक रहा है।
नाथ दया करि दिशा दीजिए, जग वाले होते भटकैया। नाथ....

जगत में सब मतलब के साथी, केवल उर का ताप बढ़ाते।
अब तो तुम्हीं उबारो राघव, मेरे पत के तुम्हीं बचैया। नाथ....

जिसने स्मरण किया हृदय से, चिंता पास न उसके आई।
संकुल पर सदा कृपा तुम्हारी, अब दो जगह नाथ निज पैंया। नाथ....

¼307½

रघुनंदन को प्रेम पियारा।
जिसने प्रेम किया राघव से, उसका हो गया वारा न्यारा।

ज्ञान ध्यान व्रत उपासना से, निश्चित सुगम प्रेम का मारग।
केवल पावन हृदय कीजिए, मिल जाएगा राम सहारा। रघुनंदन....

हृदय स्वच्छ जब हो जाता है, तभी विचार परिष्कृत होते।
जब विचार निर्मल हो जाते,बहती तभी प्रेम की धारा। रघुनंदन....

प्रेम धार जब उर में बहती, निज अस्तित्व बोध मिट जाता।
मिल जाती तब मुक्ति द्वैत से, हो जाता दु:ख से छुटकारा। रघुनंदन....

प्रेम राम से काम जगत के, तब आसक्ति पास नहीं आती।
हानि लाभ सुख-दु:ख द्वंदो से, मिल जाता है सहज किनारा। रघुनंदन....

निश्छल हृदय में प्रेम ठहरता, तज दीजे मन से कुटिलाई।
मंगलमय होगा संकुल जीवन, बाँध न सकता फिर संसारा। रघुनंदन....

¼308½

दीनबंधु जय-जय रघुराया।
हे करूणाकर जगत के स्वामी, करना नाथ दास पर दाया।

पड़ा हुआ इस महाकूप में, इधर-उधर बस टकराता हूं।
टूट गए जब जगत सहारे, हार कर नाथ शरण में आया। दीनबंधु....

विषय के सुख का मन अभ्यासी, सहज नियंत्रण में नहीं आता।
जब तक ज्ञान हृदय नहीं होता, नहीं छूट सकती है माया। दीनबंधु....

मैं पामर विषयों में उलझा, मूल्य समय का नहीं पहचाना।
पहुंच गया हूँ अस्ताचल में, पर करनी न कुछ कर पाया। दीनबंधु....

अब कृपाल अवगुण बिसारि कर, दे दें भक्ति नाथ जगपालक।
तुम बिन और नहीं भूतल पर, दीनों को जिसने अपनाया। दीनबंधु....

राम सियापति हे रघुनंदन, तुम बिन और न मेरा कोई।
संकुल कृपा सदा सेवक पर, नाथ बनाए रखना छाया। दीनबंधु....

¼309½

प्रभु बिन कौन कहूं जिसे अपना।
मैं मूरख अब तक नहीं समझा, देख रहा जो कुछ है सपना।

चित्र जगत के बनते बिगड़ते, अब तक रहा मैं इनमें उलझा।
हुआ न चिंतन अब तक सत् का, व्यर्थ जिंदगी सीखा करना। प्रभु....

मैं मेरा से निकल न पाया, यद्यपि लगे अनेकों ठोकर।
झूठी माया झूठी काया, सीखा मंत्र इसी का जपना। प्रभु....

सीमित दायरा मन बुद्धि का, दूर दृष्टि नहीं इनकी जाती।
सच को नेत्र देख नहीं पाते, होता शुरू यही से गिरना। प्रभु ....

जब तक प्रेम न रघुनंदन से, मोह से मुक्ति नहीं मिल सकती।
कुछ भी कर लो इस दुनिया में, पर संतोष नहीं है मिलना। प्रभु ....

मेरी भूल क्षमा कर रघुवर, नाथ शरण अब अपनी लीजे।
संकुल मुक्त करें बंधन से, दीनदयाल कष्ट मेरे हरना। प्रभु....

¼310½

सर्वज्ञ हरे अब भव की भीर।
वह शक्ति दीजिए रघुनंदन, मन हो न कभी मेरा अधीर।

सांवरि सूरत मोहनी मूरत, यह नाथ हृदय सदा बसी रहे।
विचलित न स्वप्न में भी हो मन, कृपा करना मुझ पर रघुवीर। सर्वज्ञ....

मन चंचल है नहीं बस में है, यह जग में मुझे नचाता है।
चंचल चित्त को कर दें स्थिर, दें रोक नेत्र बह रही नीर। सर्वज्ञ....

मैं तो हूँ केवल निमित्त मात्र, जीवन के प्रभु संचालक हो।
जैसा भी हूँ उस पार करो, सह जाती अब यह नहीं पीर। सर्वज्ञ ....

छल छद्म स्वार्थ दुनिया में, मैं खोज रहा था मन की शांति।
पावक की पृथक-पृथक आकृति, झुलसा देती केवल शरीर। सर्वज्ञ....

संसार से हो करके निराश, अब शरण तुम्हारे रघुनंदन।
संकुल की बना दीजे बिगड़ी, जय राम सियापति जगत वीर। सर्वज्ञ....

¼311½

राम नाम की महिमा न्यारी।
पाप छोड़ा देती पापी से, सुआ पढ़ावत गणिका तारी।

सहज प्रकाश है राम नाम में, प्रथम स्मरण अति कठिनाई।
पर मन में जब रघुपति बसते, जाती भूल ये दुनिया सारी। राम....

धीरे–धीरे चंचल मन को, राम नाम स्थिर कर देता।
जिनके लिए पाप करते रहे, लगती वे चीजें नहीं प्यारी। राम......

सुत वित्त भवन नारि संबंधी, सबका असली रूप दिखाता।
निज करनी पर लज्जा आती, व्यर्थ जिंदगी कर दिया सारी। राम....

रिश्ते नाते सगे संबंधी, सब अपने मतलब के साथी।
अंत सहारा सिर्फ राम का, झूठी है ये दुनियादारी। राम....

कभी नहीं कर्तव्य से भागे, पर मन में दृढ़ निश्चय कर लें।
संकुल सुमिरे सदा राम को, नहीं किसी को करें दुखारी। राम....

¼312½

राम नाम त्रय ताप नसावन।
जो छल छोड़ भजा रघुपति को, ताकर जीवन हो गया पावन।

चाह जगत की सब मिट जाती, नहीं कामना पास में आती।
परमानंद जिसे श्रुति कहती, कोई नहीं सका कर गायन। राम....

अमित प्रभाव है राम नाम का, चहुं युग शास्त्रों में विस्तारा।
लिया सहारा राम नाम जो, सका न विचलित कर जग कानन। राम ....

जो अव्यक्त व्यक्त करने की, नहीं जगत में किसी की क्षमता।
सो है राम जासु चिंतन से, आत्मप्रकाश हृदय में आवन। राम ....

ब्रह्म सच्चिदानंद जगत हित, धरि साकार रूप को लेता।
मानवता की रक्षा करता, जग में करता चरित्र सुहावन। राम ....

राम नाम निर्मल उर करके, पाप से मुक्ति दिला देता है।
आचरण शुद्ध बनाने वाला, राम नाम संकुल मन भावन। राम....

¼313½

जय शरणागत भवभय हारी।
त्राहिमाम जय रघुकुल नायक, नाथ हरें अब व्यथा हमारी।

राम रमापति जय रघुनंदन, नाथ अनुग्रह दास पर करिए।
अनंत काल से भटक रहा हूँ, अब आया हूँ शरण तुम्हारी। जय....

नाथ दया सेवक पर करके, अब कल्याण मेरा कर दीजे।
अनुचित उचित का ज्ञान नहीं है, सत्पथ पर ले चलें खरारी। जय....

सह जाती अब नहीं वेदना, किससे कहूं कोई नहीं अपना।
दीनदयाल दया अब करिए, तुम बिन को दीनन हितकारी। जय....

विघ्न विनाशक हे रघुनंदन, तुम ही तात मेरे हो माता।
मुझ पामर का कष्ट हनन करें, कृपानिधान वेदना भारी। जय....

राम सियापति हे जगपालक, सदा रहें अनुकूल भक्त पर।
संकुल का कल्याण कीजिए, नाथ मिटा दीजे लाचारी। जय....

¼314½

जगत के तुम हो पालनहार।
हे अविनासी घट-घट वासी, आया हूँ तेरे द्वार।

जड़मति विषयों में उलझा हूँ, मैं मूरख अज्ञानी।
रघुनंदन अब दया दृष्टि कर, हर लें विषय विकार। जगत....

अंतर्यामी हे करुणाकर, नाथ न करें देरी।
सांसारिकता के पाट में पिस रहा, नाथ क्लेश अपार। जगत....

अनुकंपा जिस पर कर देते, हो जाता है महान।
बिना तुम्हारे कृपा के राघव, नहीं जग से उद्धार। जगत....

जड़ को चेतन करने वाले, अज अखंड अखिलेश्वर।
नाथ हरें संताप दास के, विनती बारंबार। जगत....

जगत पिता हे रघुकुल भूषण,नाथ शरण में लीजे।
संकुल के अवगुण बिसारि कर, कर दें बेड़ा पार। जगत....

¼315½

सदा नाथ भक्तों पर करते हो दाया।
जगत में नहीं जिसका कोई सहारा, श्रीराम ने उसको उर से लगाया।

नहीं मान अपमान की करते चिंता, भगत के सदा बस में रहते खरारी।
पुराणों में अगणित कथाएं भरी हैं, जिन्हें संत ऋषियों अरु कवियों ने गाया। सदा....

श्री राम भक्ति बहुत ही सरल है, बस केवल हृदय की मलिनता मिटा दें।
करें प्रेम राघव से तज कामना को, यही सार दर्शन समझ मेरी आया। सदा....

निष्काम प्रेम राघव यही होती भक्ति,यह जीवन करें रामजी के हवाले।
निश्चित शांति उर को मिलेगी न संशय, ऐसे भक्त को रामजी ने अपनाया। सदा....

भक्तवत्सल करुणा दयासिंधु राघव, शरण में गया कर दिया अभय उसको।
दया दृष्टि जिस पर हुई रामजी की, नहीं पास उसके आ सकती फिर माया। सदा....

प्रंपचात्मक जगत में जो सुंदर दिखाता, वही एक दिन दुःख का कारण बन जाता।
संकुल तर्क से सत् नहीं खोज सकते, शरण राम की मुक्ति का बस उपाया। सदा....

¼316½

रघुपति चरण ध्यान अब दीजे।
सीताराम चरित्र सुखदायक, हृदय गभ्य मनवा कर लीजे।

इस असार संसार के अंदर, ऐसा कोई तत्व नहीं है।
जिसको पाकर मिटे रिक्तता, अतः अनैतिक कर्म कीजे। रघुपति....

सदा करें कर्तव्य का पालन, हानि लाभ चिंता मत करिए।
जग से कभी व्यथा मत कहिए, गरल को भी हंसकर पी लीजे। रघुपति....

सीताराम चरण रति केवल,राग द्वेष को सदा त्याग दें।
जिस स्थिति में रघुपति रखें, कभी नहीं हम उससे खीजे। रघुपति....

पावन रखिए सदा आचरण, कभी नम्रता को न छोड़े।
सुख-दुःख तो आवन-जावन है, पर उपकार सर्वदा कीजे। रघुपति ....

क्या पाया अरु क्या खोया है, महत्वपूर्ण ये कभी नहीं है।
संकुल जगत कहे मत सोचो, अपनी दृष्टि सही कर लीजे। रघुपति....

¼317½

रघुपति भक्ति सकल दुःख नासक।
मन प्रपंच अब छोड़ जगत के, बन सीतापति चरण उपासक।

मन तेरी परिधि जहाँ तक जाती, सार तत्व उससे है बाहर।
थक जाएगा भाग दौड़ कर, मिलेगा न कुछ भी सुखदायक। रघुपति....

जब तक आसक्ति है जड़ से, ज्ञान न उर में टिक सकता है।
बिना ज्ञान के अंधकार में, होता कोई नहीं सहायक। रघुपति....

यद्यपि पथ अनेक धरती पर, चाहे तू जिसको अपना ले।
पर विश्राम नहीं मिल सकता, जब तक मोह रहेगा शासक। रघुपति....

जगत ताप से अगर निकलना, तो केवल एक मार्ग सुहावन।
आस भरोस त्याग दुनिया से, भज रघुनाथ जगत प्रतिपालक। रघुपति....

निश्चित मन तुझे शांति मिलेगी, श्री रघुनाथ शरण में आजा।
संकुल राम समर्पित जीवन, कभी न होगा पीड़ादायक। रघुपति ....

¼318½

धीरज धर मन सुमिर रघुनंदन।
छंट जाएगी घिरी अंधेरिया, होगा अंशुमाली का दर्शन।

राम सहारा जो लेता है,सिर न कभी उसका झुक सकता।
हो जाए चाहे दुनिया बैरी, कर सकती न लाज का हरन। धीरज....

जो लेता मानव का सहारा, पड़ता है उसको पछताना।
बिकता आया मनुज आज तक, अलग-अलग कीमत सबकी धन। धीरज....

दुःख में मनुज से मदद न मांगो, अपने ऊपर करो भरोसा।
अधिकारी नौकरी ले लेता, होता श्वान सा पापी का मरन। धीरज....

बेईमानों को बनाकर आदर्श, जीवन में मत आगे बढिए।
सत्कर्म ही है मार्ग मुक्ति का, देता छोड़ा ये सारे बंधन। धीरज....

हृदय में चिंतन रहे राम का, काल न बाल बांका कर सकता।
संकुल दृढ़ विश्वास राम पर, हर लेंगे प्रभु सारा क्रंदन। धीरज....

⁽319⁾

रघुनंदन करिए कष्ट हरन।
पाहिमाम् जय करुणासागर, पड़ा हुआ हूँ तेरे चरन।

मद मोह क्रोध से भरी हुई है, हे नाथ सुलगती छाती है।
हे दीनबंधु करणानिधान, पापों का मेरे करें छरन। रघुनंदन ....

दुनिया के मेले में रघुवर, अब तक मैं यह न जान सका।
किस चीज का सौदा यहाँ करूं, जिसका होता है नहीं मरन। रघुनंदन....

इंद्रिय आकर्षण में फंसकर, पशु सा चर जीवन व्यर्थ किया।
जब उतर रही संध्या देखी, तुलसी के आए याद बचन। रघुनंदन ....

अब तो कृपाल कर दया दृष्टि, मूरख का हर लीजे अज्ञान।
जैसे भी हो कल्याण मेरा, हे जगत नियन्ता वही करन। रघुनंदन ....

हे परम ब्रह्म हे परमेश्वर, रघुनायक घट-घट के वासी।
संकुल का जीवन सफल करें, लीजिए नाथ अब अपनी शरन। रघुनंदन....

⁽320⁾

को रघुनाथ सकइ छवि गाई।
गिरा गणेश सुरेश दिनेश, सके न बरनि हरि सुंदरताई।

काम सुमन सायक के बल पर, सकल जगत अपने बस कीन्हा।
तासु दहन शिव करने वाले, रघुपति पद दिया शीश झुकाई। को....

मोहनी मूरति लखि रघुपति की, तज विष देत विषैले प्राणी।
जो यह रूप स्वप्न में देखा, उसने छोड़ दिया जड़ताई। को ....

वृक्ष लता खग मृग लखि प्रभु को, प्रमुदित मगन देह सुधि नाहीं।
वैर बिसारि सिंह शशकन् संग, राम बिलोकि नयन भरि जाई। को....

भौतिक जगत में कुछ नहीं ऐसा, राम रूप से उपमा पाये।
अतुलनीय प्रभु रूप मनोहर, मन मलीनता देत मिटाई। को....

अवर्णनीय सुख देने वाला, राम रूप ऋषि मुनि मन भावन।
संकुल हृदय राखि यह मूरति, बिचरहिं जग दें भय बिसराई। को....

¼321½

भुवन में मतलब का व्यापार।
राम के सिवा न कोई अपना, मिथ्या है संसार।

छल अरु छद्म से भरा जगत है, सब स्वार्थ के मीत।
हुई जरूरत जैसे पूरी, लुप्त हो जाता प्यार। भुवन....

भाव संवेग संचालित जीवन, पल भर नहीं ठहरता।
अस्तु बिगड़ते बनते रिश्ते, देते समय गुजार। भुवन ....

दु:ख में साथ न कोई देता, जग का वास्तविक रूप।
फिर भी मोह न इनसे जाता, स्यात् सृष्टि का धार। भुवन....

नदी की धारा में जो बहते, पता नहीं कहाँ जाते।
कभी नहीं हम चिंतन करते, क्या जीवन आधार। भुवन....

दुनिया है बाजार संभल कर, करिए सच्चा सौदा।
संकुल राम नाम पारस मणि, जीव का है श्रृंगार। भुवन

¼322½

बंदउं इष्टदेव के चरना।
राम सियापति हे जगदीश्वर, संशय मोह सकल भ्रम हरना।

युग-युग से शापित प्रताड़ित, गौतम तिय पतिव्रता नारी।
पद रज परस रूप निज पावा, प्रभु सिर नाय गई निज भवना। बंदउं....

जिन पद की पादुका पूजि कर, भरत कीर्ति त्रिभुवन में छाई।
सोइ पद धोइ धन्य भयो केवट, तासु प्रभाव जात नहीं बरना। बंदउं....

शिव बिरंचि सनकादिक सुर गण, जासु चरन में ध्यान लगावें।
सोइ पद जिन्हें ध्यान जो धरता, होता नहीं जगत में गिरना। बंदउं....

जाकर नाम हृदय धरने से, कभी पास अज्ञान न आता।
तासु चरन में सदा रहे रति, दीनदयाल भाव उर भरना। बंदउं....

मैं जड़मति संसार भटक रहा, दीजे जगह चरण में स्वामी।
संकुल रघुपति नहीं भूलना, सदा अनुग्रह दास पर करना। बंदउं....

¼323½

जानकी नाथ रघुनाथ करुणाकरम्।
नाथ सेवक को वरदान यह दीजिए, टूट अज्ञान का जाए मेरा भरम्।

नेत्र जो देखते अरु सुना जो श्रवण, हम उसी में लगे नाथ सत् खोजने।
इंद्रिये पूर्ति सुख में भटकते रहे, अब कहूं आ रही नाथ मुझको शरम्। जानकी....

देह आकर्षण का नाथ जादू प्रबल, ज्ञानियों को भी इसने न बख्शा कभी।
इसका करना दमन नाथ यद्यपि कठिन, पर दिशा देना मुझको लगा सुंदरम्। जानकी....

आप तो जानते नाथ जन–जन की है, क्या कहूं आपको ज्ञात मेरी व्यथा।
बस दयासिंधु इतनी कृपा कीजिए, ताप से नाथ उर हो कभी न गरम्। जानकी....

नाथ इतना नहीं मुझमें सामर्थ है, हर परिस्थिति का मैं कर सकूं सामना।
इतनी शक्ति कृपासिंधु देना मुझे, कर सकूं जिससे निर्वाहन अपना धरम्। जानकी....

बाँध पाए न माया का बंधन मुझे, तन कहीं पर रहो मेरे चिंतन में तुम।
नाथ संकुल का संताप करके हरण, दो बता इस जगत का सही जो मरम्। जानकी....

¼324½

नाथ हरहु अब व्यथा हमारी।
नहीं दयालु तुम सा दुनिया में, दीनबंधु दीनन् हितकारी।

हे रघुनंदन जग प्रतिपालक, नाथ दया सेवक पर कीजे।
मेरे दोष हृदय न धरिए, कृपा बनी रहे सदा तुम्हारी। नाथ....

नहीं गरीब का कोई साथी, दुनिया वाले हंसी उड़ाते।
लाज मेरी न जाने पाए,नाथ जगत में हो न ख्वारी। नाथ....

कंटक से चुभे जगत के नाते, घर बाहर कहीं मिली न राहत।
दुष्टों का बाहुल्य जगत में, सज्जन कहे किसे लाचारी। नाथ....

लूट मची है आज देश में, एक से बढ़कर एक खिलाड़ी।
खो दिया है ईमान सभी ने, संत्री मंत्री अरु अधिकारी। नाथ....

ऐसी घोर विषम स्थिति में, रघुनंदन मेरी रक्षा करिए।
दया कीजिए अब संकुल पर, काटो कष्ट नाथ यह भारी। नाथ....

⁽325⁾

यम की त्रास हरहु रघुराई।
जन्म मरण की मिटा दो पीड़ा, जगत ताप अब सहि न जाई।

जन्म ही होता दु:ख का कारण, व्याधि जरा प्रिय मिलन वियोगा।
बरबस जीव को सहना पड़ता, कर्म प्रधान नीति श्रुति गाई। यम....

बिना कर्म के फल को भोगे, मिल सकता न कभी छुटकारा।
इस प्रकार कर्मों के फल में, जाने कितने जन्म गंवाई। यम....

बहुत दिनों से भटक रहा हूँ, अब कृपाल हरो व्यथा हमारी।
रघुनंदन कोई रोग न व्यापे, ऐसी दे दो नाथ दवाई। यम....

चौपाया सा मेरा जीवन, ज्ञान ध्यान साधना रहित हूँ।
दीनदयाल दया अब करिए, लीजे अपने चरण लगाई। यम....

तुम बिन कोई नहीं हमारा, अवलंबन दो जग के स्वामी।
नाथ अनुग्रह कर संकुल पर, लीजे अपना दास बनाई। यम....

⁽326⁾

धन्य अवध रघुपति राजधानी।
निर्मल नीर बहत सरजू की, महिमा अमित न जाए बखानी।

यहाँ पर जन्मे भूप हरिश्चंद्र, सत्यवादी ऐसा नहीं कोई।
राज पुत्र भार्या को त्यागा, अमर जगत में हुई कहानी। धन्य....

नृप दिलीप ने की गौ सेवा, हो प्रसन्न नंदनी दिया वर।
धूमिल कभी कीर्ति न करिए, देह तो सबकी एक दिन जानी। धन्य....

भरत से जन्मे यहाँ तपस्वी, ऐसा त्याग धरा पर नाहीं।
जपा राम का नाम जगत ने, रघुपति नाम भरत उर आनी। धन्य....

अवध सी पावन भूमि नहीं है, मनुज रूप आए नारायण।
जो इस भूमि का दर्शन करते, मिलती शांति कहें अस ज्ञानी। धन्य....

महिमा न्यारी अवधपुरी की, दिया संदेश त्याग मानवता।
संकुल वंदन उस मिट्टी को, राम कथा की जहाँ निशानी। धन्य....

¼327½

आकुल दरस नेत्र रघुराई।
दर्शन दीजे अब रघुनंदन, विरह वेदना सहि नहीं जाई।

चाह मिट गई सब दुनिया की, नहीं कामना कोई बाकी।
बस एक बार दया कर राघव, दीजे निज माधुर्य देखाई। आकुल....

चित्र हो गए सारे धूमिल, अब तक जो थे मन को भाते।
बड़ी मतलबी यह दुनिया है, कल्पना भी न वहाँ तक जाई। आकुल....

मन बावरा जगत में भटका, नहीं मिली कहीं इसको राहत।
अब तो बहुत थक गया स्वामी, जीवन भार न जात उठाई। आकुल....

दीनबंधु संतन् के रक्षक, व्याकुल मन को धैर्य बंधावे।
जो अनाथ असहाय जगत में, उनके केवल तुम्हीं सहाई। आकुल....

एक लालसा पूरी कर दो, प्राण चाहे मेरा अभी ही ले लो।
संकुल जगत जली अखियन को, दो रघुपति ठंडक पहुंचाई। आकुल....

¼328½

ब्रह्म अनिश्चित हैं रघुराई।
सदा अनिश्चित से ही निश्चित, जग में गति पड़ती दिखलाई।

मन वाणी बुद्धि से परे हैं, राम अतर्क एक अविनाशी।
हैं असीम उनसे चेतनता, असत् जगत सत् सा होय जाई। ब्रह्म....

नाम अनेकों दिया ऋषियों ने, अपने-अपने ढंग से गाया।
परंतु यह माना तत्व एक है, नाम भेद दीन्हा बिसराई। ब्रह्म....

विज्ञान सिद्ध नहीं कर सकता, अतेंद्रीय होता जो अनुभव।
दृढ़ विश्वास राम के ऊपर, देता उर से द्वंद्व भगाई। ब्रह्म....

जब तक मन में संशय रहता, प्राप्त अभीष्ट नहीं हो सकता।
सशंय तजि रघुपति शरण आयें, प्राणी यदि चाहते भलाई। ब्रह्म....

सृष्टि का सूत्राधार एक है, वाणी व्यक्त नहीं कर सकती।
संकुल यह सिद्धांत मानकर, जग में सबकी करें भलाई। ब्रह्म....

¼329½

रघुपति भजन राम विश्वासा।
नहीं भरोसा करें मनुज पर, देते झूठी सदा दिलासा।

रघुनंदन को हृदय में रखकर, आत्मविश्वास कभी न खोएं।
चिंतन करके निर्णय कीजे, नहीं किसी से कीजे आसा। रघुपति....

बड़ा विचित्र स्वभाव मनुज का, केवल इसको निज हित प्यारा।
सत्यमेव जयते लगाकर बिल्ला, सत्य के खून का रहता प्यासा। रघुपति....

हितू जिसे अपना समझोगे, वही एक दिन देगा धोखा।
अस्तु न निज दुःख कहे किसी से, धैर्य धरें दे छोड़ निरासा। रघुपति....

लेता जो रघुनाथ सहारा पतन नहीं उसका हो सकता।
दर्शन का सारांश यही है, ज्ञान मिटाता सभी पिपासा। रघुपति....

राम नाम का करें संकीर्तन,अंत कष्ट का निश्चय होगा।
संकुल विनय न सागर मानी, तब रघुनाथ धनुष लिया पासा। रघुपति....

¼330½

दीनन् के रघुनाथ सहाई।
मन मूरख प्रंपच त्याग कर, भज दयालु कोमल रघुराई।

एक बार जो राम नाम ले, अहित नहीं उसका हो सकता।
ऐसे कृपासिंधु रघुवर को, भज मन जग की आस बिहाई। दीनन्....

जीवन कर रघुपति को समर्पित, नहीं जगत में किसी से डरिए।
मृत्यु अटल है मृत्यु के भय से, पापी को नहीं शीश झुकाई। दीनन्....

गृहस्थ धर्म अत्यंत कठिन है, पग-पग पर मिलती है चुनौती।
घबराकर पीछे मत हटिए, दुष्ट से दुष्टता करे भलाई। दीनन् ....

दृढ़ आस्था रघुनाथ पर रखकर, कर्तव्य पथ से कभी न भागे।
जगत में कुछ भी सत्य नहीं है, एक दिन छूट यहाँ सब जाई। दीनन्....

खुद को हीन कभी न समझो, स्वयं को मान ब्रह्म अविनासी।
संकुल सुमिरो सदा राम को, बेड़ा देंगे पार लगाई। दीनन्....

¼331½

भव भय हरण नाम रघुराई।
जो श्री राम हृदय में जपते, रघुपति पड़ते पास देखाई।

राम नाम जो स्मरण करते, मन में शुचिता आ जाती है।
मन की जैसे मिटी कलुषता, जीवन में सुंदरता आई। भव ....

नाम में जब चित्त खो जाता है, नामी की दिख जाती आकृति।
मिल जाता संतोष हृदय को, पुलकित रोमावलि होय जाई। भव....

क्षण भर में प्रकाश की किरणें, वर्षो के तम को हर लेती।
इसी तरह से राम नाम भी, जीवन से करे दूर बुराई। भव....

जैसे भूल से अग्नि पकड़ लो, तो केवल वह घाव ही देती।
इसी तरह से राम नाम भी, देता सत् का बोध कराई। भव....

सत्य बोध जिसको हो जाता, परमानंद उसे मिल जाता।
संकुल जीते जी धरती पर, मुक्त पुरुष वह ही कहलाई। भव ....

¼332½

भज मन राम-राम सुखधाम।
बिना राम के शरण में आए, नहिं परिपूरण काम।

कोई सुखी नहीं धरती पर, जब तक है जंजाल।
बिन त्यागे आशा तृष्णा को, सुख नहीं जतन तमाम। भज....

बड़ी चमक माया नगरी में, दृष्टि काम नहीं करती।
यह लूं वह लूं यही सोचते, घिर आती है शाम। भज....

पल-पल बदल रही दुनिया में, व्यर्थ जगत के नाते।
मोह मूल है दु:ख का कारण, तज भज ले अब राम। भज....

कोई साथी नहीं किसी का, सब है चतुर खिलाड़ी।
सदा सावधानी को बर्ते, हृदय रहे हरि नाम। भज....

पशु से बदतर मनुज आज का, भाछाभछ सब खाता।
संकुल लीजिए राम सहारा, मिलेगा चिर विश्राम। भज....

¼333½

जानकी नाथ रघुनाथ आया शरन।
पार संसार सागर से मुझको करें, कीजिए नाथ कष्टों का जड़ से हनन।

आस जब तक जगत से नहीं टूटती, घाव होता हृदय में भयंकर नहीं।
दिखती आदमी की जब तक न असली शकल, भूल तब तक करता रहता अक्सर ये मन।

आज का आदमी केवल खुदगर्ज है, इस पर विश्वास की भूल करता रहा।
जब जख्म पर जख्म गिर पड़ भूमि पर, याद आई तुम्हारी तब सीता रमन। जानकी....

ऐसा कुछ भी नहीं गर्व जिस पर करूं, कंकड़ पत्थर संग्रह में गई जिंदगी।
व्यर्थ जीवन किया न किया सत्कर्म, आखिरी है समय अब पड़ हूँ चरन। जानकी....

आन उसकी जगत में कभी न गई, जिस पर कृपा तुम्हारी रही रामजी।
मान मेरा जगत में बचाओ प्रभु, नाथ अब होने पाए न मेरा पतन। जानकी ....

मैं अधम ही सही पर तुम्हारा सदा, करनी पर ध्यान देना न मेरी प्रभु।
संकुल के बल तो रघुनाथ केवल हो तुम, पास आएगा भय अब कभी न सपन। जानकी....

¼334½

दुनिया एक मुसाफिर खाना।
सत्कर्म और राम का चिंतन, अंत में काम इसी को आना।

कोई तैयार खड़ा जाने को, कोई जुटा कर रहा तैयारी।
लगा हुआ है आना-जाना, नियम जगत का बहुत पुराना। दुनिया....

क्या जाएगा साथ हमारे, निर्णय स्वयं को करना पड़ता।
निश्चित ज्ञान गुरु दे सकता, पर चलकर होता है पाना। दुनिया ....

मृत्यु वही होती है सुंदर, जिसका चिन्ह रहे भूतल पर।
जो यह कार्य किया धरती पर, पड़ता नहीं उसे पछताना। दुनिया....

रोओ मत जो चला जा रहा, सोचो कल मेरी भी बारी।
नश्वर तन कब धोखा दे दे, पाप न करें भजें भगवाना। दुनिया....

सोना चाँदी नोट के बंडल, बेटा बेटी अरू मेहरारू।
संकुल पद पुरस्कार इमारत, छूटेगा सब माल खजाना। दुनिया....

¼335½

बिगड़ी दीजे नाथ बनाई।
मन बावरा विषय में फंसकर, जीवन दिया बिताई।

पशु सम भरा उदर दुनिया में, कुछ करनी नहीं कीन्हा।
दीनदयाल कृपा कर मुझ पर, लीजे अब अपनाई। बिगड़ी....

तुम बिन कौन जगत में स्वामी, जिसे निज व्यथा सुनाऊं।
स्वारथ के संसार में प्रभु बिन, नहीं कोउ मेरा सहाई। बिगड़ी....

कृपानिधान न कोई तुम सा, जिसको दीन पियारे।
दीनबंधु हरि हर लो पीड़ा, दर्द न अब सहि जाई। बिगड़ी....

जीवन तुम्हें समर्पित रघुपति, अब मेरे कष्ट मिटाओ।
भवसागर से पार कीजिए, दया करें रघुराई। बिगड़ी....

राम सियापति हे जगदीश्वर, विनती सुनों हमारी।
संकुल मुक्त करें चिंता से, भय न पास सके आई। बिगड़ी....

¼336½

मन भज ले सीताराम।
जीवन को परिपूर्ण बनाता, रघुनंदन का नाम।

परम शांति को देने वाला, सब शास्त्रों का सार।
राम नाम जो जपा हृदय में, मिट गए कष्ट तमाम। मन....

मन चंचल तू नहीं ठहरता, सदा भागता रहता।
उलझ सतह की चमक पर जाता, दुःख जिसका परिणाम। मन....

पूर्ण न होती देह रिक्तता, कितना जोर लगाओ।
जब तक उर संतोष न आता, नहीं मिलता विश्राम।मन....

इस संसार में यदि कुछ दुर्लभ, तो वह केवल ज्ञान।
ज्ञान यही नश्वर जीवन में, कीजे अच्छा काम। मन....

सीताराम हृदय जो जपते, उर प्रकाश आ जाता।
संकुल मुक्त जगत से होते, जाते प्रभु के धाम। मन....

¼337½

जय जनक सुता जय रघुराई।
जो शरण राम के हो जाते, चिंता न पास उनके आई।

कामना पूर्ण हो जाती है, रह जाता कुछ भी शेष नहीं।
जो राम सहारे हो जाते, दु:ख से वे ही मुक्ति पाई। जय ....

सबका जो परम प्रकाशक है, अव्यक्त न वाणी कह सकती।
साकार ब्रह्म रघुनंदन हैं, भज प्राणी तज दे कुटिलाई। जय....

जो त्याग जगत की आशाएं, उर में रघुनाथ को भजते हैं।
उनके न काम जग में बिगड़े, होते श्री राम हैं सहाई। जय ....

गंधर्व देवता ऋषि मुनि गण, रघुपति को शीश झुकाते हैं।
श्री राम कृपा के ही बल पर, पहचान जगत में वे पाई। जय....

घिर जाए अंधेरा जब मन में, बुद्धि विचलित न काम करे।
आत्महत्या न सोचे संकुल, औषधि श्री राम लें अपनाई। जय ....

¼338½

प्रेम से द्रवे सहज भगवाना।
लगन लगी जब राम दरस को, जीवन में हुआ नया बिहाना।

नहीं प्यास बुझ सकी विलोचन, नारि दृश्य देखे बहु सुंदर।
जब तक ज्ञान न परम सौंदर्य, मुश्किल प्यास उर की बुझ पाना। प्रेम....

सीताराम मोहनी मूरति, एक बार जो भी बिलोकि ले।
परमानंद उसे मिल जाता, मुश्किल वाणी से कह पाना। प्रेम ....

विषय के सुख होते कुछ पल के, बार-बार उनमें मन जाता।
इसी की पूर्ति करते करते, अक्सर जीवन का मिट जाना। प्रेम ....

धरा पर मुश्किल मानव जीवन, पाकर जो चिंतन नहीं करता।
उच्छृंखल महि विचरण करता, व्यर्थ धरा पर उसका आना। प्रेम....

सहज कृपा सेवक पर करते, राम सरिस कोउ हुआ न होगा।
संकुल ऐसे रघुनंदन का, चिंतन दरस हरे दु:ख नाना। प्रेम....

¼339½

ज्ञान से बड़ा न कोई दान।
ब्रह्म अखंड एक रघुनंदन, कृपासिंधु भगवान।

ब्रह्म सच्चिदानंद राम हैं, एक और नहीं कोई।
परम शांति उनको मिल जाती, जो लेते यह जान। ज्ञान....

राम चरण में जिनकी रति है, शरणागत हो जाते।
सत्कर्म और राम का चिंतन, करता मुक्त जहान। ज्ञान....

तीरथ व्रत अरू किया न पूजा, न किया ब्राह्मण भोज।
रिश्वत ली न किया बेईमानी, धन्य न उस सम आन। ज्ञान ....

जिसका अंत:करण स्वच्छ है, बुरा न किसी का करता।
कृपा राम की उस पर होती, कहते संत सुजान। ज्ञान....

एक राम की करें साधना, द्वैत में कभी न पड़िए।
संकुल अंत दुखों का होगा, अजमा करके मान। ज्ञान....

¼340½

रघुपति भजहिं मोह भ्रम हारी।
अनासक्त करें कर्तव्य पालन, अवश्य करेंगे प्रभु सुखारी।

व्यक्ति स्वर्ण हर वस्तु की कीमत, इस दुनिया में निश्चित होती।
ऐसा कुछ भी नहीं जगत में, जिसकी हो न सके खरीदारी। रघुपति....

शत्रु मित्र नहीं कुछ स्थाई, स्वार्थ निर्धारण इनका करता।
रंग बदलते सारे रिश्ते, समझ से परे है दुनियादारी। रघुपति....

अपना सुख ही सभी खोजते, न्याय नियम ताखे पर रखकर।
शोषण जो गरीब का करता, अब समाज आरती उतारी। रघुपति....

जग विश्राम नहीं मिल सकता, यह वह चाहे कुछ भी पा लो।
झूठी है माया की नगरी, पकड़ न सकती बुद्धि हमारी। रघुपति....

प्रेम डोर बाँधे रघुपति से, जो चाहे आपन कल्याना।
संकुल सुमिरै हृदय राम को, छंट जाएगी सब अंधियारी। रघुपति....

¼341½

राम सम नहीं कोउ दीनदयाल।
मन मूरख ऐसे रघुवर को, भज अब तज जंजाल।

बिन सेवा जो सहज भाव से, कृपा दीन पर करते।
जो भी श्रद्धा भाव से आया, हो गया मालामाल। राम....

जग से जिसने छोड़ सहारा, श्री रघुनाथ पुकारा।
उसकी आन न जाने पाई, कभी झुका न भाल। राम....

ठुकरा दिया जिसे अपनों ने, बैरी हो गई दुनिया।
आया शरण जब रामचंद्र के, प्रभु ने किया निहाल। राम....

जग से ममता मोह त्याग, चित्त हरि से जिसने लगाया।
जीवन यात्रा में रघुनंदन, उसको लिया संभाल। राम....

मन मेरा तेरा को तजकर, प्रेम राम से करिए।
संकुल इसी में हित तेरा है, व्यर्थ है मायाजाल। राम....

¼342½

राम से भारत की पहचान।
मातु पिता गुरु और बड़ों का, किया सदा सम्मान।

जनक और जननी से बढ़कर, कोई न भौतिक नाता।
जब तक तन में प्राण निभाए, दिया जगत को ज्ञान। राम....

सत्य अहिंसा त्याग दया ही, है मनुष्य का भूषण।
समझौता न स्वाभिमान से, चाहे जाए प्रान। राम....

राष्ट्रप्रेम है सार धर्म का, राष्ट्र से बड़ा न कोई।
किया सदा कर्तव्य का पालन, त्याग मान अपमान। राम....

अनाचार के दमन हेतु ही, कर में धनुष उठाया।
असुर संस्कृति नष्ट कर दिया, किया धर्म उत्थान। राम....

नर लीला करके रघुनंदन, मूल्य किए स्थापित।
संकुल दीन दुखी की सेवा, नारायण की जान। राम....

¼343½

रघुपति सिवा न कोई हमारा।
हे रघुनंदन विनय हमारी, अब कीजे जग से छुटकारा।

जन्म ही होता दु:ख का कारण, रोग शोक प्रिय मिलन वियोगा।
प्रारब्ध वस्य जीव अविनाशी, भोग रहा है कष्ट अपारा। रघुपति....

भूल गया वह असली रिश्ता, जड़ से बना लिया है नाता।
माया के रिश्ते नातों में, खोज रहा है मूर्ख सहारा। रघुपति ....

श्वान को जब डंडा लगता है, भौं-भौं करके दौड़ लगाता।
तू-तू सुन एक रोटी पाकर, जाता भूल दर्द वह सारा। रघुपति ....

इसी तरह दुनिया वालों की, गाली ताने सुनकर जीते।
नारि पुरुष करें अदला-बदली, पर इस रोग का न उपचारा। रघुपति....

इस दुर्गंध युक्त दुनिया में, प्रेम की बूँद नहीं मिल सकती।
संकुल सिर्फ राम की भक्ति, दु:ख से मुक्ति का एक अधारा। रघुपति ....

¼344½

राम भजन बिन जरनि न जाई।
सीताराम चरण चित्त दीजे, समय गए कुछ हाथ न आई।

चार दिनों का यह जीवन है, इस पर गर्व व्यर्थ मत करिए।
ऐसी करनी कभी न कीजे, अंत में सोच-सोच पछताई। राम....

कितना प्यार करो मानव को, फाड़ हृदय में चाहे रख लो।
बड़ा स्वार्थी मनुज आज का, मनुष्यता खाकर इठलाई। राम....

कुछ भी संग्रह करो जगत में, अंत में काम नहीं कुछ आता।
वास्तविक रूप दिखेगा जग का, पकड़ लिया जिस दिन चारपाई। राम....

धरा गई न साथ किसी के, गए महीपत रीति गागर।
खेल समय का सिर्फ जगत में, नहीं पाप की करें कमाई। राम....

सिकता से घृत हो सकता है, विज्ञान करे असंभव संभव।
पर संकुल श्री राम शरण बिन, मुक्ति न जग में कोउ पाई। राम....

¼345½

जानकी नाथ तुम्हारी जय।
नाम तुम्हारा जो जपते हैं, हो जाते निर्भय।

जब–जब भार बढ़ा धरती पर, बढ़ा असुर साम्राज्य।
तब–तब विविध रूप धरि हरि ने, किया दुष्टों का क्षय। जानकी नाथ ....

सदा नाश पापियों का करते, हरते भूतल भार।
जो रघुनाथ की भक्ति करते, हो जाते अभय। जानकी नाथ....

तुम सा कोई नहीं दूसरा, दलितों का हितकारी।
रक्षा करें मेरी रघुनंदन, स्वीकार करें विनय। जानकी नाथ....

विषय विकार मिटा दें स्वामी, क्षमा करें गलती।
तुम बिन कोई नहीं हमारा, करें तिमिर का लय। जानकी नाथ....

जिस पर कृपा रही तुम्हारी, अमर नाम उसका।
संकुल शरण तुम्हारे राघव, अब काहे का भय। जानकी नाथ....

¼346½

अपने चरण लगा लो राम।
अंधकार में भटक रहा हूँ, कृपा करो मुझ पर सुखधाम।

मन चंचल विषय सुख अभ्यासी, बार–बार करता परेशान।
जाने कितने घाव लगे हैं, फिर भी मिटा नहीं है काम। अपने....

प्रतिपल काया जर्जर हो रही, मन मूरख को नहीं है भान।
स्थाई कुछ नहीं जगत में, पकड़ रहा छाया बेकाम। अपने....

मन वाणी बुद्धि से परे हो, सकता मन मूरख नहीं जान।
दया दृष्टि करें मुझ पर राघव, हर लीजे अब कष्ट तमाम। अपने....

तुम बिन मेरा कोई नहीं है, मिथ्या माया का संसार।
देह के सुख की मात्र साधना, अलग–अलग रिश्तों का नाम। अपने ....

कृपासिंधु अवगुण बिसारि कर, कीजे सेवक का कल्याण।
अब निस्तार करें संकुल का, लीजे बुला नाथ निज धाम। अपने....

¼347½

सियावर रामचंद्र की जय।
दीन दुखी निर्बलों के रक्षक, दुष्टों का करें क्षय।

सीताराम हृदय में भजिए, मत प्रपंच में पड़िए।
चार दिनों के इस जीवन को, करें राम में लय। सियावर....

खाते-पीते सोते जगते, कभी न भूलें राम।
निश्चित परम शांति आएगी, भग जाऐगा भय। सियावर....

अमित प्रभाव है राम नाम का, शास्त्र न पावें पार।
लिया सहारा राम नाम जो, हो गया राम मय। सियावर....

राम सरिस न कोउ जगत में, मानवता उद्धारक।
मानव-मानव भेद मिटा दिया, किया धर्म अभ्युदय। सियावर ....

जब भी मन में घिरे अंधेरा, मत हों कभी निराश।
संकुल राम नाम स्मरण करें, जग बिचरहिं निर्भय। सियावर....

¼348½

मन कर राम चरण में प्रीति।
श्रुति सिद्धांत शास्त्र ऋषियों ने, यही बिचारी सुंदर नीति।

एक ब्रह्म दूसरा न कोई, जिससे जगत प्रकाशित होई।
सोइ सच्चिदानंद रघुनंदन, नाथ मिटा दें मेरी भीति। मन....

इस असार संसार के अंदर, बस प्रपंच के सिवा न कुछ है।
मन कुछ पल के सुख के कारण, नहीं कीजिए कभी अनीति। मन....

जो अव्यक्त जगत हित कारण, धरि साकार रूप को लेता।
पूर्णब्रह्म श्री रामचंद्र की, मुक्ति मार्ग है केवल भक्ति। मन ....

देव दनुज गंधर्व जगत में, पंथ अनेक बहुत भगवाना।
मगर तत्व तो सिर्फ एक है, प्राणी समझ त्याग जग रीति। मन....

सहज कृपा रघुपति की होती, बस छल कपट छोड़ दे प्राणी।
संकुल किसी का करें न शोषण, मलिन न होने दें कभी कीर्ति। मन....

¼349½

सब तजि हृदय भजो रघुनंदन।
समदर्शी इच्छा मत रखिए, मुक्त दुखों से होगा बंधन।

वारि बुलबुला सा यह जीवन, पता नहीं किस पल बुझ जाए।
गर्व व्यर्थ है जगत में प्राणी, सम समझो मिट्टी अरु कुंदन। सब....

ममता त्याग जगत से प्राणी, बाँधों रामचंद्र पद डोरी।
परमानंद का मार्ग यही है, होगा कभी नहीं परिवर्तन। सब....

कर्म त्यागना उचित नहीं, दु:ख का कारण बनती आसक्ति।
निर्वाहन कर्तव्य कीजिए,पर इनमें न फंसे कभी मन। सब....

विद्वानों में नहीं एक मत,वृहद जटिल है तत्व का चिंतन।
बहुत कठिन निर्णय ले पाना, अस्तु घेर लेती है उलझन। सब ....

जग की चिंता त्याग राम से, जिसने जोड़ लिया है नाता।
संकुल जगत की दावानल में, सदा सुरक्षित रहेगा वह जन। सब....

¼350½

हरो बाधा मेरी रघुवीर।
तुम बिन कोई समझ न सकता, आत्मा की जो पीर।

दैहिक सुख के सभी दीवाने, जहँ तक जग में नाते।
धन के लिए धर्म को तजकर, पाप में लिप्त शरीर। हरो....

जंगल का है नियम पुराना, उदर अगर भर जाए।
सिंह नहीं मृग का वध करता, निर्भय पीता नीर। हरो ....

पेट भरा न दिखा मनुज का, राष्ट्रपति बन जाए।
विश्‍व का सबसे बड़ा धनी भी, और रहा पग चीर। हरो....

लूट मची है सारे जग में,सब दिखते मुझे चोर।
कर्मचारी अफसर मंत्री गण, खाएं रिश्‍वत खीर। हरो....

झुलस रही है आज मानवता, बढ़ा पाप का बोझ।
संकुल ऐसे विषम समय में, दे रघुनंदन धीर। हरो....

¼351½

पूर्णब्रह्म केवल रघुराई।

नाम पंथ किए भेद अनेकों, जिसने थोड़ी बुद्धि पाई।

मूसला जड़ है मूल वृक्ष का, शाखाएं पत्ते बहु तेरे।
देवी और देवता ऐसे, मत दें इनमें समय गंवाई। पूर्णब्रह्म....

ब्रह्म तो व्यापक है कण–कण में, अंत में पास उसी के जाना।
कर्म का फल कोई बदल न सकता, पूजें चाहे किसी को जाई। पूर्णब्रह्म....

बहुत सरल श्री राम आराधना, कभी नहीं आडंबर कीजे।
छल अरू कपट द्वेष को तजकर, अंत:करण की करें सफाई। पूर्णब्रह्म....

क्या खाएं और क्या न खाएं, मत इसके चक्कर में पड़िए।
जिससे कष्ट किसी को पहुंचे, बनता कृत्य वही दुखदाई। पूर्णब्रह्म....

अहित न करिए किसी जीव का, सब को समझो आप समाना।
संकुल शुद्ध आचरण कीजे, राम भक्ति की सरल उपाई। पूर्णब्रह्म....

¼352½

निज मति कथा राम की गाई।
क्षमा धृष्टता सज्जन करिहैं, देइहिं काव्य दोष बिसराई।

भास कालिदास आचार्य केशव, आदि कवि को करउ प्रणामा।
तुलसीदास से लिया प्रेरणा, वंदन सबहिं चरण सिर नाई। निज....

राम कथा गुणगान किया जो, सब कवियों का ऋणी रहूँगा।
नमन विश्वव के विचारक दार्शनिक, जिनका लीन्हा भाव चुराई। निज....

जीवन का सारांश यही है, कोई नहीं किसी का साथी।
कीचड़ से कीचड़ धोने में, व्यर्थ में जीवन नहीं गंवाई। निज....

मूल मंत्र जीवन में पाया, प्राणी जोड़ राम से नाता।
जीवन में कर्तव्य निभाएं, किसी से न उम्मीद लगाई। निज....

जगत ताप से व्यथित हृदय को, रामकथा सुख देने वाली।
संकुल हृदयंगम किया जिसने, जन्म मरण दु:ख गए नसाई। निज....

टिप्पणी

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....